

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

29-जनवरी-2017 23:23 IST

आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में 29 जनवरी 2017 को प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सबको नमस्कार। 26 जनवरी, हमारा 'गणतंत्र दिवस' देश के कोने-कोने में उमंग और उत्साह के साथ हम सबने मनाया। भारत का संविधान, नागरिकों के कर्तव्य, नागरिकों के अधिकार, लोकतंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, एक प्रकार से ये संस्कार उत्सव भी हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को लोकतंत्र के प्रति, लोकतान्त्रिक जिम्मेदारियों के प्रति, जागरूक भी करता है, संस्कारित भी करता है। लेकिन अभी भी हमारे देश में, नागरिकों के कर्तव्य और नागरिकों के अधिकार - उस पर जितनी बहस होनी चाहिए, जितनी गहराई से बहस होनी चाहिए, जितनी व्यापक रूप में चर्चा होनी चाहिए, वो अभी नहीं हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि हर स्तर पर, हर वक्त, जितना बल अधिकारों पर दिया जाता है, उतना ही बल कर्तव्यों पर भी दिया जाए। अधिकार और कर्तव्य की दो पटरी पर ही, भारत के लोकतंत्र की गाड़ी तेज़ गति से आगे बढ़ सकती है।

कल 30 जनवरी है, हमारे पूज्य बापू की पुण्य तिथि है। 30 जनवरी को हम सब सुबह 11 बजे, 2 मिनट मौन रख करके, देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं। एक समाज के रूप में, एक देश के रूप में, 30 जनवरी, 11 बजे 2 मिनट श्रद्धांजलि, यह सहज स्वभाव बनना चाहिए। 2 मिनट क्यों न हो, लेकिन उसमें सामूहिकता भी, संकल्प भी और शहीदों के प्रति श्रद्धा भी अभिव्यक्त होती है।

हमारे देश में सेना के प्रति, सुरक्षा बलों के प्रति, एक सहज आदर भाव प्रकट होता रहता है। इस गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर, विभिन्न वीरता पुरस्कारों से, जो वीर-जवान सम्मानित हुए, उनको, उनके परिवारजनों को, मैं बधाई देता हूँ। इन पुरस्कारों में, 'कीर्ति चक्र', 'शौर्य चक्र', 'परम विशिष्ट सेवा मेडल', 'विशिष्ट सेवा मेडल' - अनेक श्रेणियाँ हैं। मैं खास करके नौजवानों से आग्रह करना चाहता हूँ। आप social media में बहुत active हैं। आप एक काम कर सकते हैं? इस बार, जिन-जिन वीरों को ये सम्मान मिला है - आप Net पर खोजिए, उनके संबंध में दो अच्छे शब्द लिखिए और अपने साथियों में उसको पहुँचाइए। जब उनके साहस की, वीरता की, पराक्रम की बात को गहराई से जानते हैं, तो हमें आश्चर्य भी होता है, गर्व भी होता है, प्रेरणा भी मिलती है।

एक तरफ़ हम सब 26 जनवरी की उमंग और उत्साह की खबरों से आनंदित थे, तो उसी समय कश्मीर में हमारे जो सेना के जवान देश की रक्षा में डटे हुए हैं, वे हिमस्खलन के कारण वीर-गति को प्राप्त हुए। मैं इन सभी वीर जवानों को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ, नमन करता हूँ।

मेरे युवा साथियो, आप तो भली-भाँति जानते हैं कि मैं 'मन की बात' लगातार करता रहता हूँ। जनवरी, फ़रवरी, मार्च, अप्रैल - ये सारे महीने हर परिवार में, कसौटी के महीने होते हैं। घर में एक-आध, दो बच्चों की exam होती हैं, लेकिन पूरा परिवार exam के बोझ में दबा हुआ होता है। तो मेरा मन कर गया कि ये सही समय है कि मैं विद्यार्थी दोस्तों से बातें करूँ, उनके अभिभावकों से बातें करूँ, उनके शिक्षकों से बातें करूँ। क्योंकि कई वर्षों से, मैं जहाँ गया, जिसे मिला, परीक्षा एक बहुत बड़ा परेशानी का कारण नज़र आया। परिवार परेशान, विद्यार्थी परेशान, शिक्षक परेशान, एक बड़ा विचित्र सा मनोवैज्ञानिक वातावरण हर घर में नज़र आता है। और मुझे हमेशा ये लगा है कि इसमें से बाहर आना चाहिये और इसलिये मैं आज युवा साथियों के साथ कुछ विस्तार से बातें करना चाहता हूँ। जब ये विषय मैंने घोषित किया, तो अनेक शिक्षकों ने, अभिभावकों ने, विद्यार्थियों ने मुझे message भेजे, सवाल भेजे, सुझाव भेजे, पीड़ा भी व्यक्त की, परेशानियों का भी जिक्र किया और उसको देखने के बाद जो मेरे मन में विचार आए, वो मैं आज आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। मुझे एक टेलीफोन सन्देश मिला सृष्टि का। आप भी सुनिए, सृष्टि क्या कह रही है: -

“सर, मैं आपसे इतना कहना चाहती हूँ कि exams के time पे अक्सर ऐसा होता है कि हमारे घर में, आस-पड़ोस में, हमारी society में बहुत ही ख़ौफ़नाक और डरावना माहौल बन जाता है। इस वजह से student Inspiration तो कम, लेकिन down बहुत हो जाते हैं। तो मैं आपसे इतना पूछना चाहती हूँ कि क्या ये माहौल खुशनुमा नहीं हो सकता?”

खैर, सवाल तो सृष्टि ने पूछा है, लेकिन ये सवाल आप सबके मन में होगा। परीक्षा अपने-आप में एक खुशी का अवसर होना चाहिये। साल भर मेहनत की है, अब बताने का अवसर आया है, ऐसा उमंग-उत्साह का ये पर्व होना चाहिए। बहुत कम लोग हैं, जिनके लिए exam में pleasure होती है, ज्यादातर लोगों के लिए exam एक pressure होती है। निर्णय आपको करना है कि इसे आप pleasure मानेंगे कि pressure मानेंगे। जो pleasure मानेगा, वो पायेगा; जो pressure मानेगा, वो पछताएगा। और इसलिये मेरा मत है कि परीक्षा एक उत्सव है, परीक्षा को ऐसे लीजिए, जैसे मानो त्योहार है। और जब त्योहार होता है, जब उत्सव होता है, तो हमारे भीतर जो सबसे best होता है, वही बाहर निकल कर के आता है। समाज की भी ताकत की अनुभूति उत्सव के समय होती है। जो उत्तम से उत्तम है, वो प्रकट होता है। सामान्य रूप से हमको लगता है कि हम लोग कितने Indisciplined हैं, लेकिन जब 40-45 दिन चलने वाले कम्भ के मेलों की व्यवस्था देखें, तो पता चलता है कि ये make-shift arrangement और क्या discipline है लोगों में। ये उत्सव की ताकत है। exam में भी पूरे परिवार में, मित्रों के बीच, आस-पड़ोस के बीच एक उत्सव का माहौल बनना चाहिये। आप देखिए, ये pressure, pleasure में convert हो जाएगा। उत्सवपूर्ण वातावरण बोझमुक्त बना देगा। और मैं इसमें माता-पिता को ज्यादा आग्रह से कहता हूँ कि आप इन तीन-चार महीने एक उत्सव का वातावरण बनाइए। पूरा परिवार एक टीम के रूप में इस उत्सव को सफल करने के लिए अपनी-अपनी भूमिका उत्साह से निभाए। देखिए, देखते ही देखते बदलाव आ जाएगा। हकीकत तो ये है कि कन्याकुमारी से कश्मीर तक और कच्छ से ले करके कामरूप तक, अमरेली से ले करके अरुणाचल प्रदेश तक, ये तीन-चार महीने परीक्षा ही परीक्षाएँ होती हैं। ये हम सब का दायित्व है कि हम हर वर्ष इन तीन-चार महीनों को अपने-अपने तरीके से, अपनी-अपनी परंपरा को लेते हुए, अपने-अपने परिवार के वातावरण को लेते हुए, उत्सव में परिवर्तित करें। और इसलिए मैं तो आपसे कहूँगा 'smile more score more'. जितनी ज्यादा खुशी से इस समय को बिताओगे, उतने ही ज्यादा नंबर पाओगे, करके देखिए। और आपने देखा होगा कि जब आप खुश होते हैं, मुस्कराते हैं, तो आप relax अपने-आप को पाते हैं। आप सहज रूप से relax हो जाते हैं और जब आप relax होते हैं, तो आपकी वर्षों पुरानी बातें भी सहज रूप से आपको याद आ जाती हैं। एक साल पहले classroom में teacher ने क्या कहा, पूरा दृश्य याद आ जाता है। और आपको ये पता होना चाहिए, memory को recall करने का जो power है, वो relaxation में सबसे ज्यादा होता है। अगर आप तनाव में है, तो सारे दरवाज़े बंद हो जाते हैं, बाहर का अंदर नहीं जाता, अंदर का बाहर नहीं आता है। विचार प्रक्रिया में ठहराव आ जाता है, वो अपने-आप में एक बोझ बन जाता है। exam में भी आपने देखा होगा, आपको सब याद आता है। किताब याद आती है, chapter याद आता है, page number याद आता है, page में ऊपर की तरफ लिखा है कि नीचे की तरफ, वो भी याद आता है, लेकिन वो particular शब्द याद नहीं आता है। लेकिन जैसे ही exam दे करके बाहर निकलते हो और थोड़ा सा कमरे के बाहर आए, अचानक आपको याद आ जाता है - हाँ यार, यही शब्द था। अंदर क्यों याद नहीं आया, pressure था। बाहर कैसे याद आया? आप ही तो थे, किसी ने बताया तो नहीं था। लेकिन जो अंदर था, तुरंत बाहर आ गया और बाहर इसलिये आया, क्योंकि आप relax हो गए। और इसलिये memory recall करने की सबसे बड़ी अगर कोई औषधि है, तो वो relaxation है। और ये मैं अपने स्वानुभव से कहता हूँ कि अगर pressure है, तो अपनी चीज़ें हम भूल जाते हैं और relax हैं, तो कभी हम कल्पना नहीं कर सकते, अचानक ऐसी-ऐसी चीज़ें याद आ जाती हैं, वो बहुत काम आ जाती हैं। और ऐसा नहीं है कि आप के पास knowledge नहीं है, ऐसा नहीं है कि आप के पास Information नहीं है, ऐसा नहीं है कि आपने मेहनत नहीं की है। लेकिन जब tension होता है, तब आपका knowledge, आपका ज्ञान, आपकी जानकारी नीचे दब जाती है और आपका tension उस पर सवार हो जाता है। और इसलिये आवश्यक है, 'A happy mind is the secret for a good mark-sheet'. कभी-कभी ये भी लगता है कि हम proper perspective में परीक्षा को देख नहीं पाते हैं। ऐसा लगता है कि वो जीवन-मरण का जैसे सवाल है। आप जो exam देने जा रहे हैं, वो साल भर में आपने जो पढ़ाई की है, उसकी exam है। ये आपके जीवन की कसौटी नहीं है। आपने कैसा जीवन जिया, कैसा जीवन जी रहे हो, कैसा जीवन जीना चाहते हो, उसकी exam नहीं है। आपके जीवन में, classroom में, notebook ले करके दी गई परीक्षा के सिवाय भी कई कसौटियों से गुज़रने के अवसर आए होंगे। और इसलिये, परीक्षा को जीवन की सफलता-विफलता से कोई लेना-देना है, ऐसे बोझ से मुक्त हो जाइए। हमारे सबके सामने, हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का बड़ा प्रेरक उदाहरण है। वे वायुसेना में भर्ती होने गए, fail हो गए। मान लीजिए, उस विफलता के कारण अगर वो मायूस हो जाते, ज़िंदगी से हार जाते, तो क्या भारत को इतना बड़ा वैज्ञानिक मिलता, इतने बड़े राष्ट्रपति मिलते! नहीं मिलते। कोई ऋचा आनंद जी ने मुझे एक सवाल भेजा है: -

“आज के इस दौर में शिक्षा के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती देख पाती हूँ, वो यह कि शिक्षा परीक्षा केन्द्रित हो कर रह गयी है। अंक सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं। इसकी वजह से प्रतिस्पर्धा तो बहुत बढ़ी ही है, साथ में विद्यार्थियों में तनाव भी बहुत बढ़ गया है। तो शिक्षा की इस वर्तमान दिशा और इसके भविष्य को ले करके आपके विचारों से अवगत होना चाहूँगी।”

वैसे उन्होंने खुद ने ही जवाब दे ही दिया है, लेकिन ऋचा जी चाहती हैं कि मैं भी इसमें कुछ अपनी बात रखूँ। marks और marks-sheet इसका एक सीमित उपयोग है। ज़िंदगी में वही सब कुछ नहीं होता है। ज़िंदगी तो चलती है कि आपने कितना ज्ञान अर्जित किया है। ज़िंदगी तो चलती है कि आपने जो जाना है, उसको जीने का प्रयास किया है क्या? ज़िंदगी

तो चलती है कि आपको जो एक sense of mission मिला है और जो आपका sense of ambition है, ये आपके mission और ambition के बीच में कोई तालमेल हो रहा है क्या? अगर आप इन चीज़ों में भरोसा करोगे, तो marks पूछ दबाते हुए आपके पीछे आ जाएँगे; आपको marks के पीछे भागने की कभी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। जीवन में आपको knowledge काम आने वाला है, skill काम आने वाली है, आत्मविश्वास काम आने वाला है, संकल्पशक्ति काम आने वाली है। आप ही मुझे बताइए, आपके परिवार के कोई डॉक्टर होंगे और परिवार के सब लोग उन्हीं के पास जाते होंगे, family doctor होते हैं। आप में से कोई ऐसा नहीं होगा, जिसने अपने family doctor को कभी, वो कितने नंबर से पास हुआ था, पूछा होगा। किसी ने नहीं पूछा होगा। बस, आपको लगा कि भाई, एक डॉक्टर के नाते अच्छे हैं, आप लोगो को लाभ हो रहा है, आप उसकी सेवाएँ लेना शुरू किए। आप कोई बड़ा से बड़ा case लड़ने के लिए किसी वकील के पास जाते हैं, तो क्या उस वकील की marks-sheet देखते हैं क्या? आप उसके अनुभव को, उसके ज्ञान को, उसकी सफलता की यात्रा को देखते हैं। और इसलिये ये जो अंक का बोझ है, वो भी कभी-कभी हमें सही दिशा में जाने से रोक देता है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि मैं ये कहूँ कि बस, पढ़ना ही नहीं है। अपनी कसौटी के लिए उसका उपयोग ज़रूर है। मैं कल था, आज कहाँ हूँ, वो जानने के लिए ज़रूरी है। कभी-कभार ये भी होता है और अगर बारीकी से आप अपने स्वयं के जीवन को देखोगे, तो ध्यान में आएगा कि अगर अंक के पीछे पड़ गए, तो आप shortest रास्ते खोजोगे, selected चीज़ों को ही पकड़ोगे और उसी पर focus करोगे। लेकिन आपने जिन चीज़ों पर हाथ लगाया था, उसके बाहर की कोई चीज़ आ गई, आपने जो सवाल तैयार किए थे, उससे बाहर का सवाल आ गया, तो आप एकदम से नीचे आ जाएँगे। अगर आप ज्ञान को केंद्र में रखते हैं, तो बहुत चीज़ों को अपने में समेटने का प्रयास करते हो। लेकिन अंक पर focus करते हो, marks पर focus करते हो, तो आप धीरे-धीरे अपने-आप को सिकुड़ते जाते हो और एक निश्चित area तक अपने आपको सीमित करके सिर्फ marks पाने के लिये। तो हो सकता है कि exam में होनहार बनने के बावजूद भी जीवन में कभी-कभी विफल हो जाते हैं।

ऋचा जी, ने एक बात ये भी कही है 'प्रतिस्पर्धा'। ये एक बहुत बड़ी मनोवैज्ञानिक लड़ाई है। सचमुच में, जीवन को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा काम नहीं आती है। जीवन को आगे बढ़ाने के लिए अनुस्पर्धा काम आती है और जब हम अनुस्पर्धा में कहता हूँ, तो उसका मतलब है, स्वयं से स्पर्धा करना। बीते हुए कल से आने वाला कल बेहतर कैसे हो? बीते हुए परिणाम से आने वाला अवसर अधिक बेहतर कैसे हो? अक्सर आपने खेल जगत में देखा होगा। क्योंकि उसमें तुरंत समझ आता है, इसलिए मैं खेल जगत का उदाहरण देता हूँ। ज्यादातर सफल खिलाड़ियों के जीवन की एक विशेषता है कि वो अनुस्पर्धा करते हैं। अगर हम श्रीमान सचिन तेंदुलकर जी का ही उदाहरण ले लें। बीस साल लगातार अपने ही record तोड़ते जाना, खुद को ही हर बार पराजित करना और आगे बढ़ना। बड़ी अदभुत जीवन यात्रा है उनकी, क्योंकि उन्होंने प्रतिस्पर्धा से ज्यादा अनुस्पर्धा का रास्ता अपनाया।

जीवन के हर क्षेत्र में दोस्तों और जब आप exam देने जा रहे हैं तब, पहले अगर दो घंटे पढ़ पाते थे शान्ति से, वो तीन घंटे कर पाते हो क्या? पहले जितने बजे सुबह उठना तय करते थे, देर हो जाती थी, क्या अब समय पर उठ पाते हो क्या? पहले परीक्षा की tension में नींद नहीं आती थी, अब नींद आती है क्या? खुद को ही आप कसौटी पर कस लीजिए और आपको ध्यान में आएगा - प्रतिस्पर्धा में पराजय, हताशा, निराशा और ईर्ष्या को जन्म देती है, लेकिन अनुस्पर्धा आत्ममंथन, आत्मचिंतन का कारण बनती है, संकल्प शक्ति को दृढ़ बनाती है और जब खुद को पराजित करते हैं, तो और अधिक आगे बढ़ने का उत्साह अपने-आप पैदा होता है, बाहर से कोई extra energy की ज़रूरत नहीं पड़ती है। भीतर से ही वो ऊर्जा अपने-आप पैदा होती है। अगर सरल भाषा में मुझे कहना है, तो मैं कहूँगा - जब आप किसी से प्रतिस्पर्धा करते हैं, तो तीन संभावनायें मोटी-मोटी नज़र आती हैं। एक, आप उससे बहुत बेहतर हैं। दूसरा, आप उससे बहुत खराब हैं या आप उसके बराबर के हैं। अगर आप बेहतर हैं तो बेपरवाह हो जाएँगे, अति विश्वास से भर जाएँगे। अगर आप उसके मुकाबले खराब करते हैं, तब दुखी और निराश हो जाएँगे, ईर्ष्या से भर जाएँगे, जो ईर्ष्या आपको, अपने-आप को, खाती जाएगी और अगर बराबरी के हैं, तो सुधार की आवश्यकता आप कभी महसूस ही नहीं करोगे। जैसी गाड़ी चलती है, चलते रहोगे। तो मेरा आपसे आग्रह है - अनुस्पर्धा का, खुद से स्पर्धा करने का। पहले क्या किया था, उससे आगे कैसे करूँगा, अच्छा कैसे करूँगा। बस, इसी पर ध्यान केंद्रित कीजिए। आप देखिए, आपको बहुत परिवर्तन महसूस होगा।

श्रीमान एस. सुन्दर जी ने अभिभावकों की भूमिका के संबंध में अपनी भावना व्यक्त की है। उनका कहना है कि परीक्षा में अभिभावकों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने आगे लिखा है - "मेरी माँ पढ़ी-लिखी नहीं थी, फिर भी वह मेरे पास बैठा करती थी और मुझसे गणित के सवाल हल करने के लिये कहती थी। वह उत्तर मिलाती और इस तरह से वो मेरी मदद करती थी। गलतियाँ ठीक करती थी। मेरी माँ ने दसवीं की परीक्षा pass नहीं की, लेकिन बिना उनके सहयोग के मेरे लिये C.B.S.E. के exam pass करना नामुमकिन था।"

सुन्दर जी, आपकी बात सही है और आज भी देखा होगा आपने, मुझे सवाल पूछने वाले, सुझाव देने वालों में महिलाओं की संख्या ज़्यादा है, क्योंकि घर में बालकों के भविष्य के संबंध में मातायें जो संजग होती हैं, सक्रिय होती हैं, वे बहुत चीज़ें सरल कर देती हैं। मैं अभिभावकों से इतना ही कहना चाहूँगा - तीन बातों पर हम बल दें। स्वीकारना, सिखाना, समय देना।

जो है, उसे accept कीजिए। आपके पास जितनी क्षमता है, आप mentor कीजिए, आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों, समय निकालिए, time दीजिए। एक बार आप accept करना सीख लेंगे, अधिकतम समस्या तो वही समाप्त हो जाएगी। हर अभिभावक इस बात को अनुभव करता होगा, अभिभावकों का, टीचरों का expectation समस्या की जड़ में होता है। acceptance समस्याओं के समाधान का रास्ता खोलता है। अपेक्षायें राह कठिन कर देती हैं। अवस्था को स्वीकार करना, नए रास्ते खोलने का अवसर देती है और इसलिए जो है, उसे accept कीजिए। आप भी बोझमुक्त हो जाएँगे। हम लोग, छोटे बच्चों के school bag के वजन की चर्चा करते रहते हैं, लेकिन कभी-कभी तो मुझे लगता है कि अभिभावकों की जो अपेक्षायें होती हैं, उम्मीदें होती हैं, वो बच्चे के school bag से भी ज़रा ज़्यादा भारी हो जाती हैं।

बहुत साल पहले की बात है। हमारे एक परिचित व्यक्ति heart attack के कारण अस्पताल में थे, तो हमारे भारत के लोक सभा के पहले Speaker गणेश दादा मावलंकर, उनके पुत्र पुरुषोत्तम मावलंकर, वो कभी M.P. भी रहे थे, वो उनकी तबीयत देखने आए। मैं उस समय मौजूद था और मैंने देखा कि उन्होंने आ करके उनकी तबीयत के संबंध में एक भी सवाल नहीं पूछा। बैठे और आते ही उन्होंने वहाँ क्या स्थिति है, बीमारी कैसी है, कोई बातें नहीं, चुटकुले सुनाना शुरू कर दिया और पहले दो-चार मिनट में ही ऐसा माहौल उन्होंने हल्का-फुल्का कर दिया। एक प्रकार से बीमार व्यक्ति को जाकर के जैसे हम बीमारी से डरा देते हैं। अभिभावकों से मैं कहना चाहूँगा, कभी-कभी हम भी बच्चों के साथ ऐसा ही करते हैं। क्या आपको कभी लगा कि exam के दिनों में बच्चों को हँसी-खुशी का भी कोई माहौल दें। आप देखिए, वातावरण बदल जाएगा।

एक बड़ा कमाल का मुझे phone call आया है। वे सज्जन अपना नाम बताना नहीं चाहते हैं। phone सुन कर के आपको पता चलेगा कि वो अपना नाम क्यों नहीं बताना चाहते हैं?

“नमस्कार, प्रधानमंत्री जी, मैं अपना नाम तो नहीं बता सकता, क्योंकि मैंने काम ही कुछ ऐसा किया था अपने बचपन में। मैंने बचपन में एक बार नकल करने की कोशिश की थी, उसके लिये मैंने बहुत तैयारी करना शुरू किया कि मैं कैसे नकल कर सकता हूँ, उसके तरीकों को ढूँढ़ने की कोशिश की, जिसकी वजह से मेरा बहुत सारा time बर्बाद हो गया। उस time मैं मैं पढ़ करके भी उतने ही नंबर ला सकता था, जितना मैंने नकल करने के लिए दिमाग लगाने में खर्च किया। और जब मैंने नकल करके पास होने की कोशिश की, तो मैं उसमें पकड़ा भी गया और मेरी वजह से मेरे आस-पास के कई दोस्तों को काफ़ी परेशानी हुई।”

आपकी बात सही है। ये जो short-cut वाले रास्ते होते हैं, वो नकल करने के लिये कारण बन जाते हैं। कभी-कभार खुद पर विश्वास नहीं होने के कारण मन करता है कि बगल वाले से ज़रा देख लूँ, confirm कर लूँ, मैंने जो लिखा है, सही है कि नहीं है और कभी-कभी तो हमने सही लिखा होता है, लेकिन बगल वाले ने झूठा लिखा होता है, तो उसी झूठ को हम कभी स्वीकार कर लेते हैं और हम भी मर जाते हैं। तो नकल कभी फ़ायदा नहीं करती है। ‘To cheat is to be cheap, so please, do not cheat’। नकल आपको बुरा बनाती है, इसलिये नकल न करें। आपने कई बार और बार-बार ये सुना होगा कि नकल मत करना, नकल मत करना। मैं भी आपको वही बात दोबारा कह रहा हूँ। नकल को आप हर रूप में देख लीजिए, वो जीवन को विफल बनाने के रास्ते की ओर आपको घसीट के ले जा रही है और exam में ही अगर निरीक्षक ने पकड़ लिया, तो आपका तो सब-कुछ बर्बाद हो जाएगा और मान लीजिए, किसी ने नहीं पकड़ा, तो जीवन पर आपके मन पर एक बोझ तो रहेगा कि आपने ऐसा किया था और जब कभी आपको अपने बच्चों को समझाना होगा, तो आप आँख में आँख मिला कर के नहीं समझा पाओगे। और एक बार नकल की आदत लग गई, तो जीवन में कभी कुछ सीखने की इच्छा ही नहीं रहेगी। फिर तो आप कहाँ पहुँच पाओगे?

मान लीजिए, आप भी अपने रास्तों को गड़दे में परिवर्तित कर रहे हो और मैंने तो देखा है, कुछ लोग ऐसे होते हैं कि नकल के तौर-तरीके ढूँढ़ने में इतनी talent का उपयोग कर देते हैं, इतना Investment कर देते हैं; अपनी पूरी creativity जो है, वो नकल करने के तौर-तरीकों में खपा देते हैं। अगर वही creativity, यही time आप अपने exam के मुद्दों पर देते, तो शायद नकल की ही ज़रूरत नहीं पड़ती। अपनी खुद की मेहनत से जो परिणाम प्राप्त होगा, उससे जो आत्मविश्वास बढ़ेगा, वो अद्भुत होगा।

एक phone call आया है: -

“नमस्कार, प्रधानमंत्री जी। My name is Monica and since I am a class 12th student, I wanted to ask you a couple of questions regarding the Board Exams. My first question is, what can we do to reduce the stress that builds up during our exams and my second question is, why exams all about work and no play are. Thank you.”

अगर परीक्षा के दिनों में, मैं आपको खेल-कूद की बात करूँगा, तो आपके teacher, आपके parents ये मुझ पर गुस्सा करेंगे, वो नाराज़ हो जाएँगे कि ये कैसा प्रधानमंत्री है, बच्चों को exam के समय में कह रहा है, खेलो। क्योंकि आम तौर

पर धारणा ऐसी है कि अगर विद्यार्थी खेल-कूद में ध्यान देते हैं, तो शिक्षा से बेध्यान हो जाते हैं। ये मूलभूत धारणा ही गलत है, समस्या की जड़ वो ही है। सर्वांगीण विकास करना है, तो किताबों के बाहर भी एक जिन्दगी होती है और वो बहुत बड़ी विशाल होती है। उसको भी जीने का सीखने का यही समय होता है। कोई ये कहे कि मैं पहले सारी परीक्षाएँ पूर्ण कर लूँ, बाद में खेलूँगा, बाद में ये करूँगा, तो असंभव है। जीवन का यही तो moulding का time होता है। इसी को तो परवरिश कहते हैं। दरअसल परीक्षा में मेरी दृष्टि से तीन बातें बहुत ज़रूरी हैं - proper rest आराम, दूसरा जितनी आवश्यक है शरीर के लिये, उतनी नींद और तीसरा दिमागी activity के सिवाय भी शरीर एक बहुत बड़ा हिस्सा है। तो शरीर के बाकी हिस्सों को भी physical activity मिलनी चाहिए। क्या कभी सोचा है कि जब इतना सारा सामान हो, तो दो पल बाहर निकल कर ज़रा आसमान में देखें, ज़रा पेड़-पौधों की तरफ देखें, थोड़ा-सा मन को हल्का करें, आप देखिए, एक ताज़गी के साथ फिर से आप अपने कमरे में, अपनी किताबों के बीच आएँगे। आप जो भी कर रहे हों, थोड़ा break लीजिए, उठ करके बाहर जाइए, kitchen में जाइए, अपनी पसंद की कोई चीज़ है, ज़रा खोजिए, अपनी पसंद का biscuit मिल जाए, तो खाइए, थोड़ी हँसी-मज़ाक कर लीजिए। भले पांच मिनट क्यों न हो, लेकिन आप break दीजिए। आपको महसूस होगा कि आपका काम सरल होता जा रहा है। सबको ये पसंद है कि नहीं, मुझे मालूम नहीं, लेकिन मेरा तो अनुभव है। ऐसे समय deep breathing करते हैं, तो बहुत फ़ायदा होता है। गहरी साँस आप देखिए बहुत relax हो जाता है। गहरी साँस भी लेने के लिये कोई कमरे में fit रहने की ज़रूरत नहीं है। ज़रा खुले आसमान के नीचे आएँ, छत पर चले जाएँ, पांच मिनट गहरी साँस ले करके फिर अपने पढ़ने के लिए बैठ जाएँ, आप देखिए, शरीर एक दम से relax हो जाएगा और शरीर का जो relaxation आप अनुभव करते हैं न, वो दिमागी अंगों का भी उतना ही relaxation कर देता है। कुछ लोगों को लगता है, रात को देर-देर जागेंगे, ज़्यादा-ज़्यादा पढ़ेंगे - जी नहीं, शरीर को जितनी नींद की आवश्यकता है, वो अवश्य लीजिए, उससे आपका पढ़ने का समय बर्बाद नहीं होगा, वो पढ़ने की ताकत में इज़ाफ़ा करेगा। आपका concentration बढ़ेगा, आपकी ताज़गी आएगी, freshness होगा। आपकी efficiency में overall बहुत बड़ी बढ़ोतरी होगी। मैं जब चुनाव में सभाएँ करता हूँ, तो कभी-कभी मेरी आवाज़ बैठ जाती है। तो मुझे एक लोक गायक मिलने आए। उन्होंने मुझे आकर के पूछा - आप कितने घंटे सोते हैं। मैंने कहा - क्यों भाई, आप डॉक्टर हैं क्या? नहीं-नहीं, बोले - ये आपका आवाज़ जो चुनाव के समय भाषण करते-करते खराब हो जाता है, उसका इसके साथ संबंध है। आप पूरी नींद लेंगे, तभी आपके vocal cord को पूरा rest मिलेगा। अब मैंने नींद को और मेरे भाषण को और मेरी आवाज़ को कभी सोचा ही नहीं था, उन्होंने मुझे एक जड़ी-बूटी दे दी। तो सचमुच में हम इन चीज़ों का महत्व समझें, आप देखिए, आपको फ़ायदा होगा। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि बस सोते ही रहें, लेकिन कुछ कहेंगे कि प्रधानमंत्री जी ने कह दिया है, अब बस जागने की ज़रूरत नहीं है, सोते रहना है। तो ऐसा मत करना, वरना आपके परिवार के लोग मेरे से नाराज़ हो जाएँगे। और आपकी अगर marks-sheet जिस दिन आएगी, तो उनको आप नहीं दिखाई दोगे, मैं ही दिखाई दूँगा। तो ऐसा मत करना। और इसलिये मैं तो कहूँगा 'P for prepared and P for play', जो खेले वो खिले, 'the person who plays, shines'. मन, बुद्धि, शरीर उसको सचेत रखने के लिये ये एक बहुत बड़ी औषधि है।

खैर, युवा दोस्तो, आप परीक्षा की तैयारी में हैं और मैं आपको मन की बातों में जकड़ कर बैठा हूँ। हो सकता है, ये आज की मेरी बातें भी तो आपके लिये relaxation का तो काम करेंगी ही करेंगी। लेकिन मैं साथ-साथ ये भी कहूँगा, मैंने जो बातें बताई हैं, उसको भी बोझ मत बनने दीजिए। हो सकता है तो करिए, नहीं हो सकता तो मत कीजिए, वरना ये भी एक बोझ बन जाएगा। तो जैसे मैं आपके परिवार के माता-पिता को बोझ न बनने देने की सलाह देता हूँ, वो मुझ पर भी लागू होती हैं। अपने संकल्प को याद करते हुए, अपने पर विश्वास रखते हुए, परीक्षा के लिये जाइए, मेरी बहुत शुभकामनाएँ हैं। हर कसौटी से पार उतरने के लिये कसौटी को उत्सव बना दीजिए। फिर कभी कसौटी, कसौटी ही नहीं रहेगी। इस मंत्र को ले करके आगे बढ़ें।

प्यारे देशवासियो, 1 फरवरी 2017 Indian Coast Guard के 40 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर मैं Coast Guard के सभी अधिकारियों एवं जवानों को राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा के लिये धन्यवाद देता हूँ। ये गर्व की बात है कि Coast Guard देश में निर्मित अपने सभी 126 ships और 62 aircrafts के साथ विश्व के 4 सबसे बड़े Coast Guard के बीच अपना स्थान बनाए हुए है। Coast Guard का मंत्र है 'वयम् रक्षामः'। अपने इस आदर्श वाक्य को चरितार्थ करते हुए, देश की समुद्री सीमाओं और समुद्री परिवेश को सुरक्षित करने के लिये Coast Guard के जवान प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दिन-रात तत्पर रहते हैं। पिछले वर्ष Coast Guard के लोगों ने अपनी जिम्मेदारियों के साथ-साथ हमारे देश के समुद्र तट को स्वच्छ बनाने का बड़ा अभियान उठाया था और हज़ारों लोग इसमें शरीक हुए थे। Coastal Security के साथ-साथ Coastal Cleaness इसकी भी चिंता की उन्होंने, ये सचमुच में बधाई के पात्र हैं। और बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि हमारे देश में Coast Guard में सिर्फ पुरुष नहीं हैं, महिलाएँ भी कन्धे से कन्धा मिला कर समान रूप से अपनी जिम्मेदारियाँ निभा रही हैं और सफलतापूर्वक निभा रही हैं। Coast Guard की हमारी महिला अफ़सर Pilot हों, Observers के रूप में काम हों, इतना ही नहीं, Hovercraft की कमान भी संभालती हैं। भारत के तटीय सुरक्षा में लगे हुए और सामुद्रिक सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय आज विश्व का बना हुआ है, तब मैं Indian Coast Guard के 40वीं वर्षगांठ पर उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

1 फरवरी को वसन्त पंचमी का त्यौहार है, वसन्त - ये सर्वश्रेष्ठ ऋतु के रूप में, उसको स्वीकृति मिली हुई है। वसन्त - ये ऋतुओं का राजा है। हमारे देश में वसन्त पंचमी सरस्वती पूजा का एक बहुत बड़ा त्योहार होता है। विद्या की आराधना का अवसर माना जाता है। इतना ही नहीं, वीरों के लिए प्रेरणा का भी पर्व होता है। 'मेरा रंग दे बसंती चोला' - ये वही तो प्रेरणा है। इस वसन्त पंचमी के पावन त्योहार पर मेरी देशवासियों को बहुत-बहुत शुभकामनायें हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में आकाशवाणी भी अपनी कल्पकता के साथ हमेशा नये रंग-रूप भरता रहता है। पिछले महीने से उन्होंने मेरी 'मन की बात' पूर्ण होने के तुरंत बाद प्रादेशिक भाषाओं में 'मन की बात' सुनाना शुरू किया है। इसको व्यापक स्वीकृति मिली है। दूर-दूर से लोग चिट्ठियाँ लिख रहे हैं। मैं आकाशवाणी को उनके इस स्वयं प्रेरणा से किए गए काम के लिये बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूँ। देशवासियो, मैं आपका भी बहुत अभिनन्दन करता हूँ। 'मन की बात' मुझे आपसे जुड़ने का एक बहुत बड़ा अवसर देती है। बहुत-बहुत शुभकामनायें। धन्यवाद।

AKT/SH

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

26-मार्च-2017 11:43 IST

आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में 26 मार्च, 2017 को प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, आप सबको नमस्कार। देश के हर कोने में ज्यादातर परिवार अपने बच्चों की exam में जुटे हुए होंगे, जिनके exam खत्म हो गए होंगे, वहाँ कुछ relief का माहौल होगा और जहाँ exam चलते होंगे, उन परिवारों में अभी भी थोड़ा-बहुत तो pressure होगा ही होगा। लेकिन ऐसे समय में यही कहूँगा कि पिछली बार मैंने जो 'मन की बात' में विद्यार्थियों से जो-जो बातें की हैं, उसे दोबारा सुन लीजिए, परीक्षा के समय वो बातें जरूर आपको काम आएँगी।

आज 26 मार्च है, 26 मार्च बांग्लादेश का स्वतंत्रता का दिवस है। अन्याय के खिलाफ एक ऐतिहासिक लड़ाई, बंग-बन्धु के नेतृत्व में बांग्लादेश की जनता की अभूतपूर्व विजय। आज के इस महत्वपूर्ण दिवस पर मैं बांग्लादेश के नागरिक भाइयों-बहनों को स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ। और यह कामना करता हूँ कि बांग्लादेश आगे बढ़े, विकास करे और बांग्लादेशवासियों को भी मैं विश्वास दिलाता हूँ कि भारत बांग्लादेश का एक मजबूत साथी है, एक अच्छा मित्र है और हम कंधे-से-कंधा मिला करके इस पूरे क्षेत्र के अन्दर शांति, सुरक्षा और विकास में अपना योगदान देते रहेंगे।

हम सबको इस बात का गर्व है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर, उनकी यादें, हमारी एक साझी विरासत है। बांग्लादेश का राष्ट्रगान भी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचना है। गुरुदेव टैगोर के बारे में एक बहुत interesting बात यह है कि 1913 में वे न केवल नोबेल (Nobel) पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले एशियाई व्यक्ति थे, बल्कि उन्हें अंग्रेजों ने 'Knighthood' की भी उपाधि दी थी। और जब 1919 में जलियाँवाला बाग पर अंग्रेजों ने कत्ले-आम किया, तो रवीन्द्रनाथ टैगोर उन महापुरुषों में थे, जिन्होंने अपनी आवाज़ बुलंद की थी और यही कालखंड था; जब 12 साल के एक बच्चे के मन पर इस घटना का गहरा प्रभाव हुआ था। किशोर-अवस्था में खेत-खलिहान में हँसते-कूदते उस बालक को जलियाँवाला बाग के नृशंस हत्याकांड ने जीवन की एक नयी प्रेरणा दे दी थी। और 1919 में 12 साल का वो बालक भगत हम सबके प्रिय, हम सबकी प्रेरणा - शहीद भगतसिंह, आज से तीन दिन पूर्व, 23 मार्च को भगतसिंह जी को और उनके साथी, सुखदेव और राजगुरु को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया था। और हम सब जानते हैं 23 मार्च की वो घटना - भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु के चेहरे पर माँ-भारती की सेवा करने का संतोष - मृत्यु का भय नहीं था; जीवन के सारे सपने, माँ-भारती की आज़ादी के लिए समाहित कर दिए थे। और ये तीनों वीर आज भी हम सबकी प्रेरणा हैं। भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान की गाथा को हम शब्दों में अलंकृत भी नहीं कर पाएँगे। और पूरी ब्रिटिश सल्तनत इन तीनों युवकों से डरती थी। जेल में बंद थे, फांसी तय थी, लेकिन इनके साथ कैसे आगे बढ़ा जाये, इसकी चिंता ब्रिटिशों को लगी रहती थी। और तभी तो 24 मार्च को फांसी देनी थी, लेकिन 23 मार्च को ही दे दी गयी थी; चोरी-छिपे से किया गया था, जो आम तौर पर नहीं किया जाता। और बाद में उनके शरीर को आज के पंजाब में ला करके, अंग्रेजों ने चुपचाप जला दिया था। कई वर्षों पूर्व जब पहली बार मुझे वहाँ जाने का मौका मिला था, उस धरती में एक प्रकार के vibration मैं अनुभव करता था। और मैं देश के नौजवानों को जरूर कहूँगा - जब भी मौका मिले तो, पंजाब जब जाएँ, तो भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, भगतसिंह की माताजी और बटुकेश्वर दत्त की समाधि के स्थान पर अवश्य जाएँ।

यही तो कालखंड था, जब आज़ादी की ललक, उसकी तीव्रता, उसका व्याप बढ़ता ही चला जा रहा था। एक तरफ भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु जैसे वीरों ने सशस्त्र क्रांति के लिये युवकों को प्रेरणा दी थी। तो आज से ठीक सौ साल पहले, 10 अप्रैल, 1917 - महात्मा गाँधी ने चंपारण सत्याग्रह किया था। यह चंपारण सत्याग्रह की शताब्दी का वर्ष है। भारत की आज़ादी के आन्दोलन में, गाँधी विचार और गाँधी शैली, इसका प्रकट रूप पहली बार चंपारण में नज़र आया। आज़ादी की पूरी आंदोलन यात्रा में यह एक turning point था, खास करके संघर्ष के तौर-तरीके की दृष्टि से। यही वो कालखंड था, चंपारण का सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, अहमदाबाद में मिल-मजदूरों की हड़ताल, और इन सबमें महात्मा गाँधी की विचार और कार्यशैली का गहरा प्रभाव नज़र आता था। 1915 में गाँधी विदेश से वापस आए और 1917 में बिहार के एक छोटे से गाँव में जाकर के उन्होंने देश को नई प्रेरणा दी। आज हमारे मन में महात्मा गाँधी की जो छवि है, उस छवि के आधार पर हम चंपारण सत्याग्रह का मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं। कल्पना कीजिए कि एक इंसान, जो 1915 में हिन्दुस्तान वापस आए, सिर्फ दो साल का कार्यकाल। न देश उनको जानता था, न उनका प्रभाव था, अभी तो शुरुआत थी। उस समय उनको कितना कष्ट झेलना पड़ा होगा, कितनी मेहनत करनी पड़ी होगी, इसका हम अंदाज़ कर सकते हैं। और चंपारण सत्याग्रह ऐसा था कि

जिसमें महात्मा गाँधी के संगठन कौशल, महात्मा गाँधी की भारतीय समाज की नब्ज़ को जानने की शक्ति, महात्मा गाँधी अपने व्यवहार से अंग्रेज सल्तनत के सामने गरीब से गरीब, अनपढ़ से अनपढ़ व्यक्ति को संघर्ष के लिये संगठित करना, प्रेरित करना, संघर्ष के लिये मैदान में लाना, ये अद्भुत शक्ति के दर्शन कराता है। और इसलिये जिस रूप में हम महात्मा गाँधी की विराटता को अनुभव करते हैं। लेकिन अगर सौ साल पहले के गाँधी को सोचें, उस चंपारण सत्याग्रह वाले गाँधी को, तो सार्वजनिक जीवन की शुरुआत करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए चंपारण सत्याग्रह एक बहुत ही अध्ययन का विषय है। सार्वजनिक जीवन की शुरुआत कैसे की जा सकती है, खुद कितना परिश्रम करना होता है और गाँधी ने कैसे किया था, यह हम उनसे सीख सकते हैं। और वो समय था, जितने बड़े-बड़े दिग्गज नेताओं के हम नाम सुनते हैं, गाँधी ने उस समय राजेंद्र बाबू हों, आचार्य कृपलानी जी हों; सबको गाँवों में भेजा था। लोगों के साथ जुड़ करके, लोग जो काम कर रहे हैं, उसी को आज़ादी के रंग से रंग देना - इसके तरीके सिखाए थे। और अंग्रेज़ लोग समझ ही नहीं पाए कि ये गाँधी का तौर-तरीका क्या है। संघर्ष भी चले, सृजन भी चले और दोनों एक साथ चले। गाँधी ने जैसे एक सिक्के के दो पहलू बना दिए थे, एक सिक्के का एक पहलू संघर्ष, तो दूसरा पहलू सृजन। एक तरफ जेल भर देना, तो दूसरी तरफ रचनात्मक कार्यों में अपने आप को खपा देना। एक बड़ा अद्भुत balance गाँधी की कार्य-शैली में था। सत्याग्रह शब्द क्या होता है, असहमति क्या हो सकती है, इतनी बड़ी सल्तनत के सामने असहयोग क्या होता है - एक पूरी नई विभावना गाँधी ने शब्दों के द्वारा नहीं; एक सफल प्रयोग के द्वारा प्रस्थापित कर दी थी।

आज जब देश चंपारण सत्याग्रह की शताब्दी मना रहा है, तब भारत के सामान्य मानव की शक्ति कितनी अपार है, उस अपार शक्ति को आज़ादी के आन्दोलन की तरह, स्वराज से सुराज की यात्रा भी, सवा-सौ करोड़ देशवासियों की संकल्प शक्ति, परिश्रम की पराकाष्ठा, 'सर्वजन हिताय - सर्वजन सुखाय' इस मूल मन्त्र को ले करके, देश के लिये, समाज के लिये, कुछ कर-गुज़रने का अखंड प्रयास ही आज़ादी के लिये मर-मिटने वाले उन महापुरुषों के सपनों को साकार करेगा।

आज जब हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, तब कौन हिन्दुस्तानी ऐसा होगा, जो भारत को बदलना नहीं चाहता होगा; कौन हिन्दुस्तानी होगा, जो देश में बदलाव के लिये हिस्सेदार बनना नहीं चाहता हो। सवा-सौ करोड़ देशवासियों की ये बदलाव की चाह, ये बदलाव का प्रयास, यही तो है, जो नये भारत, New India, इसकी मजबूत नींव डालेगा। New India न तो कोई सरकारी कार्यक्रम है, न ही किसी राजनैतिक दल का manifesto है और न ही ये कोई project है। New India सवा-सौ करोड़ देशवासियों का आह्वान है। यही भाव है कि सवा-सौ करोड़ देशवासी मिलकर के कैसा भव्य भारत बनाना चाहते हैं। सवा-सौ करोड़ देशवासियों के मन के अन्दर एक आशा है, एक उमंग है, एक संकल्प है, एक चाह है।

मेरे प्यारे देशवासियो, अगर हम थोड़ा सा अपनी निजी जिन्दगी से हट करके संवेदना-सभर (संवेदना से भरी) नज़र से समाज में चल रही गतिविधियों को देखेंगे, हमारे अगल-बगल में क्या हो रहा है, उसको जानने-समझने का प्रयास करेंगे, तो हम हैरान हो जाएंगे कि लक्षावधि लोग निस्वार्थ भाव से अपनी निजी जिम्मेदारियों के अतिरिक्त समाज के लिये, शोषित-पीड़ित-वंचितों के लिये, गरीबों के लिये, दुखियारों के लिये कुछ-न-कुछ करते हुए नज़र आते हैं। और वे भी एक मूक सेवक की तरह जैसे तपस्या करते हों, साधना करते हों, वो करते रहते हैं। कई लोग होते हैं, जो नित्य अस्पताल जाते हैं, मरीजों की मदद करते हैं; अनेक लोग होते हैं, पता चलते ही रक्तदान के लिए दौड़ जाते हैं; अनेक लोग होते हैं, कोई भूखा है, तो उसके भोजन की चिंता करते हैं। हमारा देश बहुरत्ना वसुन्धरा है। जन-सेवा ही प्रभु-सेवा, यह हमारी रगों में है। अगर एक बार हम उसको सामूहिकता के रूप में देखें, संगठित रूप में देखें, तो ये कितनी बड़ी शक्ति है। जब New India की बात होती है, तो उसकी आलोचना होना, विवेचना होना, भिन्न नज़रिये से उसे देखना, ये बहुत स्वाभाविक है और ये लोकतंत्र में अवकार्य है। लेकिन ये बात सही है कि सवा-सौ करोड़ देशवासी अगर संकल्प करें, संकल्प को सिद्ध करने के लिये राह तय कर लें, एक-के-बाद-एक कदम उठाते चलें, तो New India सवा-सौ करोड़ देशवासियों का सपना हमारी आँखों के सामने सिद्ध हो सकता है। और ज़रूरी नहीं है कि ये सब चीज़ें बजट से होती हैं, सरकारी project से होती हैं, सरकारी धन से होती हैं। अगर हर नागरिक संकल्प करे कि मैं traffic के नियमों का पालन करूँ, अगर हर नागरिक संकल्प करे कि मैं मेरी जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी के साथ निभाऊँगा, अगर हर नागरिक संकल्प करे कि सप्ताह में एक दिन मैं petrol-diesel का उपयोग नहीं करूँगा अपने जीवन में; चीज़ें छोटी-छोटी होती हैं। आप देखिए इस देश को, जो New India का सपना सवा-सौ करोड़ देशवासी देख रहे हैं, वो अपनी आँखों के सामने साकार होता देख पाएँगे। कहने का तात्पर्य यही है कि हर नागरिक अपने नागरिक धर्म का पालन करे, कर्तव्य का पालन करे। यही अपने आप में New India की एक अच्छी शुरुआत बन सकता है।

आइए, 2022 - भारत की आज़ादी के 75 साल होने जा रहे हैं। भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु को याद करते हैं, चंपारण के सत्याग्रह को याद करते हैं; तो क्यों न हम भी 'स्वराज से सुराज' की इस यात्रा में अपने जीवन को अनुशासित करके, संकल्पबद्ध करके क्यों न जोड़ें। मैं आपको निमंत्रण देता हूँ - आइए।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं आज आपका आभार भी व्यक्त करना चाहता हूँ। पिछले कुछ महीनों में हमारे देश में एक ऐसा

माहौल बना, बहुत बड़ी मात्रा में लोग digital payment डिजिटल आंदोलन में शरीक हुए। बिना नकद कैसे लेन-देन की जा सकती है, उसकी जिज्ञासा भी बढ़ी है, गरीब से गरीब भी सीखने का प्रयास कर रहा है और धीरे-धीरे लोग भी बिना नकद कारोबार कैसे करना, उसकी ओर आगे बढ़ रहे हैं। Demonetisation नोटबंदी के बाद से digital payment के अलग-अलग तरीकों में काफी वृद्धि देखने को मिली है। BHIM-App इसको प्रारंभ किए हुए अभी दो-ढाई महीने का ही समय हुआ है, लेकिन अब तक करीब-करीब डेढ़ करोड़ लोगों ने इसे download किया है।

मेरे प्यारे देशवासियों, काले धन, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को हमें आगे बढ़ाना है। सवा-सौ करोड़ देशवासी इस एक वर्ष में ढाई हजार करोड़ digital लेन-देन का काम करने का संकल्प कर सकते हैं क्या? हमने बजट में घोषणा की है। सवा-सौ करोड़ देशवासियों के लिये ये काम अगर वो चाहें, तो एक साल का इंतजार करने की ज़रूरत नहीं, छः महीने में कर सकते हैं। ढाई हजार करोड़ digital transaction, अगर हम स्कूल में fee भरेंगे तो cash से नहीं भरेंगे, digital से भरेंगे; हम रेलवे में प्रवास करेंगे, विमान में प्रवास करेंगे, digital से payment करेंगे; हम दवाई खरीदेंगे, digital payment करेंगे; हम सस्ते अनाज की दुकान चलाते हैं, हम digital व्यवस्था से करेंगे। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में ये कर सकते हैं हम। आपको कल्पना नहीं है, लेकिन इससे आप देश की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं और काले धन, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के आप एक वीर सैनिक बन सकते हैं। पिछले दिनों लोक-शिक्षा के लिये, लोक-जागृति के लिये डिजिटल मेला के कई कार्यक्रम हुए हैं। देश भर में 100 कार्यक्रम करने का संकल्प है। 80-85 कार्यक्रम हो चुके हैं। उसमें इनाम योजना भी थी। करीब साढ़े बारह लाख लोगों ने उपभोक्ता वाला ये इनाम प्राप्त किया है; 70 हजार लोगों ने व्यापारियों के लिये जो इनाम था, वो प्राप्त हुआ है। और हर किसी ने इस काम को आगे बढ़ाने का संकल्प भी किया है। 14 अप्रैल डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म-जयंती है। और बहुत पहले से जैसे तय हुआ था, 14 अप्रैल को बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म-जयंती पर इस डिजिटल मेला का समापन होने वाला है। सौ दिन पूरे हो करके एक आखिरी बहुत बड़ा कार्यक्रम होने वाला है; बहुत बड़े draw का भी उसमें प्रावधान है। मुझे विश्वास है कि बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म-जयंती का जितना भी समय अभी हमारे पास बचा है, BHIM-App का हम प्रचार करें। नकद कम कैसे हो, नोटों का व्यवहार कम कैसे हो, उसमें हम अपना योगदान दें।

मेरे प्यारे देशवासियों, मुझे खुशी है कि मुझे हर बार, जब भी 'मन की बात' के लिये लोगों से सुझाव माँगता हूँ, अनेक-अनेक प्रकार के सुझाव आते हैं। लेकिन ये मैंने देखा है कि स्वच्छता के विषय में हर बार आग्रह रहता ही रहता है।

मुझे देहरादून से गायत्री नाम की एक बिटिया ने, जो कि 11वीं की छात्रा है, उसने फ़ोन करके एक message भेजा है: -

“आदरणीय प्रधानाचार्य, प्रधानमंत्री जी, आपको मेरा सादर प्रणाम। सबसे पहले तो आपको बहुत बधाइयाँ कि आप इस चुनाव में आपने भारी मतों से विजय हासिल की है। मैं आपसे अपने मन की बात करना चाहती हूँ। मैं कहना चाहती हूँ कि लोगों को यह समझाना होगा कि स्वच्छता कितनी ज़रूरी है। मैं रोज़ उस नदी से हो कर जाती हूँ, जिसमें लोग बहुत सा कूड़ा-करकट भी डालते हैं और नदियों को दूषित करते हैं। वह नदी रिस्पना पुल से होते हुए आती है और मेरे घर तक भी आती है। इस नदी के लिये हमने बस्तियों में जा करके हमने रैली भी निकाली और लोगों से बातचीत भी की, परन्तु उसका कुछ फ़ायदा न हुआ। मैं आपसे ये कहना चाहती हूँ कि अपनी एक टीम भेजकर या फिर न्यूज़पेपर के माध्यम से इस बात को उजागर किया जाए, धन्यवाद।”

देखिए भाइयो-बहनो, 11वीं कक्षा की एक बेटा की कितनी पीड़ा है। उस नदी में कूड़ा-कचरा देख कर के उसको कितना गुस्सा आ रहा है। मैं इसे अच्छी निशानी मानता हूँ। मैं यही तो चाहता हूँ, सवा-सौ करोड़ देशवासियों के मन में गन्दगी के प्रति गुस्सा पैदा हो। एक बार गुस्सा पैदा होगा, नाराज़गी पैदा होगी, उसके प्रति रोष पैदा होगा, हम ही गन्दगी के खिलाफ कुछ-न-कुछ करने लग जाएंगे। और अच्छी बात है कि गायत्री स्वयं अपना गुस्सा भी प्रकट कर रही है, मुझे सुझाव भी दे रही है, लेकिन साथ-साथ खुद ये भी कह रही है कि उसने काफी प्रयास किए; लेकिन विफलता मिली। जब से स्वच्छता के आन्दोलन की शुरुआत हुई है, जागरूकता आई है। हर कोई उसमें सकारात्मक रूप से जुड़ता चला गया है। उसने एक आंदोलन का रूप भी लिया है। गन्दगी के प्रति नफ़रत भी बढ़ती चली जा रही है। जागरूकता हो, सक्रिय भागीदारी हो, आंदोलन हो, इसका अपना महत्व है ही है। लेकिन स्वच्छता आंदोलन से ज़्यादा आदत से जुड़ी हुई होती है। ये आंदोलन आदत बदलने का आंदोलन है, ये आंदोलन स्वच्छता की आदत पैदा करने का आंदोलन है, आंदोलन सामूहिक रूप से हो सकता है। काम कठिन है, लेकिन करना है। मुझे विश्वास है कि देश की नयी पीढ़ी में, बालकों में, विद्यार्थियों में, युवकों में, ये जो भाव जगा है, ये अपने-आप में अच्छे परिणाम के संकेत देता है। आज की मेरी 'मन की बात' में गायत्री की बात जो भी सुन रहे हैं, मैं सारे देशवासियों को कहूँगा कि गायत्री का संदेश हम सब के लिये संदेश बनना चाहिए।

मेरे प्यारे देशवासियों, जब से मैं 'मन की बात' कार्यक्रम को कर रहा हूँ, प्रारंभ से ही एक बात पर कई सुझाव मुझे मिलते रहे हैं और वो ज़्यादातर लोगों ने चिंता जताई है food wastage के संबंध में। हम जानते हैं कि हम परिवार में भी और सामूहिक भोजन समारोह में भी ज़रूरत से ज़्यादा plate में ले लेते हैं। जितनी चीज़ें दिखाई दे, सब सारी की सारी plate में

भर देते हैं और फिर खा नहीं पाते हैं। जितना plate में भरते हैं, उससे आधा भी पेट में नहीं भरते हैं और फिर वहीं छोड़ कर निकल जाते हैं। आपने कभी सोचा है कि हम जो ये जूठन छोड़ देते हैं, उससे हम कितनी बर्बादी करते हैं; क्या कभी सोचा है कि अगर जूठन न छोड़ें, तो ये कितने गरीबों का पेट भर सकता है। ये विषय ऐसा नहीं है कि जो समझाना पड़े। वैसे हमारे परिवार में छोटे बालकों को जब माँ परोसती है, तो कहती है कि बेटा, जितना खा सकते हो, उतना ही लो। कुछ-न-कुछ तो प्रयास होता रहता है, लेकिन फिर भी इस विषय पर उदासीनता एक समाजद्रोह है, गरीबों के साथ अन्याय है। दूसरा, अगर बचत होगी, तो परिवार का भी तो आर्थिक लाभ है। समाज के लिये सोचें, अच्छी बात है, लेकिन ये विषय ऐसा है कि परिवार का भी लाभ है। मैं इस विषय पर ज्यादा आग्रह नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मैं चाहूँगा कि ये जागरूकता बढ़नी चाहिए। मैं कुछ युवकों को तो जानता हूँ कि जो इस प्रकार के आंदोलन चलाते हैं, उन्होंने Mobile App बनाए हैं और कहीं पर भी इस प्रकार की जूठन पड़ी है, तो लोग बुलाते हैं, वो लोग सब इकठ्ठा करते हैं और इसका सदुपयोग करते हैं, मेहनत करते हैं और हमारे ही देश के नौजवान ही करते हैं। हिंदुस्तान के हर राज्य में कहीं-न-कहीं आपको ऐसे लोग मिलेंगे। उनका जीवन भी हम लोगों को प्रेरणा दे सकता है कि हम जूठन न करें। हम उतना ही लें, जितना खाना है।

देखिए, बदलाव के लिये यही तो रास्ते होते हैं। और जो लोग शरीर स्वास्थ्य के संबंध में जागरूक होते हैं, वो तो हमेशा कहते हैं - पेट भी थोड़ा खाली रखो, प्लेट भी थोड़ी खाली रखो। और जब स्वास्थ्य की बात आई है, तो 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस है, World Health Day. संयुक्त राष्ट्र ने 2030 तक Universal Health Coverage यानि कि सबको स्वास्थ्य का लक्ष्य तय किया है। इस बार United Nations ने 7 अप्रैल विश्व स्वास्थ्य दिवस पर Depression विषय पर focus किया है। Depression ये इस बार की उनकी theme है। हम लोग भी Depression शब्द से परिचित हैं, लेकिन अगर शाब्दिक अर्थ करना है, तो कुछ लोग उसको अवसाद भी कहते हैं। एक अनुमान है कि दुनिया के अन्दर 35 करोड़ से ज्यादा लोग मानसिक रूप से, Depression से पीड़ित हैं। मुसीबत ये है कि हमारे अगल-बगल में भी इस बात को हम समझ नहीं पाते हैं और शायद इस विषय में खुल कर के बात करने में हम संकोच भी करते हैं। जो स्वयं Depression महसूस करता है, वो भी कुछ बोलता नहीं, क्योंकि वो थोड़ी शर्मिंदगी महसूस करता है।

मैं देशवासियों से कहना चाहूँगा कि Depression ऐसा नहीं है कि उससे मुक्ति नहीं मिल सकती है। एक मनोवैज्ञानिक माहौल पैदा करना होता है और उसकी शुरुआत होती है। पहला मंत्र है, Depression के suppression की बजाय इसके expression की ज़रूरत है; अपने साथियों के बीच, मित्रों के बीच, माँ-बाप के बीच, भाइयों के बीच, teacher के साथ; खुल कर के कहिए आपको क्या हो रहा है। कभी-कभी अकेलापन खास कर के hostel में रहने वाले बच्चों को तकलीफ़ ज्यादा हो जाती है। हमारे देश का सौभाग्य रहा कि हम लोग संयुक्त परिवार में पले-बढ़े हैं, विशाल परिवार होता है, मेल-जोल रहता है और उसके कारण Depression की संभावनायें खत्म हो जाती हैं, लेकिन फिर भी मैं माँ-बाप को कहना चाहूँगा कि आपने कभी देखा है कि आपका बेटा या बेटी या परिवार का कोई भी सदस्य - पहले जब आप खाना खाते थे, सब लोग साथ खाते थे, लेकिन एक परिवार का व्यक्ति - वो कहता है - नहीं, मैं बाद में खाऊँगा - वो table पर नहीं आता है। घर में सब लोग कहीं बाहर जा रहे हैं, तो कहता है - नहीं-नहीं, मुझे आज नहीं आना है - अकेला रहना पसंद करता है। आपका कभी ध्यान गया है कि ऐसा क्यों करता है? आप ज़रूर मानिए कि वो Depression की दिशा का पहला क़दम है, अगर वो आप से समूह में रहना पसंद नहीं करता है, अकेला एक कोने में चला जा रहा है; तो प्रयत्नपूर्वक देखिए कि ऐसा न होने दें। उसके साथ खुल कर के जो बात करते हैं, ऐसे लोगों के साथ उसको बीच में रहने का अवसर दीजिए। हँसी-खुशी की खुल कर के बातें करते-करते-करते उसको expression के लिये प्रेरित करें, उसके अन्दर कौन-सी कुंठा कहाँ पड़ी है, उसको बाहर निकालिए; ये उत्तम उपाय है। और Depression मानसिक और शारीरिक बीमारियों का कारण बन जाता है। जैसे Diabetes हर प्रकार की बीमारियों का यजमान बन जाता है, वैसे Depression भी टिकने की, लड़ने की, साहस करने की, निर्णय करने की, हमारी सारी क्षमताओं को ध्वस्त कर देता है। आपके मित्र, आपका परिवार, आपका परिसर, आपका माहौल - ये मिलकर के ही आपको Depression में जाने से रोक भी सकते हैं और गए हैं, तो बाहर ला सकते हैं। एक और भी तरीका है, अगर अपनों के बीच में आप खुल करके अपने expression नहीं कर पाते हों, तो एक काम कीजिए, अगल-बगल में कहीं सेवा-भाव से लोगों की मदद करने चले जाइए; मन लगा के मदद कीजिए, उनके सुख-दुःख को बाँटिए, आप देखना, आपके भीतर का दर्द यूँ ही मिटता चला जाएगा उनके दुखों को अगर आप समझने की कोशिश करोगे, सेवा-भाव से करोगे, आपके अन्दर एक नया आत्मविश्वास पैदा होगा। औरों से जुड़ने से, किसी की सेवा करने से, और निःस्वार्थ भाव से अगर सेवा करते हैं, तो आप अपने मन के बोझ को बहुत आसानी से हल्का कर सकते हैं।

वैसे योग भी अपने मन को स्वस्थ रखने के लिये एक अच्छा मार्ग है। तनाव से मुक्ति, दबाव से मुक्ति, प्रसन्न चित्त की ओर प्रयाण - योग बहुत मदद करता है। 21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस है, ये तीसरा वर्ष होगा। आप भी अभी से तैयारी कीजिए और लाखों की तादाद में सामूहिक योग उत्सव मनाना चाहिए। आपके मन में तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के संबंध में अगर कोई सुझाव है, तो आप मेरे mobile application के माध्यम से अपने सुझाव मुझे ज़रूर भेजें, मार्गदर्शन करें। योग के संबंध में जितने गीत, काव्यमय रचनायें आप तैयार कर सकते हैं, वो करनी चाहिए, ताकि वो सहज रूप से लोगों को समझ आ जाता है।

माताओं और बहनों से भी मैं ज़रूर आज एक बात करना चाहूँगा, क्योंकि आज health की ही चर्चा काफ़ी निकली है, स्वास्थ्य की बातें काफ़ी हुई हैं। तो पिछले दिनों भारत सरकार ने एक बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय किया है। हमारे देश में जो working class women हैं, कामकाजी वर्ग में जो हमारी महिलायें हैं और दिनों-दिन उनकी संख्या भी बढ़ रही है, उनकी भागीदारी बढ़ रही है और ये स्वागत योग्य है, लेकिन साथ-साथ, महिलाओं के पास विशेष ज़िम्मेदारियाँ भी हैं। परिवार की ज़िम्मेदारियाँ वो संभालती हैं, घर की आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ भी उसकी भागीदारी भी उसको करनी पड़ती है और उसके कारण कभी-कभी नवजात शिशु के साथ अन्याय हो जाता है। भारत सरकार ने एक बहुत बड़ा फैसला किया है। ये जो कामकाजी वर्ग की महिलायें हैं, उनको प्रसूति के समय, pregnancy के समय, delivery के समय, maternity leave जो पहले 12 सप्ताह मिलती थी, अब 26 सप्ताह दी जाएगी। दुनिया में शायद दो या तीन ही देश हैं, जो हम से आगे हैं। भारत ने एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण फैसला हमारी इन बहनों के लिये किया है। और उसका मूल उद्देश्य उस नवजात शिशु की देखभाल, भारत का भावी नागरिक, जन्म के प्रारम्भिक काल में उसकी सही देखभाल हो, माँ का उसको भरपूर प्यार मिले; तो हमारे ये बालक बड़े हो करके देश की अमानत बनेंगे। माताओं का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा और इसलिये ये बहुत बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय है। और इसके कारण formal sector में काम करने वाली करीब 18 लाख महिलाओं को इसका फ़ायदा मिलेगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, 5 अप्रैल को रामनवमी का पावन पर्व है, 9 अप्रैल को महावीर जयंती है, 14 अप्रैल को बाबा साहब अम्बेडकर की जन्म-जयंती है; ये सभी महापुरुषों का जीवन हमें प्रेरणा देता रहे, New India के लिये संकल्प करने की ताकत दे। दो दिन के बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वर्ष प्रतिपदा, नव संवत्सर, इस नववर्ष के लिये आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। वसन्त ऋतु के बाद फ़सल पकने के प्रारंभ और किसानों को उनकी मेहनत का फल मिलने का ये ही समय है। हमारे देश के अलग-अलग कोने में इस नववर्ष को अलग-अलग रूप में मनाया जाता है। महाराष्ट्र में गुड़ी-पड़वा, आंध्र-कर्नाटक में नववर्ष के तौर पर उगादी, सिन्धी चेटी-चांद, कश्मीरी नवरेह, अवध के क्षेत्र में संवत्सर पूजा, बिहार के मिथिला में जुड़-शीतल और मगध में सतुवानी का त्योहार नववर्ष पर होता है। अनगिनत, भारत इतनी विविधताओं से भरा हुआ देश है। आपको भी इस नववर्ष की मेरी तरफ़ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

30-अप्रैल-2017 12:15 IST

आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। हर 'मन की बात' से पहले, देश के हर कोने से, हर आयु वर्ग के लोगों से, 'मन की बात' को ले करके ढेर सारे सुझाव आते हैं। आकाशवाणी पर आते हैं, NarendraModiApp पर आते हैं, MyGov के माध्यम से आते हैं, फ़ोन के द्वारा आते हैं, recorded message के द्वारा आते हैं। और जब कभी-कभी मैं उसे समय निकाल करके देखता हूँ तो मेरे लिये एक सुखद अनुभव होता है। इतनी विविधताओं से भरी हुई जानकारी मिलती है। देश के हर कोने में शक्तियों का अम्बार पड़ा है। साधक की तरह समाज में खपे हुए लोगों का अनगिनत योगदान, दूसरी तरफ़ शायद सरकार की नज़र भी नहीं जाती होगी, ऐसी समस्याओं का भी अम्बार नज़र आता है। शायद व्यवस्था भी आदी हो गयी होगी, लोग भी आदी हो गए होंगे। और मैंने पाया है कि बच्चों की जिज्ञासायें, युवाओं की महत्वाकांक्षाएँ, बड़ों के अनुभव का निचोड़, भाँति-भाँति की बातें सामने आती हैं। हर बार जितने inputs 'मन की बात' के लिये आते हैं, सरकार में उसका detail analysis होता है। सुझाव किस प्रकार के हैं, शिकायतें क्या हैं, लोगों के अनुभव क्या हैं। आमतौर पर यह देखा गया है कि मनुष्य का स्वभाव होता है दूसरे को सलाह देने का। ट्रेन में, बस में जाते और किसी को खांसी आ गयी तो तुरंत दूसरा आकर के कहता कि ऐसा करो। सलाह देना, सुझाव देना, ये जैसा मानो हमारे यहाँ स्वभाव में है। शुरू में 'मन की बात' को लेकर के भी जब सुझाव आते थे, सलाहके शब्द सुनाई देते थे, पढ़ने को मिलते थे, तो हमारी टीम को भी यही लगता था कि ये बहुत सारे लोगों को शायद ये आदत होगी, लेकिन हमने ज़रा बारीकी से देखने की कोशिश की तो मैं सचमुच में इतना भाव-विभोर हो गया। ज्यादातर सुझाव देने वाले लोग वो हैं, मुझे तक पहुँचने का प्रयास करने वाले लोग वो हैं, जो सचमुच में अपने जीवन में कुछ-न-कुछ करते हैं। कुछ अच्छा हो उस पर वो अपनी बुद्धि, शक्ति, सामर्थ्य, परिस्थिति के अनुसार प्रयत्नरत हैं। और ये चीज़ें जब ध्यान में आयी तो मुझे लगा कि ये सुझाव सामान्य नहीं हैं। ये अनुभव के निचोड़ से निकले हुए हैं। कुछ लोग सुझाव इसलिये भी देते हैं कि उनको लगता है कि अगर यही विचार वहाँ, जहाँ काम कर रहे हैं, वो विचार अगर और लोग सुनें और उसका एक व्यापक रूप मिल जाए तो बहुत लोगों को फायदा हो सकता है। और इसलिये उनकी स्वाभाविक इच्छा रहती है कि 'मन की बात' में अगर इसका ज़िक्र हो जाए। ये सभी बातें मेरी दृष्टि से अत्यंत सकारात्मक हैं। मैं सबसे पहले तो अधिकतम सुझाव जो कि कर्मयोगियों के हैं, समाज के लिये कुछ-न-कुछ कर गुज़रने वाले लोगों के हैं। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इतना ही नहीं मैं किसी बात को जब मैं उल्लेख करता हूँ तो, ऐसी-ऐसी चीज़ें ध्यान में आती हैं, तो बड़ा ही आनंद होता है। पिछली बात 'मन की बात' में कुछ लोगों ने मुझे सुझाव दिया था food waste हो रहा है, उसके संबंध में चिंता जताई थी और मैंने उल्लेख किया। और जब उल्लेख किया तो उसके बाद NarendraModiApp पर, MyGov पर देश के अनेक कोने में से अनेक लोगों ने, कैसे-कैसे innovative ideas के साथ food waste को बचाने के लिये क्या-क्या प्रयोग किये हैं। मैंने भी कभी सोचा नहीं था आज हमारे देश में खासकर के युवा-पीढ़ी, लम्बे अरसे से इस काम को कर रही है। कुछ सामाजिक संस्थाएँ करती हैं, ये तो हम कई वर्षों से जानते आए हैं, लेकिन मेरे देश के युवा इसमें लगे हुए हैं - ये तो मुझे बाद में पता चला। कईयों ने मुझे videos भेजे हैं। कई स्थान हैं जहाँ रोटी बैंक चल रही हैं। लोग रोटी बैंक में, अपने यहाँ से रोटी जमा करवाते हैं, सब्जी जमा करवाते हैं और जो needy लोग हैं वे वहाँ उसे प्राप्त भी कर लेते हैं। देनेवाले को भी संतोष होता है, लेने वाले को भी कभी नीचा नहीं देखना पड़ता है। समाज के सहयोग से कैसे काम होते हैं, इसका ये उदाहरण है।

आज अप्रैल महीना पूर्ण हो रहा है, आखिरी दिवस है। 1 मई को गुजरात और महाराष्ट्र का स्थापना दिवस है। इस अवसर पर दोनों राज्यों के नागरिकों को मेरी तरफ़ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। दोनों राज्यों ने विकास की नयी-नयी ऊँचाइयों को पार करने का लगातार प्रयास किया है। देश की उन्नति में योगदान दिया है। और दोनों राज्यों में महापुरुषों की अविरत श्रंखला और समाज के हर क्षेत्र में उनका जीवन हमें प्रेरणा देता रहता है। और इन महापुरुषों को याद करते हुए राज्य के स्थापना दिवस पर 2022, आज़ादी के 75 साल, हम अपने राज्य को, अपने देश को, अपने समाज को, अपने नगर को, अपने परिवार को कहाँ पहुँचाएँगे इसका संकल्प लेना चाहिये। उस संकल्प को सिद्ध करने के लिये योजना बनानी चाहिये और सभी नागरिकों के सहयोग से आगे बढ़ना चाहिये। मेरी इन दोनों राज्यों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं।

एक ज़माना था जब climate change ये academic world का विषय रहता था, seminar का विषय रहता था। लेकिन

आज, हम लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, हम अनुभव भी करते हैं, अचरज़ भी करते हैं। कुदरत ने भी, खेल केसारे नियम बदल दिये हैं। हमारे देश में मई-जून में जो गर्मी होती है, वो इस बार मार्च-अप्रैल में अनुभव करने की नौबत आ गयी। और मुझे 'मन की बात' पर जब मैं लोगों के सुझाव ले रहा था, तो ज़्यादातर सुझाव इन गर्मी केसमय में क्या करना चाहिये, उस पर लोगों ने मुझे दिये हैं। वैसे सारी बातें प्रचलित हैं। नया नहीं होता है लेकिन फिर भी समय पर उसका पुनःस्मरण बहुत काम आता है।

कोई श्रीमान प्रशांत कुमार मिश्र, टी.एस. कार्तिक ऐसे अनेक मित्रों ने पक्षियों की चिंता की है। उन्होंने कहा कि बालकनी में, छत पर, पानी रखना चाहिये। और मैंने देखा है कि परिवार के छोटे-छोटे बालक इस बात को बखूबी करते हैं। एक बार उनको ध्यान में आ जाए कि ये पानी क्यों भरना चाहिये तो वो दिन में 10 बार देखने जाते हैं कि जो बर्तन रखा है उसमें पानी है कि नहीं है। और देखते रहते हैं कि पक्षी आये कि नहीं आये। हमें तो लगता है कि ये खेलचल रहा है लेकिन सचमुच में, बालक मन में ये संवेदनार्य जगाने का एक अद्भुत अनुभव होता है। आप भी कभी देखिये पशु-पक्षी के साथ थोड़ा सा भी लगाव एक नये आनंद की अनुभूति कराता है।

कुछ दिन पहले मुझे गुजरात से श्रीमान जगत भाई ने अपनी एक किताब भेजी है 'Save The Sparrows' और जिसमें उन्होंने गौरैया की संख्या जो कम हो रही है उसकी चिंता तो की है लेकिन स्वयं ने mission mode में उसके संरक्षण के लिये क्या प्रयोग किये हैं, क्या प्रयास किये हैं, बहुत अच्छा वर्णन उस किताब में है। वैसे हमारे देश में तो पशु-पक्षी, प्रकृति उसके साथ सह-जीवन की बात, उस रंग से हम रंगे हुए हैं लेकिन फिर भी ये आवश्यक है कि सामूहिक रूप से ऐसे प्रयासों को बल देना चाहिये। जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था तो 'दाऊदी बोहरा समाज' के धर्मगुरु सैयदना साहब को सौ साल हुए थे। वे 103 साल तक जीवित रहे थे। और उनके सौ साल निमित्त बोहरासमाज ने Burhani foundation के द्वारा sparrow को बचाने के लिये एक बहुत बड़ा अभियान चलाया था। इसका शुभारम्भ करने का मुझे अवसर मिला था। करीब 52 हजार bird feeders उन्होंने दुनिया के कोने-कोने में वितरित किये थे। Guinness book of World Records में भी उसको स्थान मिला था।

कभी-कभी हम इतने व्यस्त होते हैं तो, अखबार देने वाला, दूध देने, सब्जी देने वाला, पोस्टमैन, कोई भी हमारे घर के दरवाजे से आता है, लेकिन हम भूल जाते हैं कि गर्मी के दिन हैं ज़रा पहले उसको पानी का तो पूछें !

नौजवान दोस्तो, कुछ बातें आपके साथ भी तो मैं करना चाहता हूँ। मुझे कभी-कभी चिंता हो रही है कि हमारी युवा पीढ़ी में कई लोगों को comfort zone में ही ज़िंदगी गुज़ारने में मज़ा आती है। माँ-बाप भी बड़े एक रक्षात्मक अवस्था में ही उनका लालन-पालन करते हैं। कुछ दूसरे extreme भी होते हैं लेकिन ज़्यादातर comfort zone वाला नज़र आता है। अब परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी हैं। Vacation का मज़ा लेने के लिये योजनाएँ बन चुकी होंगी। Summer vacation गर्मियाँ होने के बाद भी ज़रा अच्छा लगता है। लेकिन मैं एक मित्र के रूप में आपका vacation कैसा जाए, कुछ बातें करना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कुछ लोग ज़रूर प्रयोग करेंगे और मुझे बतायेंगे भी। क्या आप vacation के इस समय का उपयोग, मैं तीन सुझाव देता हूँ उसमें से तीनों करें तो बहुत अच्छी बात है लेकिन तीन में से एक करने का प्रयास करें। ये देखें कि new experience हो, प्रयास करें कि new skill का अवसर लें, कोशिश करें कि जिसके विषय में न कभी सुना है, न देखा है, न सोचा है, न जानते हैं फिर भी वहाँ जाने का मन करता है और चले जायें। New places, new experiences, new skills। कभी-कभार किसी चीज़ को टी.वी. पर देखनाया किताब में पढ़ना या परिचितों से सुनना और उसी चीज़ को स्वयं अनुभव करना तो दोनों में आसमान-ज़मीन का अंतर होता है। मैं आपसे आग्रह करूँगा इस vacation में जहाँ भी आपकी जिज्ञासा है उसे जानने के लिये कोशिश कीजिये, नया experiment कीजिये। Experiment positive हो, थोड़ा comfort zone से बाहर ले जाने वाला हो। हम मध्यम-वर्गीय परिवार के हैं, सुखी परिवार के हैं। क्या दोस्तो कभी मन करता है कि reservation किये बिना रेलवे के second class में ticket लेकर के चढ़ जाएँ, कम-से-कम 24 घंटे का सफ़र करें। क्या अनुभव आता है। उन पैसंजरो की बातें क्या हैं, वो स्टेशन पर उतर कर क्या करते हैं, शायद सालभर में जो सीख नहीं पाते हैं उस 24 घंटे की without reservation वाली, भीड़-भाड़ वाली ट्रेन में सोने को भी न मिले, खड़े-खड़े जाना पड़े। कभी तो अनुभव कीजिये। मैं ये नहीं कहता हूँ बार-बार करिये, एक-आध बार तो करिये। शाम का समय हो अपना football ले करके, volleyball ले करके या कोई भी खेल-कूद का साधन ले करके तद्दन गरीब बस्ती में चले जाएँ। उन गरीब बालकों के साथ खुद खेलिये, आप देखिये, शायद ज़िंदगी में खेल का आनंद पहले कभी नहीं मिला होगा - ऐसा आपको मिलेगा। समाज में इस प्रकार की ज़िंदगी गुज़ारने वाले बच्चों को जब आपके साथ खेलने का अवसर मिलेगा, आपने सोचा है उनके जीवन में कितना बड़ा बदलाव आएगा। और मैं विश्वास करता हूँ एक बार जायेंगे, बार-बार जानेका मन कर जाएगा। ये अनुभव आपको बहुत कुछ सिखाएगा। कई volunteer organisations सेवा के काम करते रहते हैं। आप तो

Google गुरु से जुड़े हुए हैं उस पर ढूँढ़िए। किसी ऐसे organisation के साथ 15 दिन, 20 दिन केलिये जुड़ जाइये, चले जाइये, जंगलों में चले जाइये। कभी-कभी बहुत summer camp लगते हैं, personality development के लगते हैं, कई प्रकार के विकास के लिये लगते हैं उसमें शरीरक हो सकते हैं। लेकिन साथ-साथ कभी आपको लगता है कि आपने ऐसे summer camp किये हों, personality development का course किया हो। आप बिना पैसे लिये समाज के उन लोगों के पास पहुँचे जिनको ऐसा अवसर नहीं है और जो आपने सीखा है, उनको सिखायें। कैसे किया जा सकता है, आप उनको सिखा सकते हैं। मुझे इस बात की भी चिंता सता रही है कि technology दूरियाँ कम करने के लिये आयी, technology सीमायें समाप्त करने के लिये आयी। लेकिन उसका दुष्परिणाम ये हुआ है कि एक ही घर में छः लोग एक ही कमरे में बैठें हों लेकिन दूरियाँ इतनी हों कि कल्पना ही नहीं कर सकते। क्यों? हर कोई technology से कहीं और busy हो गया है। सामूहिकता भी एक संस्कार है, सामूहिकता एकशक्ति है। दूसरा मैंने कहा कि skill। क्या आपका मन नहीं करता कि आप कुछ नया सीखें! आज स्पर्द्धा का युग है। Examination में इतने डूबे हुए रहते हैं। उत्तम से उत्तम अंक पाने के लिये खप जाते हैं, खो जाते हैं। Vacation में भी कोई न कोई coaching class लगा रहता है, अगली exam की चिंता रहती है। कभी-कभी डर लगता है कि robot तो नहीं हो रही हमारी युवा-पीढ़ी। मशीन की तरह ज़िंदगी नहीं गुज़ार रही।

दोस्तो, जीवन में बहुत-कुछ बनने के सपने, अच्छी बात है, कुछ कर गुजरने के इरादे अच्छी बात है, और करना भी चाहिये। लेकिन ये भी देखिये कि अपने भीतर जो human element है वो तो कहीं कुंठित नहीं हो रहा है, हममानवीय गुणों से कहीं दूर तो नहीं चले जा रहे हैं! Skill development में इस पहलू पर थोड़ा बल दिया जा सकता है क्या! Technology से दूर, खुद के साथ समय गुज़ारने का प्रयास। संगीत का कोई वाद्य सीख रहे हैं, कोई नईभाषा के 5-50 वाक्य सीख रहे हैं, तमिल हो, तेलुगु हो, असमिया हो, बांगला हो, मलयालम हो, गुजराती हो, मराठी हो, पंजाबी हो। कितनी विविधताओं से भरा हुआ देश है और नज़र करें तो हमारे अगल-बगल में ही कोई न कोई सिखाने वाला मिल सकता है। Swimming नहीं आता तो swimming सीखें, drawing करें, भले उत्तम drawing नहीं आएगा लेकिन कुछ तो कागज़ पर हाथ लगाने की कोशिश करें। आपका भीतर की जो संवेदना है वो प्रकट होने लग जायेगी। कभी-कभी छोटे-छोटे काम जिसको हम कहते हैं - हमें, क्यों न मन करे, हम सीखें! आपको car driving तो सीखने का मन करता है! क्या कभी auto-rickshaw सीखने का मन करता है क्या! आप cycle तो चलाते हैं, लेकिन three-wheeler वाली cycle जो लोगों को ले कर के जाते हैं - कभी चलाने की कोशिश की है क्या! आप देखें ये सारे नये प्रयोग ये skill ऐसी है आपको आनंद भी देगी और जीवन को एक दायरे में जो बाँध दिया है नउससे आपको बाहर निकाल देगी। Out of box कुछ करिये दोस्तो। ज़िंदगी बनाने का यही तो अवसर होता है। और आप सोचते होंगे कि सारी exam, समाप्त हो जाए, Career के नये पड़ाव पर जाऊँगा तब सीखूँगा तो वो तो मौकानहीं आएगा। फिर आप दूसरी इंज़ट में पड़ जायेंगे और इसलिये मैं आपसे कहूँगा, अगर आपको जादू सीखने का शौक हो तो ताश के पत्तों की जादू सीखिए। अपने यार-दोस्तों को जादू दिखाते रहिये। कुछ-न-कुछ ऐसी चीज़ें जो आप नहीं जानते हैं उसको जानने का प्रयास कीजिये, उससे आपको ज़रूर लाभ होगा। आपके भीतर की मानवीय शक्तियों को चेतना मिलेगी। विकास के लिये बहुत अच्छा अवसर बनेगा। मैं अपने अनुभव से कहता हूँ दुनिया को देखने से जितना सीखने-समझने को मिलता है जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। नये-नये स्थान, नये-नये शहर, नये-नये नगर, नये-नये गाँव, नये-नये इलाके। लेकिन जाने से पहले कहाँ जा रहें - उसका अभ्यास और जाकरके एक जिज्ञासु की तरह उसे देखना, समझना, लोगों से चर्चा करना, उनसे पूछना ये अगर प्रयास किया तो उसे देखने का आनंद कुछ और होगा। आप ज़रूर कोशिश कीजिये और तय कीजिये travelling ज्यादा न करें। एकस्थान पर जाकर कर के तीन दिन, चार दिन लगाइये। फिर दूसरे स्थान पर जाइये वहाँ तीन दिन - चार दिन लगाइये। इससे आपको बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। मैं चाहूँगा और ये भी सही है कि आप जब जा रहे हैं तो मुझे तस्वीर भी share कीजिये। क्या नया देखा? कहाँ गए थे? आप Hash tag Incredible India इसका उपयोग कर के अपने इन अनुभवों को share कीजिये।

दोस्तो, इस बार भारत सरकार ने भी आपके लिये बड़ा अच्छा अवसर दिया है। नई पीढ़ी तो नकद से करीब-करीब मुक्त ही हो रही है। उसको cash की ज़रूरत नहीं है। वो Digital Currency में विश्वास करने लग गई है। आप तोकरते हैं लेकिन इसी योजना से आप कमाई भी कर सकते हैं - आपने सोचा है। भारत सरकार की एक योजना है। अगर BHIM App जो कि आप download करते होंगे। आप उपयोग भी करते होंगे। लेकिन किसी और को refer करें। किसी और को जोड़ें और वो नया व्यक्ति अगर तीन transaction करे, आर्थिक कारोबार तीन बार करे, तो इस काम को करने के लिये आपको 10 रुपये की कमाई होती है। आपके खाते में सरकार की तरफ से 10 रुपये जमा होजायेगा। अगर दिन में आपने 20 लोगों से करवा लिया तो आप शाम होते-होते 200 रुपये कमा लेंगे। व्यापारियों को भी कमाई हो सकती है, विद्यार्थियों को भी कमाई हो सकती है। और ये योजना 14 अक्टूबर तक है। Digital India बनाने में आपका योगदान होगा। New India के आप एक प्रहरी बन जाएँगे, तो vacation का vacation और कमाई की कमाई। refer & earn।

आमतौर पर हमारे देश में VIP culture के प्रति एक नफ़रत का माहौल है लेकिन ये इतना गहरा है - ये मुझे अभी-अभी

अनुभव हुआ। जब सरकार ने तय कर दिया कि अब हिंदुस्तान में कितना ही बड़ा व्यक्ति क्यों न हो, वो अपनीगाड़ी पर लाल बत्ती लगा कर के नहीं घूमेगा। वो एक प्रकार से VIP culture का symbol बन गया था लेकिन अनुभव ये कहता था कि लाल बत्ती तो vehicle पर लगती थी, गाड़ी पर लगती थी, लेकिन धीरे-धीरे-धीरे वो दिमाग में घुस जाती थी और दिमागी तौर पर VIP culture पनप चुका है। अभी तो लाल बत्ती गई है इसके लिये कोई ये तो दावा नहीं कर पायेगा कि दिमाग में जो लाल बत्ती घुस गई है वो निकल गई होगी। मुझे बड़ा interesting एकphone call आया। खैर उस phone में उन्होंने आशंका भी व्यक्त की है लेकिन इस समय इतना अंदाज आता है इस phone call से कि सामान्य मानवी ये चीजें पसंद नहीं करता है। उसे दूरी महसूस होती है।

“नमस्कार प्रधानमंत्री जी मैं शिवा चौबे बोल रही हूँ, जबलपुर मध्य प्रदेश से। मैं Government के red beacon light ban के बारे में कुछ बोलना चाहती हूँ। मैंने एक लाइन पढ़ी न्यूजपेपर में जिसमें लिखा था “every Indian is a VIP on a road” ये सुन के मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ और खुशी भी हुई कि आज मेरा टाइम भी उतना ही जरूरी है। मुझे ट्रैफिक जाम में नहीं फंसना है और मुझे किसी के लिये रुकना भी नहीं है। तो मैं आपको दिल से बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ इस decision के लिये। और ये जो आपने स्वच्छ भारत अभियान चलाया है इसमें हमारा देश ही नहीं साफ हो रहा है, हमारी रोडों से VIP की दादागिरी भी साफ हो रही है - तो उसके लिये धन्यवाद।”

सरकारी निर्णय से लाल बत्ती का जाना वो तो एक व्यवस्था का हिस्सा है। लेकिन मन से भी हमें प्रयत्नपूर्वक इसे निकालना है। हम सब मिल कर के जागरूक प्रयास करेंगे तो निकल सकता है। New India का हमारा concept यही है कि देश में VIP की जगह पर EPI का महत्व बढ़े। और जब मैं VIP के स्थान पर EPI कह रहा हूँ तो मेरा भाव स्पष्ट है - Every Person is Important। हर व्यक्ति का महत्व है, हर व्यक्ति का माहात्म्य है। सवा-सौ करोड़ देशवासियों का महत्व हम स्वीकार करें, सवा-सौ करोड़ देशवासियों का माहात्म्य स्वीकार करें तो महान सपनों को पूरा करने के लिये कितनी बड़ी शक्ति एकजुट हो जाएगी। हम सबने मिलकर के करना है।

मेरे प्यारे देशवासियों, मैं हमेशा कहता हूँ कि हम इतिहास को, हमारी संस्कृतियों को, हमारी परम्पराओं को, बार-बार याद करते रहें। उससे हमें ऊर्जा मिलती है, प्रेरणा मिलती है। इस वर्ष हम सवा-सौ करोड़ देशवासी संतरामानुजाचार्य जी की 1000वीं जयंती मना रहे हैं। किसी-न-किसी कारणवश हम इतने बंध गये, इतने छोटे हो गये कि ज्यादा-ज्यादा शताब्दियों तक का ही विचार करते रहे। दुनिया के अन्य देशों के लिये तो शताब्दी का बड़ा महत्व होगा। लेकिन भारत इतना पुरातन राष्ट्र है कि उसके नसीब में हजार साल और हजार साल से भी पुरानी यादों को मनाने का अवसर हमें मिला है। एक हजार साल पहले का समाज कैसा होगा? सोच कैसी होगी? थोड़ीकल्पना तो कीजिये। आज भी सामाजिक रुढ़ियों को तोड़ कर के निकलना हो तो कितनी दिक्कत होती है। एक हजार साल पहले कैसा होता होगा? बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि रामानुजाचार्य जी ने समाज में जो बुराइयाँ थी, ऊँच-नीच का भाव था, छूत-अछूत का भाव था, जातिवाद का भाव था, इसके खिलाफ बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी थी। स्वयं ने अपने आचरण द्वारा समाज जिनको अछूत मानता था उनको गले लगाया था। हजार साल पहले उनके मंदिर प्रवेश के लिये उन्होंने आंदोलन किये थे और सफलतापूर्वक मंदिर प्रवेश करवाये थे। हम कितने भाग्यवान हैं कि हर युग में हमारे समाज की बुराइयों को खत्म करने के लिये हमारे समाज में से ही महापुरुष पैदा हुए हैं। संतरामानुजाचार्य जी की 1000वीं जयंती मना रहे हैं तब, सामाजिक एकता के लिये, संगठन में शक्ति है - इस भाव को जगाने के लिये उनसे हम प्रेरणा लें।

भारत सरकार भी कल 1 मई को ‘संत रामानुजाचार्य’ जी की स्मृति में एक stamp release करने जा रही है। मैं संत रामानुजाचार्य जी को आदर पूर्वक नमन करता हूँ, श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, कल 1 मई का एक और भी महत्व है। दुनिया के कई भागों में उसे ‘श्रमिक दिवस’ के रूप में भी मनाया जाता है। और जब ‘श्रमिक दिवस’ की बात आती है, Labour की चर्चा होती है, Labourers की चर्चा होती है तो मुझे बाबा साहब अम्बेडकर की याद आना बहुत स्वाभाविक है। और बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि आज श्रमिकों को जो सहूलियतें मिली हैं, जो आदर मिला है, उसके लिये हम बाबा साहब के आभारी हैं। श्रमिकों के कल्याण के लिये बाबा साहब का योगदान अविस्मरणीय है। आज जब मैं बाबा साहब की बात करता हूँ, संत रामानुजाचार्य जी की बात करता हूँ तो 12वीं सदी के कर्नाटक के महान संत और सामाजिक सुधारक ‘जगत गुरुबसवेश्वर’ जी की भी याद आती है। कल ही मुझे एक समारोह में जाने का अवसर मिला। उनके वचनमृत के संग्रह को लोकार्पण का वो अवसर था। 12वीं शताब्दी में कन्नड़ भाषा में उन्होंने श्रम, श्रमिक उस पर गहन विचार रखे हैं। कन्नड़ भाषा में उन्होंने कहा था - “काय कवे कैलास”,

उसका अर्थ होता है - आप अपने परिश्रम से ही भगवान शिव के घर कैलाश की प्राप्ति कर सकते हैं यानि कि कर्म करने से ही स्वर्ग की प्राप्ति होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो श्रम ही शिव है। मैं बार-बार 'श्रमेव-जयते' की बात करता हूँ। 'Dignity of labour' की बात करता हूँ। मुझे बराबर याद है भारतीय मज़दूर संघ के जनक और चिन्तक जिन्होंने श्रमिकों के लिए बहुत चिंतन किया ऐसे श्रीमान्दत्तोपन्त ठेंगड़ी कहा करते थे - एक तरफ़ माओवाद से प्रेरित विचार था कि "दुनिया के मज़दूर एक हो जाओ" और दत्तोपन्त ठेंगड़ी कहते थे "मज़दूरों आओ दुनिया को एक करें"। एक तरफ़ कहा जाता था- 'Workers of the world unite'। भारतीय चिंतन से निकली हुई विचारधारा को ले करके दत्तोपन्त ठेंगड़ी कहा करते थे - 'Workers unite the world'। आज जब श्रमिकों की बात करता हूँ तो दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी को याद करना बहुत स्वाभाविक है।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिन के बाद हम बुद्ध पूर्णिमा मनायेंगे। विश्वभर में भगवान बुद्ध से जुड़े हुए लोग उत्सव मनाते हैं। विश्व आज जिन समस्याओं से गुज़र रहा है हिंसा, युद्ध, विनाशलीला, शस्त्रों की स्पर्धा, जब ये वातावरण देखते हैं तो तब, बुद्ध के विचार बहुत ही relevant लगते हैं। और भारत में तो अशोक का जीवन युद्ध से बुद्ध की यात्रा का उत्तम प्रतीक है। मेरा सौभाग्य है कि बुद्ध पूर्णिमा के इस महान पर्व पर United Nations के द्वारा Vesak day मनाया जाता है। इस वर्ष ये श्रीलंका में हो रहा है। इस पवित्र पर्व पर मुझे श्रीलंका में भगवान बुद्ध को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने का एक अवसर मिलेगा। उनकी यादों को ताज़ा करने का अवसर मिलेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत में हमेशा 'सबका साथ-सबका विकास' इसी मंत्र को ले करके आगे बढ़ने का प्रयास किया है। और जब हम सबका साथ-सबका विकास कहते हैं, तो वो सिर्फ़ भारत के अन्दर ही नहीं - वैश्विक परिवेश में भी है। और खास करके हमारे अड़ोस-पड़ोस देशों के लिए भी है। हमारे अड़ोस-पड़ोस के देशों का साथ भी हो, हमारे अड़ोस-पड़ोस के देशों का विकास भी हो। अनेक प्रकल्प चलते हैं। 5 मई को भारत दक्षिण-एशिया satellite launch करेगा। इस satellite की क्षमता तथा इससे जुड़ी सुविधायें दक्षिण-एशिया के आर्थिक तथा developmental प्राथमिकताओं को पूरा करने में काफ़ी मदद करेगी। चाहे natural resources mapping करने की बात हो, tele-medicine की बात हो, education का क्षेत्र हो या अधिक गहरी IT connectivity हो, people to people संपर्क का प्रयास हो। South Asia का यह उपग्रह हमारे पूरे क्षेत्र को आगे बढ़ने में पूरा सहायक होगा। पूरे दक्षिण-एशिया के साथ सहयोगबढ़ाने के लिये भारत का एक महत्वपूर्ण कदम है - अनमोल नज़राना है। दक्षिण-एशिया के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का ये एक उपयुक्त उदाहरण है। दक्षिण एशियाई देशों जो कि South Asia Satellite से जुड़े हैं मैं उन सबका इस महत्वपूर्ण प्रयास के लिये स्वागत करता हूँ, शुभकामनायें देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो गर्मी बहुत है, अपनों को भी संभालिये, अपने को भी संभालिये। बहुत-बहुत शुभकामनायें। धन्यवाद।

अतुल तिवारी / हिमांशु सिंह

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

28-मई-2017 11:55 IST

आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार, इस वर्ष की गर्मी शायद ही हम भूल पाएँगे। लेकिन वर्षा की प्रतीक्षा हो रही है। आज जब मैं आप से बात कर रहा हूँ तब, रमजान का पवित्र महीना प्रारम्भ हो चुका है। रमजान के पवित्र महीने के आगमन पर, मैं भारत और विश्व-भर के लोगों को, विशेष करके मुस्लिम समुदाय को, इस पवित्र महीने की हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ। रमजान में prayer, spirituality और charity को काफी महत्व दिया जाता है। हम हिन्दुस्तानी बहुत ही भाग्यवान हैं कि हमारे पूर्वजों ने ऐसी परंपरा निर्माण की कि आज भारत इस बात का गर्व कर सकता है, हम सवा-सौ करोड़ देशवासी इस बात का गर्व कर सकते हैं कि दुनिया के सभी सम्प्रदाय भारत में मौजूद हैं। ये ऐसा देश है जो ईश्वर में विश्वास करने वाले लोग भी और ईश्वर को नकारने वाले लोग भी, मूर्ति पूजा करने वाले भी और मूर्ति पूजा का विरोध करने वाले भी, हर प्रकार की विचारधारा, हर प्रकार की पूजा पद्धति, हर प्रकार की परंपरा, हम लोगों ने एक साथ जीने की कला आत्मसात की है और आखिरकार धर्म हो, सम्प्रदाय हो, विचारधारा हो, परंपरा हो, हमें यही सन्देश देते हैं - शान्ति, एकता और सद्भावना का। ये रमजान का पवित्र महीना शान्ति, एकता और सद्भावना के इस मार्ग को आगे बढ़ाने में ज़रूर सहायक होगा। मैं फिर एक बार सबको शुभकामनायें देता हूँ। पिछली बार जब मैं 'मन की बात' कर रहा था। तो मैंने एक शब्द प्रयोग किया था कि और खास करके नौजवानों को कहा था, कुछ नया करें, comfort zone से बाहर निकलिए, नये अनुभव लें, और यही तो उम्र होती है जिन्दगी को इस प्रकार से जीना, थोड़ा risk लेना, कठिनाइयों को न्योता देना। मुझे खुशी हो रही है कि बहुत सारे लोगों ने मुझे feedback दिया। व्यक्तिगत रूप से मुझे अपनी बात बताने का उत्साह सबने दिखाया। मैं हर चीज़ को तो पढ़ नहीं पाया हूँ, हर किसी के सन्देश को सुन भी नहीं पाया हूँ, इतनी ढेर सारी चीज़ें आयी हैं। लेकिन, मैंने सरसरी नज़र से भी जो देखा - किसी ने संगीत सीखने का प्रयास किया है, कोई नये वाद्य पर हाथ आजमा रहा है, कुछ लोग YouTube का उपयोग करते हुए नयी चीज़ें सीखने का प्रयास कर रहे हैं, नयी भाषा सीखने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ लोग cooking सीख रहे हैं, कुछ नृत्य सीख रहे हैं, कुछ drama सीख रहे हैं, कुछ लोगों ने तो लिखा है कि हमने अब कविताएँ लिखनी शुरू की हैं। प्रकृति को जानना, जीना, समझना उस दिशा में प्रयास कर रहे हैं। मुझे बहुत ही आनंद हुआ और मैं एक फ़ोन कॉल तो आपको भी सुनाना चाहूँगा।

“दीक्षा कात्याल बोल रही हूँ। मेरी पढ़ने की आदत लगभग छूट ही चुकी थी, इसलिए इन छुट्टियों में मैंने पढ़ने की ठानी। जब मैंने स्वतंत्रता संग्राम के बारे में पढ़ना शुरू किया, तब मैंने अनुभव किया कि भारत को आज़ादी दिलाने में कितना संघर्ष करना पड़ा है, कितना बलिदान देना पड़ा है, कितने स्वतंत्रता सेनानियों ने जेलों में वर्षों बिताए। मैं भगत सिंह जिन्होंने बहुत कम उम्र में बहुत कुछ हासिल किया उससे काफी प्रेरित हुई हूँ, इसलिए मैं आपसे अनुरोध कर रही हूँ कि इस विषय में आप आज की पीढ़ी को कुछ सन्देश दें।”

मुझे खुशी है कि युवा पीढ़ी हमारे इतिहास को, हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को, इस देश के लिए बलिदान देने वाले लोगों को, उनके विषय में जानने में रूचि रख रही है। अनगिनत महापुरुष, जिन्होंने जवानी जेलों में खपा दी, कई नौजवान फांसी के तख़्त पर चढ़ गए। क्या कुछ नहीं झेला और तभी तो आज हम आज़ाद हिन्दुस्तान में सांस ले रहे हैं। एक बात हमने देखी होगी कि आज़ादी के आन्दोलन में जिन-जिन महापुरुषों ने जेलों में समय बिताया, उन्होंने लेखन का, अध्ययन का, बहुत बड़ा काम किया और उनकी लेखनी ने भी भारत की आज़ादी को बल दिया।

बहुत वर्षों पहले मैं अंडमान निकोबार गया था। सेलुलर जेल देखने गया था। आज वीर सावरकर जी की जन्म जयन्ती है। वीर सावरकर जी ने जेल में 'माज़ी जन्मठे' किताब लिखी थी। कविताएँ लिखते थे, दीवारों पर लिखते थे। छोटी सी कोठरी में उनको बंद कर दिया गया था। आज़ादी के दीवानों ने कैसी यातनाएँ झेली होंगी। जब सावरकर जी की 'माज़ी जन्मठे' एक किताब मैंने पढ़ी और उसी से मुझे सेलुलर जेल देखने की प्रेरणा मिली थी। वहाँ एक light and sound show भी कार्यक्रम चलता है, वो बड़ा ही प्रेरक है। हिन्दुस्तान का कोई राज्य ऐसा नहीं था, हिन्दुस्तान की कोई भाषा बोलने वाला नहीं होगा जो आज़ादी के लिए काले पानी की सजा भुगतता हुआ अंडमान की जेल में, इस सेलुलर जेल में, अपनी जवानी न खपाई हो। हर भाषा बोलने वाले, हर प्रांत के, हर पीढ़ी के लोगों ने यातनाएँ झेली थीं।

आज वीर सावरकर जी की जन्म जयन्ती है। मैं देश की युवा पीढ़ी को जरूर कहूँगा कि हमें जो आज़ादी मिली है उसकी कैसी यातना लोगों ने झेली थी, कितने कष्ट झेले थे, अगर हम सेलुलर जेल जाकर के देखें, काला पानी क्यों कहा जाता था! जाने के बाद ही पता चलता है। आप भी कभी मौका मिले तो जरूर, एक प्रकार से हमारी आज़ादी की जंग के तीर्थ क्षेत्र हैं, जरूर जाना चाहिए।

मेरे प्यारे देशवासियों, 5 जून, महीने का पहला सोमवार है। वैसे तो सब कुछ सामान्य है, लेकिन 5 जून, एक विशेष दिवस है क्योंकि 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में इसे मनाया जाता है और इस वर्ष UN ने इसका theme रखा है - 'Connecting People to Nature', दूसरे शब्दों में कहें तो back to basics और nature से connect का मतलब क्या है? मेरी दृष्टि से मतलब है - खुद से जुड़ना, अपने आप से connect होना। Nature से connect का मतलब है - Better planet को nurture करना और इस बात को महात्मा गाँधी से ज़्यादा अच्छे से कौन बता सकता है। महात्मा गाँधी जी कई बार कहते थे - "One must care about a world one will not see" अर्थात् हम जो दुनिया नहीं देखेंगे हमारा कर्तव्य है कि हम उसकी भी चिंता करें, हम उसकी भी care करें और प्रकृति की एक ताकत होती है, आपने भी अनुभव किया होगा कि बहुत थक करके आए हो और एक गिलास भर पानी अगर मुँह पर छिड़क दें, तो कैसी freshness आ जाती है। बहुत थक करके आए हो, कमरे की खिड़कियाँ खोल दें, दरवाज़ा खोल दें, ताज़ा हवा की सांस ले लें - एक नयी चेतना आती है। जिन पंच महाभूतों से शरीर बना हुआ है, जब उन पंच महाभूतों से संपर्क आता है, तो अपने आप हमारे शरीर में एक नयी चेतना प्रकट होती है, एक नयी ऊर्जा प्रकट होती है। ये हम सबने अनुभव किया है, लेकिन हम उसको register नहीं करते हैं, हम उसको एक धागे में, एक सूत्र में जोड़ते नहीं हैं। इसके बाद आप जरूर देखना कि आपको जब-जब प्राकृतिक अवस्था से संपर्क आता होगा, आपके अन्दर एक नयी चेतना उभरती होगी और इसलिए 5 जून का प्रकृति के साथ जुड़ने का वैश्विक अभियान, हमारा स्वयं का भी अभियान बनना चाहिये और पर्यावरण की रक्षा हमारे पूर्वजों ने की उसका कुछ लाभ हमें मिल रहा है। अगर हम रक्षा करेंगे तो हमारी आने वाली पीढ़ियों को लाभ मिलेगा। वेदों में पृथ्वी और पर्यावरण को शक्ति का मूल माना गया है। हमारे वेदों में इसका वर्णन मिलता है। और अथर्ववेद तो पूरी तरह, एक प्रकार से पर्यावरण का सबसे बड़ा दिशा-निर्देशक ग्रंथ है और हजारों साल पहले लिखा गया है। हमारे यहाँ कहा गया है - 'माता भूमि: पुत्रो अहम् पृथिव्याः'। वेदों में कहा है हम में जो purity है वह हमारी पृथ्वी के कारण है। धरती हमारी माता है और हम उनके पुत्र हैं। अगर हम भगवान् बुद्ध को याद करें तो एक बात जरूर उजागर होती है कि महात्मा बुद्ध का जन्म, उन्हें ज्ञान की प्राप्ति और उनका महा-परिनिर्वाण, तीनों पेड़ के नीचे हुआ था। हमारे देश में भी अनेक ऐसे त्योंहार, अनेक ऐसी पूजा-पद्धति, पढ़े-लिखे लोग हों, अनपढ़ हो, शहरी हो, ग्रामीण हो, आदिवासी समाज हो, प्रकृति की पूजा, प्रकृति के प्रति प्रेम एक सहज समाज जीवन का हिस्सा है। लेकिन हमने उसे आधुनिक शब्दों में आधुनिक तर्कों के साथ संजोने की जरूरत है।

इन दिनों मुझे राज्यों से खबरें आती रहती हैं। करीब-करीब सभी राज्यों में वर्षा आते ही वृक्षारोपण का एक बहुत बड़ा अभियान चलता है। करोड़ों की तादात में वृक्ष बोये जाते हैं। स्कूल के बच्चों को भी जोड़ा जाता है, समाजसेवी संगठन जुड़ते हैं, NGOs जुड़ते हैं, सरकार स्वयं initiative लेती है। हम भी इस बार इस वर्षा ऋतु में वृक्षारोपण के इस काम को बढ़ावा दें, योगदान दें।

मेरे प्यारे देशवासियों, 21 जून, अब दुनिया के लिये 21 जून जाना-पहचाना दिन बन गया है। विश्व योग दिवस के रूप में पूरा विश्व इसे मनाता है। बहुत कम समय में 21 जून का ये विश्व योग दिवस हर कोने में फैल चुका है, लोगों को जोड़ रहा है। एक तरफ विश्व में बिखराव की अनेक ताकतें अपना विकृत चेहरा दिखा रही हैं, ऐसे समय में विश्व को भारत की एक बहुत बड़ी देन है। योग के द्वारा विश्व को एक सूत्र में हम जोड़ चुके हैं। जैसे योग, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को जोड़ता है, वैसे आज योग विश्व को भी जोड़ रहा है। आज जीवन-शैली के कारण, आपा-धापी के कारण, बढ़ती हुई जिम्मेदारियों के कारण, तनाव से मुक्त जीवन जीना मुश्किल होता जा रहा है। और ये बात देखने में आई छोटी-छोटी आयु में भी, ये स्थिति पहुँच चुकी है। अनाप-शनाप दवाईयाँ लेते जाना और दिन गुज़ारते जाना, ऐसी घड़ी में तनाव-मुक्त जीवन जीने के लिए योग की भूमिका अहम है। योग wellness और fitness दोनों की guarantee है। योग ये सिर्फ व्यायाम नहीं है। तन से, मन से, शरीर से, विचारों से, आचार से स्वस्थता की एक अंतर्गता कैसे चले - उस अंतर्गता को अनुभव करना है तो योग के माध्यम से संभव है। अभी दो दिन पहले ही मैंने योग दिवस को लेकर के विश्व की सभी सरकारों को, सभी नेताओं को चिट्ठी लिखी है।

पिछले वर्ष मैंने योग से सम्बंधित कुछ स्पर्धाओं की घोषणा की है, कुछ इनामों की घोषणा की है। धीरे-धीरे उस दिशा में काम आगे बढ़ेगा। मुझे एक सुझाव आया है और ये मौलिक सुझाव देने वालों का मैं अभिनंदन करता हूँ। बड़ा ही interesting सुझाव दिया है। उन्होंने कहा कि ये तीसरा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस है और मुझे कहा एक आप अपील करें कि इस बार तीसरा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर एक ही परिवार की तीन पीढ़ी एक साथ योग करें। दादा-दादी हो या नाना-नानी हो, माता-पिता हो, बेटे-बेटी हो, तीनों पीढ़ी एक साथ योग करें और उसकी तस्वीर upload करें। कल, आज और कल एक ऐसा सुखद संयोग होगा कि योग को एक नया आयाम मिलेगा। मैं इस सुझाव के लिए धन्यवाद करता हूँ और मुझे भी

लगता है कि जैसे हम लोगों ने selfie with daughter का अभियान चलाया था और एक बड़ा ही रोचक अनुभव आया था। ये तीन पीढ़ी की तस्वीर योगा करती हुई तस्वीर जरूर देश और दुनिया के लिए कौतुक जगाएगी। आप जरूर NarendraModiApp पर MyGov पर तीन पीढ़ी जहाँ-जहाँ योग करती हो, तीनों पीढ़ी के लोग एक साथ मुझे तस्वीर भेजें। कल, आज और कल की ये तस्वीर होगी। जो सुहाने कल की guarantee होगी। मैं आप सबको निमंत्रित करता हूँ। अभी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिये करीब तीन सप्ताह हमारे पास हैं। आज ही practice में लग जाइए। मैं 01 जून से twitter पर daily योग के संबंध में कुछ-न-कुछ post करूँगा और लगातार 21 जून तक post करता रहूँगा, आप से share करूँगा। आप भी तीन सप्ताह लगातार योग के विषय को प्रचारित करिए, प्रसारित करिए, लोगों को जोड़िए। एक प्रकार से ये preventive health care का आंदोलन ही है। मैं निमंत्रित करता हूँ आप सब को इसमें जुड़ने के लिए।

जब से आप लोगों ने मुझे प्रधान सेवक के रूप में कार्य की जिम्मेदारी दी है और लाल किले पर से मैंने, जब पहली 15 अगस्त थी मेरी, मुझे पहली बार बोलने का अवसर मिला था। स्वच्छता के संबंध में मैंने बात कही थी। तब से लेकर के आज तक हिंदुस्तान के अलग-अलग भागों में मेरा प्रवास होता है। और मैंने देखा है कि कुछ लोग बारीकी से मोदी क्या करते हैं? मोदी कहाँ जाते हैं? मोदी ने क्या-क्या किया? बराबर follow करते हैं। क्योंकि मुझे एक बड़ा interesting phone call आया और मैंने भी शायद इस प्रकार से चीज़ को सोचा नहीं था। लेकिन मैं इस बात को उन्होंने जो पकड़ा इसके लिए मैं आभारी हूँ। ये phone call से आपको भी ध्यान में आएगा।

“प्रणाम मोदी जी, मैं नैना मुंबई से। मोदी जी T.V. पर और Social Media में आज कल मैं हमेशा देखती हूँ आप जहाँ भी जाते हैं वहाँ के लोग साफ़-सफाई पर विशेष ध्यान देते हैं। मुंबई हो या सूरत आपके आह्वान पर लोगों ने सामूहिक रूप से स्वच्छता को एक mission के रूप में अपनाया है। बड़े तो बड़े, बच्चों में भी स्वच्छता को लेकर जागरूकता आई है। कई बार उन्हें सड़क पर बड़ों को गंदगी फैलाते हुए, टोकते हुए देखा है। काशी के घाटों से जो आपने स्वच्छता की एक मुहिम शुरू की थी वो आपकी प्रेरणा से एक आंदोलन का रूप ले चुकी है।

आपकी बात सही है कि मैं जहाँ-जहाँ जाता हूँ, वहाँ सरकारी मशीनरी तो सफाई का काम करती है लेकिन इन दिनों समाज में भी एक सफाई का उत्सव बन जाता है। मेरे जाने के पाँच दिन पहले, सात दिन पहले, दस दिन पहले, काफी मात्रा में सफाई के कार्यक्रम होते हैं। मीडिया भी उसको बड़ा प्राधान्य देता है। अभी मैं कुछ दिन पहले कच्छ गया था गुजरात में। बहुत बड़ा सफाई अभियान चला वहाँ। मैंने भी इसको जोड़ कर के नहीं देखा था। लेकिन जब ये phone call आया तो मैं भी सोचने लगा और मैंने देखा कि हाँ ये बात सही है। आप कल्पना कर सकते हैं मुझे कितना आनंद होता है इस बात को जानकर के और देश भी इन चीज़ों को कैसे बढ़िया ढंग से notice कर रहा है। मेरे लिए इससे बढ़कर के क्या खुशी होगी कि मेरी यात्रा से भी स्वच्छता को जोड़ दिया गया है। प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए बाकी जो तैयारियाँ होने की आदत होगी-होगी, लेकिन स्वच्छता प्रमुख बात होगी। ये अपने आप में स्वच्छता-प्रेमी किसी को भी आनंदायक है, प्रेरक है। मैं इस स्वच्छता के काम को बल देने वाले सभी को बधाई देता हूँ। किसी ने मुझे एक सुझाव दिया। वैसे वो बड़ा मज़ाकिया सुझाव है। मैं नहीं जानता हूँ, मैं इसको कर पाऊँगा कि नहीं कर पाऊँगा। मोदी जी अब आप प्रवास तय करते समय जो भी प्रवास माँगे, उनको कहो कि भई अगर मुझे बुलाना है तो स्वच्छता का स्तर कैसा होगा? कितना टन कूड़ा-कचरा आप मुझे भेंट करोगे? उसके आधार पर मैं अपना प्रवास तय करूँ। Idea बहुत अच्छा है लेकिन मुझे सोचना पड़ेगा। लेकिन ये बात सही है कि ये movement तो बनना चाहिए कि और चीज़ें भेंट-सौगात में देने की बजाय अच्छा ही होगा कि हम भेंट-सौगात में इतना टन कूड़ा-कचरा सफाई कर के दे देंगे। कितने लोगों को हम बीमार होने से बचाएँगे। कितना बड़ा मानवता का काम होगा। एक बात मैं जरूर कहना चाहूँगा कि ये जो कूड़ा-कचरा है, इसको हम waste न मानें, वो wealth है, एक resource है। इसे सिर्फ garbage के रूप में न देखें। एक बार इस कूड़े-कचरे को भी हम wealth मानना शुरू करेंगे तो waste management के कई नए-नए तरीके हमारे सामने आयेंगे। Start-Up में जुड़े हुए नौजवान भी नई-नई योजनाएँ लेकर के आयेंगे। नए-नए equipment लेकर कर के आएँ। भारत सरकार ने राज्य सरकारों की मदद के साथ शहरों के जनप्रतिनिधियों की मदद के द्वारा waste management का एक बड़ा महत्वपूर्ण अभियान छेड़ना तय किया है। 5 जून, विश्व पर्यावरण दिवस पर देश के करीब 4 हजार नगरों में solid waste, liquid waste इसको collect करने के लिए उस प्रकार के साधन उपलब्ध होने वाले हैं। दो प्रकार के कूड़ेदान उपलब्ध होंगे, एक green colour का, दूसरा blue colour का। दो प्रकार के waste निकलते हैं - एक liquid waste होता है और एक dry waste होता है। अगर हम discipline follow करें, इन चार हजार नगरों में, ये जो कूड़ेदान रखे जाने वाले हैं। सूखा कचरा नीले कूड़ेदान में डालें और गीला कचरा हरे कूड़ेदान में डालें। जैसे kitchen का जो waste निकलता है, साग-सब्जियों के छिलके हों, बचा हुआ भोजन हो, अंडे के छिलके हों, पेड़-पौधों के पत्ते आदि हों ये सारे गीले waste हैं और उसको हरे कूड़ेदान में डालें। ये सारी चीज़ें ऐसे हैं जो खेत में काम आती हैं। अगर खेत का रंग हरा, इतना याद रखोगे तो हरे कूड़ेदान में क्या डालना है वो याद रह जाएगा। और दूसरा कूड़ा-कचरा ये है जैसे रद्दी-कागज है, गत्ता है, लोहा है, कांच है, कपड़ा है, plastic है, polythene है, टूटे हुए डिब्बे हैं, रबड़ है, धातुएँ हैं, कई चीज़ें होंगी - ये सारी चीज़ें एक प्रकार से सूखा कचरा है। जिसको machine में डाल करके recycle करना पड़ता है। वैसे वो कभी उपयोग नहीं आ सकता। उसको नीले कूड़ेदान में डालना है। मुझे विश्वास है कि हम एक culture develop करेंगे। स्वच्छता की ओर हर बार नये कदम हमें उठाते ही जाना है। तब जा करके हम गाँधी जी

जिन सपनों को देखते थे, वो स्वच्छता वाला सपना, हम पूरा कर पाएँगे। आज मुझे गर्व के साथ एक बात का जिक्र करना है - एक इंसान भी अगर मन में ठान ले तो कितना बड़ा जन आन्दोलन खड़ा कर सकता है। स्वच्छता का काम ऐसा ही है। पिछले दिनों आपके कान पर एक खबर आई होगी। मुंबई में गंदा माने जाने वाला वर्सोवा beach आज एक साफ़-सुथरा, सुंदर वर्सोवा beach बन गया। ये अचानक नहीं हुआ है। करीब 80-90 सप्ताह तक नागरिकों ने लगातार मेहनत करके ये वर्सोवा beach का कायापलट कर दिया। हजारों टन कूड़ा-कचरा निकाला गया और तब जा करके आज वर्सोवा beach साफ़ और सुंदर बन गया। और इसकी सारी जिम्मेवारी Versova Residence Volunteer (VRV) उन्होंने संभाली थी। एक सज्जन श्रीमान अफरोज़ शाह अक्टूबर 2015 से, वे जी-जान से इसमें जुट गए। धीरे-धीरे ये कारवाँ बढ़ता चला गया। जन-आन्दोलन में बदल गया और इस काम के लिए श्रीमान अफरोज़ शाह को United Nations Environment Programme (UNEP), उन्होंने बहुत बड़ा award दिया। Champions of The Earth Award ये पाने वाले वो पहले भारतीय बने। मैं श्रीमान अफरोज़ शाह को बधाई देता हूँ, इस आंदोलन को बधाई देता हूँ। और जिस प्रकार से लोक-संग्रह की तरह उन्होंने सारे इलाके के लोगों को जोड़ा और जन-आंदोलन में परिवर्तित किया। ये अपने आप में एक प्रेरक उदाहरण है।

भाइयो और बहनों, आज मैं एक और खुशी भी आप से बताना चाहता हूँ। 'स्वच्छ भारत अभियान' के सन्दर्भ में जम्मू-कश्मीर का 'रियासी ब्लॉक'। मुझे बताया गया कि रियासी ब्लॉक open defecation free खुले में शौच से मुक्त हुआ है। मैं रियासी ब्लॉक के सभी नागरिकों को, वहाँ के प्रशासकों को जम्मू-कश्मीर ने एक उत्तम उदाहरण दिया है। इसके लिए मैं सबको बधाई देता हूँ और मुझे बताया गया इस पूरी movement को सबसे ज्यादा lead किया है जम्मू-कश्मीर के उस इलाके की महिलाओं ने, उन्होंने जागरूकता फैलाने के लिए खुद ने मशाल यात्राएँ निकाली। घर-घर, गली-गली जाकर के लोगों को उन्होंने प्रेरित किया। उन माँ-बहनों को भी मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूँ, वहाँ बैठे हुए प्रशासकों का भी अभिनन्दन करता हूँ कि जिन्होंने जम्मू-कश्मीर की धरती पर एक ब्लॉक को open defecation free बनाकर के एक उत्तम शुरुआत की है।

मेरे प्यारे देशवासियों, पिछले 15 दिन, महीने से, लगातार अखबार हो, टी.वी. चैनल हो, social media हो, वर्तमान सरकार के 3 वर्ष का लेखा-जोखा चल रहा है। 3 साल पूर्व आपने मुझे प्रधान सेवक का दायित्व दिया था। ढेर सारे survey हुए हैं, ढेर सारे opinion poll आए हैं। मैं इस सारी प्रक्रिया को बहुत ही healthy signs के रूप में देखता हूँ। हर कसौटी पर इस 3 साल के कार्यकाल को कसा गया है। समाज के हर तबके के लोगों ने उसका analysis किया है और लोकतंत्र में एक उत्तम प्रक्रिया है और मेरा स्पष्ट मानना है कि लोकतंत्र में सरकारों को जवाबदेह होना चाहिए, जनता-जनार्दन को अपने काम का हिसाब देना चाहिए। मैं उन सब लोगों का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने समय निकाल करके हमारे काम की गहराई से विवेचना की, कहीं सराहना हुई, कहीं समर्थन आया, कहीं कमियाँ निकाली गई, मैं इन सब बातों का बहुत महत्व समझता हूँ। मैं उन लोगों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने critical और important feedback दिये हैं। जो त्रुटियाँ होती हैं, कमियाँ होती हैं, वो भी जब उजागर होती हैं तो उससे भी सुधार करने का अवसर मिलता है। बात अच्छी हो, कम अच्छी हो, बुरी हो, जो भी हो, उसमें से ही सीखना है और उसी के सहारे आगे बढ़ना है। constructive criticism लोकतंत्र को बल देता है। एक जागरूक राष्ट्र के लिए, एक चैतन्य पूर्ण राष्ट्र के लिए, ये मंथन बहुत ही आवश्यक होता है।

मेरे प्यारे देशवासियों, मैं भी आप की तरह एक सामान्य नागरिक हूँ और एक सामान्य नागरिक के नाते अच्छी-बुरी हर चीज़ का प्रभाव मुझ पर भी वैसा ही होता है, जैसा किसी भी सामान्य नागरिक के मन पर होता है। 'मन की बात' कोई उसको एक तरफ़ा संवाद के रूप में देखता है, कुछ लोग उसको राजनीतिक दृष्टि से टीका-टिप्पणी भी करते हैं। लेकिन इतने लम्बे तज़ुर्बे के बाद मैं अनुभव करता हूँ, मैंने जब, 'मन की बात' शुरू की तो मैंने भी सोचा नहीं था। 'मन की बात' इस कार्यक्रम ने, मुझे हिन्दुस्तान के हर परिवार का एक सदस्य बना दिया है। ऐसा लगता है जैसे मैं परिवार के बीच में ही घर में बैठ करके घर की बातें करता हूँ और ऐसे सैकड़ों परिवार हैं, जिन्होंने मुझे ये बातें लिख करके भी भेजी हैं और जैसा मैंने कहा कि एक सामान्य मानव के रूप में, मेरे मन में जो प्रभाव होता है, फिर दो दिन पूर्व राष्ट्रपति भवन में आदरणीय राष्ट्रपति जी, आदरणीय उपराष्ट्रपति जी, आदरणीय स्पीकर महोदया सबने 'मन की बात' की, एक Analytical Book का समारोह किया। एक व्यक्ति के नाते, सामान्य नागरिक के नाते, ये घटना मुझे बहुत ही उत्साह बढ़ाने वाली है। मैं राष्ट्रपति जी का, उपराष्ट्रपति जी का, स्पीकर महोदया का आभारी हूँ कि उन्होंने समय निकाल करके, इतने वरिष्ठ पद पर बैठे हुए लोगों ने 'मन की बात' को ये अहमियत दी। एक प्रकार से अपने आप में 'मन की बात' को एक नया आयाम दे दिया। हमारे कुछ मित्र इस 'मन की बात' की किताब पर जब काम कर रहे थे, तो मेरे से भी कभी चर्चा की थी और कुछ समय पहले जब इसकी बात चर्चा में आई तो मैं हैरान था। अबु धाबी में रहने वाले एक artist अक्रबर साहब के नाम से जाने जाते हैं। अक्रबर साहब ने सामने से प्रस्ताव रखा कि 'मन की बात' में जिन विषयों पर चर्चा हुई है, वो अपनी कला के माध्यम से उसका sketch तैयार करके देना चाहते हैं और एक भी रूपया लिये बिना, अपना प्यार जताने के लिए अक्रबर साहब ने मन की बातों को कला का रूप दे दिया। मैं अक्रबर साहब का आभारी हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, अगली बार जब मिलेंगे तब तक तो देश के हर कोने में बारिश आ चुकी होगी, मौसम बदल गया होगा, परीक्षाओं के परिणाम आ चुके होंगे, नये सिरे से विद्या-जीवन का आरंभ होने वाला होगा, और बरसात आते ही एक

नई खुशनुमा, एक नई महक, एक नई सुगंध। आइए हम सब इस माहौल में प्रकृति के प्रति प्यार करते हुए आगे बढ़ें। मेरी आप सब को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं। धन्यवाद।

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-जून-2017 11:33 IST

25 जून 2017 को आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार! मौसम बदल रहा है। इस बार गर्मी भी बहुत रही। लेकिन अच्छा हुआ कि वर्षा ऋतु समय पर अपने नक्शेकदम पर आगे बढ़ रही है। देश के कई भागों में झमाझम बारिश से मौसम सुहाना हो गया है। बारिश के बाद ठण्डी हवाओं में पिछले दिनों की गर्मी से राहत का अनुभव रहा है। और हम सबने देखा है कि जीवन में कितनी ही आपाधापी हो, कितना ही तनाव हो, व्यक्तिगत जीवन हो, सार्वजनिक जीवन हो, बारिश का आगमन ही हमारी मनःस्थिति को भी बदल देता है।

आज भगवान जगन्नाथ जी की रथ-यात्रा देश के कई भागों में बहुत ही श्रद्धा और उल्लासपूर्वक देशवासी मनाते हैं। अब तो विश्व के भी कुछ भागों में भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा का उत्सव सम्पन्न होता है। और भगवान जगन्नाथ जी के साथ देश का गरीब जुड़ा हुआ है। जिन लोगों ने डॉ० बाबा साहेब आम्बेडकर का अध्ययन किया होगा, उन्होंने देखा होगा कि भगवान जगन्नाथ जी का मन्दिर और उसकी परंपराओं की वो बड़ी तारीफ करते थे, क्योंकि उसमें सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता अंतर्निहित थे। भगवान जगन्नाथ गरीबों के देवता हैं। और बहुत कम लोगों को पता होगा, अंग्रेजी भाषा में एक शब्द है juggernaut और उसका मतलब होता है, ऐसा भव्य रथ जिसे कोई रोक नहीं सकता। और इस juggernaut के dictionary meaning में भी ये पाया जाता है कि जगन्नाथ के रथ के साथ में से ही ये शब्द का उद्भव हुआ है। और इसलिए हम समझ सकते हैं कि दुनिया ने भी जगन्नाथ की इस यात्रा को अपने-अपने तरीके से किस प्रकार से माहात्म्य स्वीकार किया है। भगवान जगन्नाथ जी की यात्रा के अवसर पर मैं सभी देशवासियों को शुभकामनाएं देता हूँ और भगवान जगन्नाथ जी के श्रीचरणों में प्रणाम भी करता हूँ।

भारत की विविधता ये इसकी विशेषता भी है, भारत की विविधता ये भारत की शक्ति भी है। रमजान का पवित्र महीना सब दूर इबादत में पवित्र भाव के साथ मनाया। अब ईद का त्योहार है। ईद-उल-फ़ितर के इस अवसर पर मेरी तरफ से सबको ईद की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। रमजान महीना पुण्य दान का महीना है, खुशियों को बाँटने का महीना है और जितनी खुशियाँ बाँटते हैं, उतनी खुशियाँ बढ़ती हैं। आइए, हम सब मिलकर के इन पवित्र उत्सवों से प्रेरणा लेकर के खुशियों के खज़ानों को बाँटते चलें, देश को आगे बढ़ाते चलें।

रमजान के इस पवित्र महीने में उत्तर प्रदेश के बिजनौर के मुबारकपुर गाँव की एक बड़ी प्रेरक घटना मेरे सामने आयी। करीब साढ़े तीन हजार हमारे मुसलमान भाई-बहनों के परिवार वहाँ उस छोटे से गाँव में बसते हैं, एक प्रकार से ज्यादा आबादी हमारे मुस्लिम परिवार के भाइयों-बहनों की है। इस रमजान के अन्दर गाँववालों ने मिलकर के शौचालय बनाने का निर्णय लिया। और इस व्यक्तिगत शौचालय के अन्दर सरकार की तरफ से भी सहायता मिलती है और उस सहायता की राशि करीब 17 लाख रुपये उनको दी गई। आपको जानकर के सुखद आश्चर्य भी होगा, आनंद होगा। रमजान के इस पवित्र महीने में सभी मुसलमान भाइयों-बहनों ने सरकार को ये 17 लाख वापस लौटा दिए। और ये कहा कि हम हमारा शौचालय, हमारे परिश्रम से, हमारे पैसों से बनाएँगे। ये 17 लाख रुपये आप गाँव की अन्य सुविधाओं के लिए खर्च कीजिए। मैं मुबारकपुर के सभी ग्रामजनों को रमजान के इस पवित्र अवसर को समाज की भलाई के अवसर में पलटने के लिए बधाई देता हूँ। उनकी एक-एक चीज़ भी बड़ी ही प्रेरक है। और सबसे बड़ी बात है, उन्होंने मुबारकपुर को खुले में शौच से मुक्त कर दिया। हम जानते हैं कि हमारे देश में तीन प्रदेश ऐसे हैं सिक्किम, हिमाचल और केरल, वो पहले ही खुले में शौच से मुक्त घोषित हो चुके हैं। इस सप्ताह उत्तराखण्ड और हरियाणा भी ODF घोषित हुए। मैं इन पाँच राज्यों के प्रशासन को, शासन को और जनता-जनार्दन को विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ इस कार्य को परिपूर्ण करने के लिये।

हम भली-भाँति जानते हैं कि व्यक्ति के जीवन में, समाज के जीवन में कुछ भी अच्छा करना है, तो बड़ी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। अगर हमारी handwriting खराब है, अगर उसको ठीक करना है, तो लंबे अरसे तक बहुत जागरूक रहकर के प्रयास करना पड़ता है। तब जाकर के शरीर की, मन की आदत बदलती है। स्वच्छता का भी विषय ऐसा ही है। ऐसी बुरी आदतें हमारे स्वभाव का हिस्सा बन गई हैं। हमारी आदतों का हिस्सा बन गई हैं। इससे मुक्ति पाने के लिये अविरत रूप से हमें प्रयास करना ही पड़ेगा। हर किसी का ध्यान आकर्षित करना ही पड़ेगा। अच्छी प्रेरक घटनाओं का बार-बार स्मरण भी

करना पड़ेगा। और मुझे खुशी है कि आज स्वच्छता ये सरकारी कार्यक्रम नहीं रहा है। ये जन समाज का, जन-सामान्य का एक आन्दोलन बनता चला जा रहा है। और शासन में बैठे हुए लोग भी जब जनभागीदारी से इस काम को आगे बढ़ाते हैं, तो कितनी ताकत बढ़ जाती है।

पिछले दिनों एक बहुत ही उत्तम घटना मेरे ध्यान में आई, जो मैं आपके सामने जरूर कहना चाहूँगा। ये घटना है आन्ध्र प्रदेश के विजयनगरम ज़िले की। वहाँ के प्रशासन ने जनभागीदारी से एक बड़ा काम हाथ में लिया। 10 मार्च सुबह 6 बजे से लेकर के 14 मार्च सुबह 10 बजे तक। 100 घंटे का non stop अभियान। और लक्ष्य क्या था ? एक सौ घंटे में 71 ग्राम पंचायतों में दस हजार घरेलू शौचालय बनाना। और मेरे प्यारे देशवासियों, आप जानकर के खुश हो जाएँगे कि जनता-जनार्दन ने और शासन ने मिलकर के 100 घंटे में दस हजार शौचालय बनाने का काम सफलतापूर्वक पूर्ण कर दिया। 71 गाँव ODF हो गए। मैं शासन में बैठे हुए लोगों को, सरकारी अधिकारियों को और विजयनगरम ज़िले के उन गाँव के नागरिकों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ कि आपने परिश्रम की पराकाष्ठा करते हुए बड़ा प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इन दिनों 'मन की बात' में लगातार मुझे जनता-जनार्दन की तरफ से सुझाव आते रहते हैं। NarendraModiApp पर आते रहते हैं, MyGov.in पर आते हैं, चिट्ठियों से आते हैं, आकाशवाणी पर आते हैं।

श्रीमान प्रकाश त्रिपाठी ने emergency को याद करते हुए लिखा है कि 25 जून को लोकतंत्र के इतिहास में एक काला कालखंड के रूप में उन्होंने प्रस्तुत किया है। प्रकाश त्रिपाठी जी की लोकतंत्र के प्रति ये जागरूकता सराहनीय है और लोकतंत्र एक व्यवस्था ही है, ऐसा नहीं है, वो एक संस्कार भी है। Eternal Vigilance is the Price of Liberty लोकतंत्र के प्रति नित्य जागरूकता जरूरी होती है और इसलिये लोकतंत्र को आघात करने वाली बातों को भी स्मरण करना होता है और लोकतंत्र की अच्छी बातों की दिशा में आगे बढ़ना होता है। 1975 - 25 जून - वो ऐसी काली रात थी, जो कोई भी लोकतंत्र प्रेमी भुला नहीं सकता है। कोई भारतवासी भुला नहीं सकता है। एक प्रकार से देश को जेलखाने में बदल दिया गया था। विरोधी स्वर को दबोच दिया गया था। जयप्रकाश नारायण सहित देश के गणमान्य नेताओं को जेलों में बंद कर दिया था। न्याय व्यवस्था भी आपातकाल के उस भयावह रूप की छाया से बच नहीं पाई थी। अखबारों को तो पूरी तरह बेकार कर दिया गया था। आज के पत्रकारिता जगत के विद्यार्थी, लोकतंत्र में काम करने वाले लोग, उस काले कालखंड को बार-बार स्मरण करते हुए लोकतंत्र के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहे हैं और करते भी रहने चाहिए। उस समय अटल बिहारी वाजपेयी जी भी जेल में थे। जब आपातकाल को एक वर्ष हो गया, तो अटल जी ने एक कविता लिखी थी और उन्होंने उस समय की मनःस्थिति का वर्णन अपनी कविता में किया है।

झुलसाता जेठ मास,

शरद चाँदनी उदास,

झुलसाता जेठ मास,

शरद चाँदनी उदास,

सिसकी भरते सावन का,

अंतर्घट रीत गया,

एक बरस बीत गया,

एक बरस बीत गया ॥

सीखचों में सिमटा जग,

किंतु विकल प्राण विहग,

सीखचों में सिमटा जग,

किंतु विकल प्राण विहग,
 धरती से अम्बर तक,
 धरती से अम्बर तक,
 गूँज मुक्ति गीत गया,
 एक बरस बीत गया,
 एक बरस बीत गया ॥

पथ निहारते नयन,
 गिनते दिन पल-छिन,
 पथ निहारते नयन,
 गिनते दिन पल-छिन,
 लौट कभी आएगा,
 लौट कभी आएगा,
 मन का जो मीत गया,
 एक बरस बीत गया ॥

लोकतंत्र के प्रेमियों ने बड़ी लड़ाई लड़ी और भारत जैसा देश, इतना बड़ा विशाल देश, जब मौका मिला तो भारत के जन-जन की रग-रग में लोकतंत्र कैसा व्याप्त है, चुनाव के माध्यम से उस ताकत का प्रदर्शन कर दिया। जन-जन की रग-रग में फैला हुआ ये लोकतंत्र का भाव ये हमारी अमर विरासत है। इस विरासत को हमें और सशक्त करना है।

मेरे प्यारे देशवासियों, हर हिंदुस्तानी आज विश्व में सिर ऊँचा कर-कर के गौरव महसूस कर रहा है। 21 जून, 2017 - पूरा विश्व योगमय हो गया। पानी से पर्वत तक लोगों ने सवेरे-सवेरे सूरज की किरणों का स्वागत योग के माध्यम से किया। कौन हिंदुस्तानी होगा, जिसको इस बात का गर्व नहीं होगा। ऐसा नहीं है कि योग पहले होता नहीं था, लेकिन आज जब योग के धागे में बंध गए हैं, योग विश्व को जोड़ने का कारण बन गया है। दुनिया के करीब-करीब सभी देशों ने योग के इस अवसर को अपना अवसर बना दिया। चीन में The Great Wall of China उस पर लोगों ने योग का अभ्यास किया, तो Peru में World Heritage Site माचू पिच्चू पर समुद्र तल से 2400 मीटर ऊपर लोगों ने योग किया। फ्रांस में एफिल टॉवर के साये में लोगों ने योग किया। UAE में Abu Dhabi में 4000 से अधिक लोगों ने सामूहिक योग किया। अफगानिस्तान में, हेरात में India Afghan Friendship Dam सलमा बाँध पर योग कर के भारत की दोस्ती को एक नया आयाम दिया। सिंगापुर जैसे छोटे से स्थान पर 70 स्थानों पर कार्यक्रम हुए और सप्ताह भर का उन्होंने एक अभियान चलाया है। UN ने अंतराष्ट्रीय योग दिवस के 10 Stamps निकाले। उन 10 Stamps को release किया। UN Headquarter में Yoga Session with Yoga Masters का आयोजन किया गया। UN के staff, दुनिया के diplomats हर कोई इसमें शरीक हुआ।

इस बार फिर एक बार योग ने विश्व रिकॉर्ड का भी काम किया। गुजरात में अहमदाबाद में करीब-करीब 55 हजार लोगों ने एक साथ योग करके एक नया विश्व रिकॉर्ड बना दिया। मुझे भी लखनऊ में योग के कार्यक्रम में शरीक होने का अवसर

मिला। लेकिन पहली बार मुझे बारिश में योग करने का सदभाग्य प्राप्त हुआ। हमारे सैनिकों ने जहाँ minus 20, 25, 40 degree temperature होता है उस सियाचिन में भी योग किया। हमारे Armed Forces हों, BSF हो, ITBP हो, CRPF हो, CISF हो, हर कोई अपनी ड्यूटी के साथ-साथ योग को अपना हिस्सा बना दिया है। इस योग दिवस पर मैंने कहा था कि तीन पीढ़ी, क्योंकि ये तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस था, तो मैंने कहा था कि परिवार की तीन पीढ़ियाँ एक साथ योग करते हुए उसकी फोटो share कीजिये। कुछ TV channel ने भी इस बात को आगे बढ़ाया था। मुझे इस पर काफ़ी फोटो मिले, उसमें से कुछ selected photographs NarendraModiApp पर compile करके रखे गए हैं। जिस प्रकार से पूरे विश्व में योग की चर्चा हो रही है, उसमें एक बात अच्छी उभर कर के आ रही है कि योग से आज की जो health conscious society है, वो fitness से अब wellness की ओर जाने की दिशा में कदम रख रही है और उनको लग रहा है कि fitness का महत्व है ही है, लेकिन wellness के लिए योग उत्तम मार्ग है।

(साउंड बाइट #)

“Respected Prime Minister Sir, मैं डॉक्टर अनिल सोनारा अहमदाबाद, गुजरात से बोल रहा हूँ। सर, मेरा एक सवाल है कि recently केरल में हमने आपको सुना था कि different-different places पे जो bouquet as a gift हम देते हैं, उसकी जगह kind of good books हमको देनी चाहिए as a memento। इस चीज़ का आपने शुरुआत गुजरात में अपने कार्यकाल में भी करवाया था, सर, लेकिन अभी in recent days हमें ये ज़्यादा देखने को नहीं मिल रहा है। So can we do something ? हम क्या इस चीज़ के बारे में कुछ कर नहीं सकते, जिससे ये देशव्यापी तौर पे इस चीज़ का implementation हो सके, सर ?”

पिछले दिनों मुझे एक बहुत ही मेरे प्रिय कार्यक्रम में जाने का अवसर मिला। केरल में अच्छा कार्यक्रम चलता है कुछ वर्षों से, P. N. Panicker Foundation के द्वारा चलता है और लोगों को किताबें पढ़ने की आदत बने, लोग किताब पढ़ने की ओर जागरूक हों, इसलिये reading day, reading month celebration किया जाता है। तो मुझे उसके शुभारम्भ में जाने का मौका मिला। और वहाँ मुझे ये भी बताया गया कि हम bouquet नहीं, book देते हैं। मुझे अच्छा लगा। अब मुझे भी जो चीज़ मेरे ध्यान से हट गई थी, उसका पुनः स्मरण हो गया। क्योंकि जब मैं गुजरात में था, तो मैंने सरकार में एक परंपरा बनाई थी कि हम bouquet नहीं देंगे, book देंगे या तो हाथ-रुमाल, handkerchief उसी से स्वागत करेंगे। और खादी का handkerchief, ताकि खादी को भी बढ़ावा मिले। जब तक मैं गुजरात में था, हम सब की आदत बन गई थी, लेकिन यहाँ आने के बाद मेरी वो आदत छूट गई थी। लेकिन केरल गया, तो फिर से एक बार वो जागरूक हो गई। और मैंने तो अभी सरकार में फिर से नीचे सूचना देना भी शुरू कर दिया है। हम भी धीरे-धीरे एक स्वभाव बना सकते हैं। और bouquet की आयुष बहुत कम होती है। एक बार हाथ में लिया, फिर छोड़ देते हैं। लेकिन अगर book देते हैं, तो एक प्रकार से घर का हिस्सा बन जाता है, परिवार का हिस्सा बन जाता है। खादी का रुमाल दे कर के भी स्वागत करते हैं, तो कितने गरीब लोगों को मदद मिलती है। खर्चा भी कम हो जाता है और सही रूप से उसका उपयोग भी होता है। और जब मैं ये बात कह रहा हूँ, तो ऐसी चीज़ों का कितना ऐतिहासिक मूल्य होता है। मैं गत वर्ष जब UK गया था, तो London में Britain की Queen, Queen Elizabeth ने मुझे भोजन पर निमंत्रित किया था। एक मातृसहज वातावरण था। बड़े प्यार से उन्होंने भोजन भी कराया, लेकिन बाद में उन्होंने मुझे एक बड़े ही आदर के साथ भावात्मक स्वर में एक छोटा-सा खादी का और धागे से बुना हुआ एक handkerchief दिखाया और उनकी आँखों में चमक थी, उन्होंने कहा कि जब मेरी शादी हुई थी, तो ये handkerchief महात्मा गाँधी ने मुझे भेंट में भेजा था शादी की शुभकामना के रूप में। कितने साल हो गए, लेकिन Queen Elizabeth ने महात्मा गाँधी के द्वारा दिया हुआ ये handkerchief संभाल के रखा हुआ है। और मैं गया, तो उन्होंने इस बात का बड़ा आनंद था कि वो मुझे वो दिखा रही थीं। और जब मैं देख रहा था, तो उनका आग्रह रहा कि नहीं, मैं उसको छू कर के देखूँ। महात्मा गाँधी की एक छोटी सी भेंट उनके जीवन का हिस्सा बन गई, उनके इतिहास का हिस्सा बन गई। मुझे विश्वास है कि ये आदतें रातों-रात नहीं बदलती हैं और जब कभी ऐसी बात करते हैं, तो आलोचना का भी शिकार होना होता है। लेकिन उसके बावजूद भी ऐसी बातें करते रहनी चाहिए, प्रयास करते रहना चाहिए। अब मैं ये तो नहीं कह सकता हूँ कि मैं कहीं जाऊँगा और कोई bouquet ले के आ जाएगा, तो उसको मना कर दूँगा, ऐसा तो नहीं कर पाऊँगा। लेकिन फिर भी आलोचना भी होगी, लेकिन बात करते रहेंगे, तो धीरे-धीरे सुधार भी होगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, प्रधानमंत्री के नाते अनेक प्रकार के काम रहते हैं। फ़ाइलों में डूबे रहते हैं, लेकिन मैंने मेरे लिये एक आदत विकसित की है कि मुझे जो चिट्ठियाँ आती हैं, उसमें से रोजाना कुछ चिट्ठियाँ मैं पढ़ता हूँ और उसके कारण मुझे सामान्य मानव से जुड़ने का एक अवसर मिलता है। भाँति-भाँति की चिट्ठियाँ आती हैं, अलग-अलग प्रकार के लोग चिट्ठियाँ लिखते हैं। इन दिनों एक ऐसी चिट्ठी मुझे पढ़ने का अवसर मिला, मुझे लगता है कि मुझे ज़रूर आपको बताना चाहिए। दूर-सुदूर दक्षिण में, तमिलनाडु में, मदुराई की एक housewife अरुलमोड़ी सर्वनन - उन्होंने मुझे एक चिट्ठी भेजी। और चिट्ठी क्या थी, उन्होंने लिखा कि मैंने अपने परिवार में बच्चों की पढ़ाई वगैरह के ध्यान में रह के कुछ-न-कुछ economical activity करने की दिशा में सोचा, तो परिवार को थोड़ी आर्थिक मदद हो जाए। तो मैंने 'मुद्रा' योजना से, बैंक

से पैसे लिए और बाज़ार से कुछ सामान ला करके supply करने की दिशा में कुछ काम शुरू किया। इतने में मेरे ध्यान में आया कि भारत सरकार ने Government E-Marketplace नाम की कोई व्यवस्था खड़ी की है। तो मैंने दूँदा, ये क्या है, कुछ लोगों से पूछा। तो मैंने खुद को भी उसमें register करवा दिया। मैं देशवासियों को बताना चाहता हूँ, आपको भी मौका मिले, तो आप Internet पर E-GEM - 'ई जी ई एम' - उसको visit कीजिए। एक बड़ी नयी प्रकार की व्यवस्था है। जो भी सरकार में कोई चीज़ supply करना चाहता है, छोटी-छोटी चीज़ें भेजना चाहता है - बिजली के बल्ब भेजना चाहता है, dustbin भेजना चाहता है, झाड़ू भेजना चाहता है, chair भेजना चाहता है, table भेजना चाहता है, बेचना चाहता है, वो उसमें अपना नाम register करवा सकता है। वो क्या quality का माल है उसके पास, वो उसमें लिखकर के रख सकता है, कितने में वो बेचेगा, वो लिख सकता है और सरकार के department को compulsory है कि उन्होंने उस पर visit करना होगा, देखना होगा कि ये supply करने वाले quality compromise न करते हुए सस्ते में कौन पहुँचाता है। और फिर उसको order करना होता है। और उसके कारण बिचौलिये खत्म हो गए। सारी transparency आ गई। interface नहीं होता है, technology के माध्यम से ही सब होता है। तो E-GEM के अन्दर जो लोग registry करवाते हैं, सरकार के सभी department उसको देखते रहते हैं। बीच में बिचौलिये नहीं होने के कारण चीज़ें बहुत सस्ती मिलती हैं। अब ये अरुलमोड़ी मैडम ने सरकार की इस website पर वो जो-जो सामान दे सकती हैं, उसका सारा registry करवा दी। और मज़ा ये है कि उन्होंने मुझे जो चिट्ठी लिखी है, वो बड़ी interesting है। उन्होंने लिखा कि एक तो मुझे 'मुद्रा' से पैसे मिल गए, मेरा कारोबार शुरू हो गया, E-GEM के अन्दर मैंने मैं क्या दे सकती हूँ, वो सारी सूची रख दी और मुझे प्रधानमंत्री कार्यालय से order मिला, PMO से। अब मेरे लिए भी ये नयी खबर थी, PMO ने क्या मंगवाया होगा, तो उसने लिखा है कि PMO ने मेरे से दो thermos खरीदे। और 1600 रुपये का मुझे payment भी मिल गया। ये है empowerment ये है entrepreneurship को बढ़ावा देने का अवसर। शायद अरुलमोड़ी जी ने मुझे चिट्ठी न लिखी होती, तो मेरा भी शायद इतना ध्यान नहीं गया होता कि E-GEM की व्यवस्था से दूर-सुदूर एक गृहिणी छोटा सा काम कर रही है, उसका माल प्रधानमंत्री कार्यालय तक खरीदा जा सकता है। यही देश की ताकत है। इसमें transparency भी है, इसमें empowerment भी है, इसमें entrepreneurship भी है। Government E-Marketplace - GEM में ज़रूर चाहूँगा कि जो इस प्रकार से सरकार को अपना माल बेचना चाहते हैं, वो उससे ज़्यादा से ज़्यादा जुड़ें। मैं मानता हूँ Minimum Government and Maximum Governance का एक बेहतरीन उदाहरण है ये और इसका लक्ष्य क्या है minimum price और maximum ease, efficiency and transparency.

मेरे प्यारे देशवासियों, एक तरफ़ हम योग को लेकर के गर्व करते हैं, तो दूसरी तरफ़ हम Space Science में हमारी जो सिद्धियाँ हैं, उसके लिए भी गर्व कर सकते हैं। और ये ही तो भारत की विशेषता है कि अगर हमारे पैर योग से जुड़े हुए ज़मीन पर हैं, तो हमारे सपने दूर-दूर आसमानों के उन क्षितिजों को पार करने के लिये भी हैं। पिछले दिनों खेल में भी और विज्ञान में भी भारत ने बहुत-कुछ करके दिखाया है। आज भारत केवल धरती पर ही नहीं, अंतरिक्ष में भी अपना परचम लहरा रहा है। अभी दो दिन पहले ISRO ने 'Cartosat-2 Series Satellite' के साथ 30 Nano Satellites को launch किया। और इन satellites में भारत के अलावा फ़्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्रिटेन, अमेरिका - ऐसे करीब-करीब 14 देश इसमें शामिल हैं। और भारत के इस Nano Satellite अभियान से खेती के क्षेत्र में, किसानों के काम में, प्राकृतिक आपदा के संबंध में काफी कुछ हमें मदद मिलेगी। कुछ दिन पहले इस बात का हम सब को बराबर याद होगा, ISRO ने 'GSAT-19' का सफल launch किया था। और अब तक भारत ने जो satellite launch किये हैं, उसमें ये सबसे ज़्यादा वज़नदार heavy satellite है। और हमारे देश के अखबारों ने तो इसकी हाथी के वज़नों के साथ तुलना की थी, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि कितना बड़ा काम अंतरिक्ष के क्षेत्र में हमारे वैज्ञानिकों ने किया है। 19 जून को 'मार्स मिशन' के एक हज़ार दिन पूरे हुए हैं। आप सबको पता होगा कि जब 'मार्स मिशन' के लिये हम लोग सफलतापूर्वक orbit में जगह बनाई थी, तो ये पूरा mission एक 6 महीने की अवधि के लिये था। उसकी life 6 महीने की थी। लेकिन मुझे खुशी है कि हमारे वैज्ञानिकों के इस प्रयासों की ताकत ये रही कि 6 महीने तो पार कर दिये - एक हज़ार दिन के बाद भी ये हमारा 'मंगलयान मिशन' काम कर रहा है, तस्वीरें भेज रहा है, जानकारीयाँ दे रहा है, scientific data आ रहे हैं, तो समय अवधि से भी ज़्यादा, अपने आयुष से भी ज़्यादा काम कर रहा है। एक हज़ार दिन पूरा होना हमारी वैज्ञानिक यात्रा के अन्दर, हमारी अंतरिक्ष यात्रा के अन्दर एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

इन दिनों sports में भी हम देख रहे हैं कि हमारे युवाओं का रुझान बढ़ता चला जा रहा है। अब ये नज़र आने लगा है कि पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद में भी हमारी युवा पीढ़ियों को अपना भविष्य दिखने लगा है और हमारे खिलाड़ियों के कारण, उनके पुरुषार्थ के कारण, उनकी सिद्धि के कारण देश का भी नाम रोशन होता है। अभी हाल ही में भारत के बैडमिंटन खिलाड़ी किदाम्बी श्रीकांत ने इंडोनेशिया ओपन में जीत दर्ज कर देश का मान बढ़ाया है। मैं इस उपलब्धि के लिए उनको और उनके कोच को हृदय से बधाई देता हूँ। मुझे कुछ दिन पहले एथलीट पी. टी. उषा जी के Usha School of Athletics के Synthetic Track के उद्घाटन समारोह में जुड़ने का अवसर मिला था। हम खेल को जितना बढ़ावा देंगे, sports, sportsman spirit भी लेकर आता है। खेल व्यक्तित्व के विकास के लिए भी बहुत बड़ी अहम भूमिका अदा करता है। overall personality development में खेल का माहात्म्य बहुत है। देश में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। अगर हमारे

परिवार में भी बच्चों को खेल की रुचि है, तो उनको अवसर देना चाहिए। उनको मैदान में से उठा करके, कमरे में बंद करके, किताबों के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए। वो पढ़ाई भी करें, उसमें भी आगे बढ़ सकते हैं, तो बढ़ें, लेकिन अगर खेल में उसका सामर्थ्य है, रुचि है, तो स्कूल, कॉलेज, परिवार, आस-पास के लोग - हर किसी को उसको बल देना चाहिए, प्रोत्साहित करना चाहिए। अगले Olympic के लिए हर किसी को सपने संजोने चाहिए।

फिर एक बार मेरे प्यारे देशवासियो, वर्षा ऋतु, लगातार उत्सवों का माहौल, एक प्रकार से ये कालखंड की अनुभूति ही नयी होती है। मैं फिर एक बार आप सब को शुभकामनायें देते हुए अगले 'मन की बात' के समय फिर कुछ बातें करूंगा। नमस्कार।

AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

30-जुलाई-2017 11:33 IST

30.07.2017 को आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार। मनुष्य का मन ही ऐसा है कि वर्षाकाल मन के लिये बड़ा लुभावना काल होता है। पशु, पक्षी, पौधे, प्रकृति - हर कोई वर्षा के आगमन पर प्रफुल्लित हो जाते हैं। लेकिन कभी-कभी वर्षा जब विकराल रूप लेती है, तब पता चलता है कि पानी की विनाश करने की भी कितनी बड़ी ताकत होती है। प्रकृति हमें जीवन देती है, हमें पालती है, लेकिन कभी-कभी बाढ़, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाएँ, उसका भीषण स्वरूप, बहुत विनाश कर देता है। बदलते हुए मौसम-चक्र और पर्यावरण में जो बदलाव आ रहा है, उसका बड़ा ही negative impact भी हो रहा है। पिछले कुछ दिनों से भारत के कुछ हिस्सों में विशेषकर असम, North-East, गुजरात, राजस्थान, बंगाल के कुछ हिस्से, अति-वर्षा के कारण प्राकृतिक आपदा झेलनी पड़ी है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की पूरी monitoring हो रही है। व्यापक स्तर पर राहत कार्य किए जा रहे हैं। जहाँ हो सके, वहाँ मंत्रिपरिषद के मेरे साथी भी पहुँच रहे हैं। राज्य सरकारें भी अपने-अपने तरीके से बाढ़ पीड़ितों को मदद करने के लिए भरसक प्रयास कर रही हैं। सामाजिक संगठन भी, सांस्कृतिक संगठन भी, सेवा-भाव से काम करने वाले नागरिक भी, ऐसी परिस्थिति में लोगों को मदद पहुँचाने के लिए भरसक प्रयास कर रहे हैं। भारत सरकार की तरफ से, सेना के जवान हों, वायु सेना के लोग हों, NDRF के लोग हों, paramilitary forces हों, हर कोई ऐसे समय आपदा पीड़ितों की सेवा करने में जी-जान से जुड़ जाते हैं। बाढ़ से जन-जीवन काफी अस्त-व्यस्त हो जाता है। फसलों, पशुधन, infrastructure, roads, electricity, communication links सब कुछ प्रभावित हो जाता है। खास कर के हमारे किसान भाइयों को, फसलों को, खेतों को जो नुकसान होता है, तो इन दिनों तो हमने insurance कंपनियों को और विशेष करके crop insurance कंपनियों को भी proactive होने के लिये योजना बनाई है, ताकि किसानों के claim settlement तुरंत हो सके। और बाढ़ की परिस्थिति को निपटने के लिये 24x7 control room helpline number 1078 लगातार काम कर रहा है। लोग अपनी कठिनाइयाँ बताते भी हैं। वर्षा ऋतु के पूर्व अधिकतम स्थानों पर mock drill करके पूरे सरकारी तंत्र को तैयार किया गया। NDRF की टीमों लगाई गई। स्थान-स्थान पर आपदा-मित्र बनाना और आपदा-मित्र के do's & don'ts की training करना, volunteers तय करना, एक जन-संगठन खड़ा कर-करके ऐसी परिस्थिति में काम करना। इन दिनों मौसम का जो पूर्वानुमान मिलता है, अब technology इतनी आगे बढ़ी है, space science का भी बहुत बड़ा role रहा है, उसके कारण करीब-करीब अनुमान सही निकलते हैं। धीरे-धीरे हम लोग भी स्वभाव बनाएँ कि मौसम के पूर्वानुमान के अनुसार अपने कार्यकलापों की भी रचना कर सकते हैं, तो उससे हम नुकसान से बच सकते हैं।

जब भी मैं 'मन की बात' के लिये तैयारी करता हूँ, तो मैं देख रहा हूँ, मुझसे ज्यादा देश के नागरिक तैयारी करते हैं। इस बार तो GST को लेकर के इतनी चिट्ठियाँ आई हैं, इतने सारे phone call आए हैं और अभी भी लोग GST के संबंध में खुशी भी व्यक्त करते हैं, जिज्ञासा भी व्यक्त करते हैं। एक phone call मैं आपको भी सुनाता हूँ: -

“नमस्कार, प्रधानमंत्री जी, मैं गुड़गांव से नीतू गर्ग बोल रही हूँ। मैंने आपकी Chartered Accountants Day की speech सुनी और बहुत प्रभावित हुई। इसी तरह हमारे देश में पिछले महीने आज ही की तारीख पर Goods and Services Tax-GST की शुरुआत हुई। क्या आप बता सकते हैं कि जैसा सरकार ने expect किया था, वैसे ही result एक महीने बाद आ रहे हैं या नहीं? मैं इसके बारे में आपके विचार सुनना चाहूँगी, धन्यवाद।”

GST के लागू हुए करीब एक महीना हुआ है और उसके फायदे दिखने लगे हैं। और मुझे बहुत संतोष होता है, खुशी होती है, जब कोई गरीब मुझे चिट्ठी लिख करके कहता है कि GST के कारण एक गरीब की जरूरत की चीज़ों में कैसे दाम कम हुए हैं, चीज़ें कैसे सस्ती हुई हैं। अगर North-East, दूर-सुदूर पहाड़ों में, जंगलों में रहने वाला कोई व्यक्ति चिट्ठी लिखता है कि शुरू में डर लगता था कि पता नहीं क्या है; लेकिन अब जब मैं उसमें सीखने-समझने लगा, तो मुझे लगता है, पहले से ज्यादा आसान हो गया काम। व्यापार और आसान हो गया। और सबसे बड़ी बात है, ग्राहकों का व्यापारी के प्रति भरोसा बढ़ने लगा है। अभी मैं देख रहा था कि transport and logistics sector पर कैसे GST का impact पड़ा। कैसे अब ट्रकों की आवाजाही बढ़ी है! दूरी तय करने में समय कैसे कम हो रहा है ! highways clutter free हुए हैं। ट्रकों की गति बढ़ने के कारण pollution भी कम हुआ है। सामान भी बहुत जल्दी से पहुँच रहा है। ये सुविधा तो है ही, लेकिन साथ-साथ आर्थिक गति को भी इससे बल मिलता है। पहले अलग-अलग tax structure होने के कारण transport and logistics

sector का अधिकतम resources paperwork maintain करने में लगता था और उसको हर state के अन्दर अपने नये-नये warehouse बनाने पड़ते थे। GST - जिसे मैं Good and Simple Tax कहता हूँ, सचमुच मैं उसने हमारी अर्थव्यवस्था पर एक बहुत ही सकारात्मक प्रभाव और बहुत ही कम समय में उत्पन्न किया है। जिस तेज़ी से smooth transition हुआ है, जिस तेज़ी से migration हुआ है, नये registration हुए हैं, इसने पूरे देश में एक नया विश्वास पैदा किया है। और कभी-न-कभी अर्थव्यवस्था के पंडित, management के पंडित, technology के पंडित, भारत के GST के प्रयोग को विश्व के सामने एक model के रूप में research करके ज़रूर लिखेंगे। दुनिया की कई युनिवर्सिटियों के लिए एक case study बनेगा। क्योंकि इतने बड़े scale पर इतना बड़ा change और इतने करोड़ों लोगों के involvement के साथ इतने बड़े विशाल देश में उसको लागू करना और सफलतापूर्वक आगे बढ़ना, ये अपने-आप में सफलता की एक बहुत बड़ी ऊँचाई है। विश्व ज़रूर इस पर अध्ययन करेगा। और GST लागू किया है, सभी राज्यों की उसमें भागीदारी है, सभी राज्यों की ज़िम्मेदारी भी है। सारे निर्णय राज्यों ने और केंद्र ने मिलकर के सर्वसम्मति से किए हैं। और उसी का परिणाम है कि हर सरकार की एक ही प्राथमिकता रही कि GST के कारण गरीब की थाली पर कोई बोझ न पड़े। और GST App पर आप भली-भाँति जान सकते हैं कि GST के पहले जिस चीज़ का जितना दाम था, तो नई परिस्थिति में कितना दाम होगा, वो सारा आपके mobile phone पर available है। One Nation - One Tax, कितना बड़ा सपना पूरा हुआ। GST के मसले को मैंने देखा है कि जिस प्रकार से तहसील से ले करके भारत सरकार तक बैठे हुए सरकार के अधिकारियों ने जो परिश्रम किया है, जिस समर्पण भाव से काम किया है, एक प्रकार से जो friendly environment बना सरकार और व्यापारियों के बीच, सरकार और ग्राहकों के बीच, उसने विश्वास को बढ़ाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। मैं इस कार्य से लगे हुए सभी मंत्रालयों को, सभी विभागों को, केंद्र और राज्य सरकार के सभी मूलाज़िमों को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। GST भारत की सामूहिक शक्ति की सफलता का एक उत्तम उदाहरण है। यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। और ये सिर्फ tax reform नहीं है, एक नयी ईमानदारी की संस्कृति को बल प्रदान करने वाली अर्थव्यवस्था है। एक प्रकार से एक सामाजिक सुधार का भी अभियान है। मैं फिर एक बार सरलतापूर्वक इतने बड़े प्रयास को सफल बनाने के लिए कोटि-कोटि देशवासियों को कोटि-कोटि वंदन करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, अगस्त महीना क्रांति का महीना होता है। सहज रूप से ये बात हम बचपन से सुनते आए हैं और उसका कारण है, 1 अगस्त, 1920 - 'असहयोग आन्दोलन' प्रारंभ हुआ। 9 अगस्त, 1942 - 'भारत छोड़ो आन्दोलन' प्रारंभ हुआ, जिसे 'अगस्त क्रांति' के रूप में जाना जाता है और 15 अगस्त, 1947 - देश आज़ाद हुआ। एक प्रकार से अगस्त महीने में अनेक घटनायें आज़ादी की तवारीख के साथ विशेष रूप से जुड़ी हुई हैं। इस वर्ष हम 'भारत छोड़ो' 'Quit India Movement' इस आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। लेकिन बहुत कम लोग इस बात को जानते हैं कि 'भारत छोड़ो' - ये नारा डॉ. यूसुफ मेहर अली ने दिया था। हमारी नयी पीढ़ी को जानना चाहिए कि 9 अगस्त, 1942 को क्या हुआ था। 1857 से 1942 तक जो आज़ादी की ललक के साथ देशवासी जुड़ते रहे, जूझते रहे, झेलते रहे, इतिहास के पन्ने भव्य भारत के निर्माण के लिए हमारी प्रेरणा हैं। हमारे आज़ादी के वीरों ने त्याग, तपस्या, बलिदान दिए हैं, उससे बड़ी प्रेरणा क्या हो सकती है। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण संघर्ष था। इसी आन्दोलन ने ब्रिटिश-राज से मुक्ति के लिये पूरे देश को संकल्पित कर दिया था। ये वो समय था, जब अंग्रेज़ी सत्ता के विरोध में भारतीय जनमानस हिंदुस्तान के हर कोने में, गाँव हो, शहर हो, पढ़ा हो, अनपढ़ हो, गरीब हो, अमीर हो, हर कोई कंधे-से-कंधा मिला करके 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का हिस्सा बन गया था। जन-आक्रोश अपनी चरम सीमा पर था। महात्मा गाँधी के आह्वान पर लाखों भारतवासी 'करो या मरो' के मंत्र के साथ अपने जीवन को संघर्ष में झोंक रहे थे। देश के लाखों नौजवानों ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी, किताबें छोड़ दी थीं। आज़ादी का बिगुल बजा, वो चल पड़े थे। 9 अगस्त, 'भारत छोड़ो आन्दोलन' महात्मा गाँधी ने आह्वान तो किया, लेकिन सारे बड़े नेता अंग्रेज़ सल्तनत ने जेल में हर किसी को डाल दिया और वो कालखंड था कि देश में second generation की leadership ने - डॉ. लोहिया, जयप्रकाश नारायण जैसे महापुरुषों ने अग्रिम भूमिका निभाई थी।

'असहयोग आन्दोलन' और 'भारत छोड़ो आन्दोलन' 1920 और 1942 महात्मा गाँधी के दो अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं। 'असहयोग आन्दोलन' के रूप-रंग अलग थे और 42 की वो स्थिति आई, तीव्रता इतनी बढ़ गई कि महात्मा गाँधी जैसे महापुरुष ने 'करो या मरो' का मंत्र दे दिया। इस सारी सफलता के पीछे जन-समर्थन था, जन-सामर्थ्य थी, जन-संकल्प था, जन-संघर्ष था। पूरा देश एक होकर के लड़ रहा था। और मैं कभी-कभी सोचता हूँ, अगर इतिहास के पन्नों को थोड़ा जोड़ करके देखें, तो भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम 1857 में हुआ। 1857 से प्रारंभ हुआ स्वतंत्रता संग्राम 1942 तक हर पल देश के किसी-न-किसी कोने में चलता रहा। इस लम्बे कालखंड ने देशवासियों के दिल में आज़ादी की ललक पैदा कर दी। हर कोई कुछ-न-कुछ करने के लिये प्रतिबद्ध हो गया। पीढ़ियाँ बदलती गईं, लेकिन संकल्प में कोई कमी नहीं आई। लोग आते गए, जुड़ते गए, जाते गए, नये आते गए, नये जुड़ते गए और अंग्रेज़ सल्तनत को उखाड़ करके फेंकने के लिये देश हर पल प्रयास करता रहा। 1857 से 1942 तक के इस परिश्रम ने, इस आन्दोलन ने एक ऐसी स्थिति पैदा की कि 1942 इसकी चरम सीमा पर पहुँचा और 'भारत छोड़ो' का ऐसा बिगुल बजा कि 5 वर्ष के भीतर-भीतर 1947 में अंग्रेज़ों को जाना पड़ा। 1857 से 1942 - आज़ादी की वो ललक जन-जन तक पहुँची। और 1942 से 1947 - पाँच साल, एक ऐसा जन-मन

बन गया, संकल्प से सिद्धि के पाँच निर्णायक वर्ष के रूप में सफलता के साथ देश को आज़ादी देने का कारण बन गए। ये पाँच वर्ष निर्णायक वर्ष थे।

अब मैं आपको इस गणित के साथ जोड़ना चाहता हूँ। 1947 में हम आज़ाद हुए। आज 2017 है। करीब 70 साल हो गए। सरकारें आई-गईं। व्यवस्थायें बनीं, बदलीं, पनपीं, बढ़ीं। देश को समस्याओं से मुक्त कराने के लिये हर किसी ने अपने-अपने तरीके से प्रयास किए। देश में रोजगार बढ़ाने के लिये, गरीबी हटाने के लिये, विकास करने के लिये प्रयास हुए। अपने-अपने तरीके से परिश्रम भी हुआ। सफलतायें भी मिलीं। अपेक्षायें भी जगीं। जैसे 1942 to 1947 संकल्प से सिद्धि के एक निर्णायक पाँच वर्ष थे। मैं देख रहा हूँ कि 2017 से 2022 - संकल्प से सिद्धि के और एक पांच साल का तबका हमारे सामने आया है। इस 2017 के 15 अगस्त को हम संकल्प पर्व के रूप में मनाएँ और 2022 में आज़ादी के जब 75 साल होंगे, तब हम उस संकल्प को सिद्धि में परिणत करके ही रहेंगे। अगर सवा-सौ करोड़ देशवासी 9 अगस्त, क्रांति दिवस को याद करके, इस 15 अगस्त को हर भारतवासी संकल्प करे, व्यक्ति के रूप में, नागरिक के रूप में - मैं देश के लिए इतना करके रहूँगा, परिवार के रूप में ये करूँगा, समाज के रूप में ये करूँगा, गाँव और शहर के रूप में ये करूँगा, सरकारी विभाग के रूप में ये करूँगा, सरकार के नाते ये करूँगा। करोड़ों-करोड़ों संकल्प हों। करोड़ों-करोड़ों संकल्प को परिपूर्ण करने के प्रयास हों। तो जैसे 1942 to 1947 पाँच साल देश को आज़ादी के लिए निर्णायक बन गए, ये पांच साल 2017 से 2022 के, भारत के भविष्य के लिए भी निर्णायक बन सकते हैं और बनाने हैं। पांच साल बाद देश की आज़ादी के 75 साल मनाएंगे। तब हम सब लोगों को दृढ़ संकल्प लेना है आज। 2017 हमारा संकल्प का वर्ष बनाना है। यही अगस्त मास संकल्प के साथ हमें जुड़ना है और हमें संकल्प करना है। गंदगी - भारत छोड़ो, गरीबी - भारत छोड़ो, भ्रष्टाचार - भारत छोड़ो, आतंकवाद - भारत छोड़ो, जातिवाद - भारत छोड़ो, सम्प्रदायवाद - भारत छोड़ो। आज आवश्यकता 'करेंगे या मरेंगे' की नहीं, बल्कि नये भारत के संकल्प के साथ जुड़ने की है, जुटने की है, जी-जान से सफलता पाने के लिये पुरुषार्थ करने की है। संकल्प को लेकर के जीना है, जूझना है। आइए, इस अगस्त महीने में 9 अगस्त से संकल्प से सिद्धि का एक महाभियान चलाएं। प्रत्येक भारतवासी, सामाजिक संस्थायें, स्थानीय निकाय की इकाइयाँ, स्कूल, कॉलेज, अलग-अलग संगठन - हर एक New India के लिए कुछ-न-कुछ संकल्प लें। एक ऐसा संकल्प, जिसे अगले 5 वर्षों में हम सिद्ध कर के दिखाएँगे। युवा संगठन, छात्र संगठन, NGO आदि सामूहिक चर्चा का आयोजन कर सकते हैं। नये-नये idea उजागर कर सकते हैं। एक राष्ट्र के रूप में हमें कहाँ पहुँचना है? एक व्यक्ति के नाते उसमें मेरा क्या योगदान हो सकता है? आइए, इस संकल्प के पर्व पर हम जुड़ें।

मैं आज विशेष रूप से online world, क्योंकि हम कहीं हों या न हों, लेकिन online तो ज़रूर होते हैं; जो online वाली दुनिया है और खासकर के मेरे युवा साथियों को, मेरे युवा मित्रों को, आमंत्रित करता हूँ कि नये भारत के निर्माण में वे innovative तरीके से योगदान के लिए आगे आएँ। technology का उपयोग करते video, post, blog, आलेख, नये-नये idea - वो सभी बातें लेकर के आएँ। इस मुहिम को एक जन आंदोलन में परिवर्तित करें। NarendraModiApp पर भी युवा मित्रों के लिये Quit India Quiz launch किया जाएगा। यह quiz युवाओं को देश के गौरवशाली इतिहास से जोड़ने और स्वतंत्रता संग्राम के नायकों से परिचित कराने का एक प्रयास है। मैं मान रहा हूँ कि आप ज़रूर इसका व्यापक प्रचार करें, प्रसार करें।

मेरे प्यारे देशवासियों, 15 अगस्त, देश के प्रधान सेवक के रूप में मुझे लाल किले से देश के साथ संवाद करने का अवसर मिलता है। मैं तो एक निमित्त-मात्र हूँ। वहाँ वो एक व्यक्ति नहीं बोलता है। लाल किले से सवा-सौ करोड़ देशवासियों की आवाज़ गूँजती है। उनके सपनों को शब्दबद्ध करने की कोशिश होती है और मुझे खुशी है कि पिछले 3 साल से लगातार 15 अगस्त निमित्त देश के हर कोने से मुझे सुझाव मिलते हैं कि मुझे 15 अगस्त पर क्या कहना चाहिए? किन मुद्दों को लेना चाहिए? इस बार भी मैं आपको निमंत्रित करता हूँ। MyGov पर या तो NarendraModiApp पर आप अपने विचार मुझे ज़रूर भेजिए। मैं स्वयं ही उसे पढ़ता हूँ और 15 अगस्त को जितना भी समय मेरे पास है, उसमें इसको प्रगट करने का प्रयास करूँगा। पिछले 3 बार के मुझे मेरे 15 अगस्त के भाषणों में एक शिकायत लगातार सुनने को मिली है कि मेरा भाषण थोड़ा लम्बा हो जाता है। इस बार मैंने मन में कल्पना तो की है कि मैं इसे छोटा करूँ। ज्यादा से ज्यादा 40-45-50 मिनट में पूरा करूँ। मैंने मेरे लिये नियम बनाने की कोशिश की है; पता नहीं, मैं कर पाऊँगा कि नहीं कर पाऊँगा। लेकिन मैं इस बार कोशिश करने का इरादा रखता हूँ कि मैं मेरा भाषण छोटा कैसे करूँ देखते हैं, सफलता मिलती है कि नहीं मिलती है।

मैं देशवासियों, एक और भी बात आज करना चाहता हूँ। भारत की अर्थव्यवस्था में एक सामाजिक अर्थशास्त्र है। और उसको हमने कभी भी कम नहीं आँकना चाहिए। हमारे त्योहार, हमारे उत्सव, वो सिर्फ आनंद-प्रमोद के ही अवसर हैं, ऐसा नहीं है। हमारे उत्सव, हमारे त्योहार एक सामाजिक सुधार का भी अभियान हैं। लेकिन उसके साथ-साथ हमारे हर त्योहार, गरीब-से-गरीब की आर्थिक जिन्दगी के साथ सीधा सम्बन्ध रखते हैं। कुछ ही दिन के बाद रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, उसके बाद गणेश उत्सव, उसके बाद चौथ चन्द्र, फिर अनंत चतुर्दशी, दुर्गा पूजा, दिवाली - एक-के-बाद, एक-के-बाद-एक और यही समय है

जब गरीब के लिये, आर्थिक उपार्जन के लिये अवसर मिलता है। और इन त्योहारों में एक सहज स्वाभाविक आनंद भी जुड़ जाता है। त्योहार रिश्तों में मिठास, परिवार में स्नेह, समाज में भाईचारा लाते हैं। व्यक्ति और समाज को जोड़ते हैं। व्यक्ति से समष्टि तक की एक सहज यात्रा चलती है। 'अहम् से वयम्' की ओर जाने का एक अवसर बन जाती है। जहाँ तक अर्थव्यवस्था का सवाल है, राखी के कई महीनों पहले से सैकड़ों परिवारों में छोटे-छोटे घरेलू उद्योगों में राखियाँ बनाना शुरू हो जाती हैं। खादी से लेकर के रेशम के धागों की, न जाने कितनी तरह की राखियाँ और आजकल तो लोग homemade राखियों को ज्यादा पसंद करते हैं। राखी बनाने वाले, राखियाँ बेचने वाले, मिठाई वाले - हजारों-सैकड़ों का व्यवसाय एक त्योहार के साथ जुड़ जाता है। हमारे अपने गरीब भाई-बहन, परिवार इसी से तो चलते हैं। हम दीपावली में दीप जलाते हैं, सिर्फ वो प्रकाश-पर्व है, ऐसा ही नहीं है, वो सिर्फ त्योहार है, घर का सुशोभन है, ऐसा नहीं है। उसका सीधा-सीधा सम्बन्ध छोटे-छोटे मिट्टी के दिये बनाने वाले उन गरीब परिवारों से है। लेकिन जब आज मैं त्योहारों और त्योहार के साथ जुड़े गरीब की अर्थव्यवस्था की बात करता हूँ, तो साथ-साथ मैं पर्यावरण की भी बात करना चाहूँगा।

मैंने देखा है कि कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मुझसे भी देशवासी ज्यादा जागरूक हैं, ज्यादा सक्रिय हैं। पिछले एक महीने से लगातार पर्यावरण के प्रति सजग नागरिकों ने मुझे चिट्ठियाँ लिखी हैं। और उन्होंने आग्रह किया है कि आप गणेश चतुर्थी में eco-friendly गणेश की बात समय से पहले बताइए, ताकि लोग मिट्टी के गणेश की पसंद पर अभी से योजना बनाएँ। मैं सबसे पहले तो ऐसे जागरूक नागरिकों का आभारी हूँ। उन्होंने मुझे आग्रह किया है कि मैं समय से पहले इस विषय पर कहूँ। इस बार सार्वजनिक गणेशोत्सव का एक विशेष महत्व है। लोकमान्य तिलक जी ने इस महान परम्परा को प्रारंभ किया था। ये वर्ष सार्वजनिक गणेशोत्सव का 125वाँ वर्ष है। सवा-सौ वर्ष और सवा-सौ करोड़ देशवासी - लोकमान्य तिलक जी ने जिस मूल भावना से समाज की एकता और समाज की जागरूकता के लिये, सामूहिकता के संस्कार के लिये सार्वजनिक गणेशोत्सव प्रारंभ किया था; हम फिर से एक बार गणेशोत्सव के इस वर्ष में निबंध स्पर्धायें करें, चर्चा सभायें करें, लोकमान्य तिलक के योगदान को याद करें। और फिर से तिलक जी की जो भावना थी, उस दिशा में हम सार्वजनिक गणेशोत्सव को कैसे ले जाएँ। उस भावना को फिर से कैसे प्रबल बनाएँ और साथ-साथ पर्यावरण की रक्षा के लिए eco-friendly गणेश, मिट्टी से बने हुए ही गणेश, ये हमारा संकल्प रहे। और इस बार तो मैंने बहुत जल्दी कहा है; मुझे जरूर विश्वास है कि आप सब मेरे साथ जुड़ेंगे और इससे लाभ ये होगा कि हमारे जो गरीब कारीगर हैं, गरीब जो कलाकार हैं, जो मूर्तियाँ बनाते हैं, उनको रोजगार मिलेगा, गरीब का पेट भरेगा। आइए, हम हमारे उत्सवों को गरीब के साथ जोड़ें, गरीब की अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ें, हमारे त्योहार का आनंद गरीब के घर का आर्थिक त्योहार बन जाए, आर्थिक आनंद बन जाए - ये हम सब का प्रयास रहना चाहिए। मैं सभी देशवासियों को आने वाले अनेकविध त्योहारों के लिये, उत्सवों के लिये, बहुत-बहुत शुभकामनायें देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, हम लोग लगातार देख रहे हैं कि शिक्षा का क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, सामाजिक क्षेत्र हो, खेलकूद हो - हमारी बेटियाँ देश का नाम रोशन कर रही हैं, नई-नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर रही हैं। हम देशवासियों को हमारी बेटियों पर गर्व हो रहा है, नाज़ हो रहा है। अभी पिछले दिनों हमारी बेटियों ने महिला क्रिकेट विश्व कप में शानदार प्रदर्शन किया। मुझे इसी सप्ताह उन सभी खिलाड़ी बेटियों से मिलने का मौका मिला। उनसे बातें करके मुझे बहुत अच्छा लगा, लेकिन मैं अनुभव कर रहा था कि World Cup जीत नहीं पाई, इसका उन पर बड़ा बोझ था। उनके चेहरे पर भी उसका दबाव था, तनाव था। उन बेटियों को मैंने कहा और मैंने मेरा एक अलग मूल्यांकन दिया। मैंने कहा - देखिए, आजकल media का ज़माना ऐसा है कि अपेक्षायें इतनी बढ़ा दी जाती हैं, इतनी बढ़ा दी जाती हैं और जब सफलता नहीं मिलती है, तो वो आक्रोश में परिवर्तित भी हो जाती है। हमने कई ऐसे खेल देखे हैं कि भारत के खिलाड़ी अगर विफल हो गए, तो देश का गुस्सा उन खिलाड़ियों पर टूट पड़ता है। कुछ लोग तो मर्यादा तोड़ करके कुछ ऐसी बातें बोल देते हैं, ऐसी चीज़ें लिख देते हैं, बड़ी पीड़ा होती है। लेकिन पहली बार हुआ कि जब हमारी बेटियाँ विश्व कप में सफल नहीं हो पाई, तो सवा-सौ करोड़ देशवासियों ने उस पराजय को अपने कंधे पर ले लिया। ज़रा-सा भी बोझ उन बेटियों पर नहीं पड़ने दिया, इतना ही नहीं, इन बेटियों ने जो किया, उसका गुणगान किया, उनका गौरव किया। मैं इसे एक सुखद बदलाव देखता हूँ और मैंने इन बेटियों को कहा कि आप देखिए, ऐसा सौभाग्य सिर्फ आप ही लोगों को मिला है। आप मन में से निकाल दीजिए कि आप सफल नहीं हुए हैं। मैच जीते या न जीते, आप ने सवा-सौ करोड़ देशवासियों को जीत लिया है। सचमुच में हमारे देश की युवा पीढ़ी, खासकर के हमारी बेटियाँ सचमुच में देश का नाम रोशन करने के लिए बहुत-कुछ कर रही हैं। मैं फिर से एक बार देश की युवा पीढ़ी को, विशेषकर के हमारी बेटियों को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। शुभकामनायें देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, फिर एक बार स्मरण कराता हूँ अगस्त क्रान्ति को, फिर एक बार स्मरण करा रहा हूँ 9 अगस्त को, फिर एक बार स्मरण करा रहा हूँ 15 अगस्त को, फिर एक बार स्मरण करा रहा हूँ 2022, आज़ादी के 75 साल। हर देशवासी संकल्प करे, हर देशवासी संकल्प को सिद्ध करने का 5 साल का road-map तैयार करे। हम सबको देश को नयी ऊँचाइयों पर पहुँचाना है, पहुँचाना है और पहुँचाना है। आओ, हम मिल करके चलें, कुछ-न-कुछ करते चलें। देश का भाग्य, भविष्य उत्तम हो के रहेगा, इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें। बहुत-बहुत शुभकामनायें। धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी, अमित कुमार, शाहबाज़ हसीबी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

27-अगस्त-2017 11:45 IST

27.08.2017 को आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, सादर नमस्कार। एक तरफ देश उत्सवों में डूबा हुआ है और दूसरी तरफ से हिन्दुस्तान के किसी कोने से जब हिंसा की खबरें आती हैं तो देश को चिंता होना स्वाभाविक है। ये हमारा देश बुद्ध और गांधी का देश है, देश की एकता के लिए जी-जान लगा देने वाले सरदार पटेल का देश है। सदियों से हमारे पूर्वजों ने सार्वजनिक जीवन-मूल्यों को, अहिंसा को, समादर को स्वीकार किया हुआ है, हमारी ज़हन में भरा हुआ है। अहिंसा परमो धर्मः, ये हम बचपन से सुनते आये हैं, कहते आये हैं। मैंने लाल किले से भी कहा था कि आस्था के नाम पर हिंसा बर्दाश्त नहीं होगी, चाहे वो सांप्रदायिक आस्था हो, चाहे वो राजनैतिक विचार धाराओं के प्रति आस्था हो, चाहे वो व्यक्ति के प्रति आस्था हो, चाहे वो परम्पराओं के प्रति आस्था हो, आस्था के नाम पर, कानून हाथ में लेने का किसी को अधिकार नहीं है। डॉ बाबा साहब आंबेडकर ने हमें जो संविधान दिया है उसमें हर व्यक्ति को न्याय पाने की हर प्रकार की व्यवस्था है। मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ, कानून हाथ में लेने वाले, हिंसा के राह पर दमन करने वाले किसी को भी, चाहे वो व्यक्ति हो या समूह हो, न ये देश कभी बर्दाश्त करेगा और न ही कोई सरकार बर्दाश्त करेगी। हर किसी को कानून के सामने झुकना होगा, कानून जबाबदेही तय करेगा और दोषियों को सज़ा दे के रहेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारा देश विविधताओं से भरा हुआ है और ये विविधताएँ खान-पान, रहन-सहन, पहनाव वहाँ तक सीमित नहीं हैं। जीवन के हर व्यवहार में हमें विविधताएँ नजर आती हैं। यहाँ तक कि हमारे त्योहार भी विविधताओं से भरे हुए हैं और हजारों साल पुरानी हमारी सांस्कृतिक विरासत होने के कारण सांस्कृतिक परम्पराएँ देखें, सामाजिक परम्पराएँ देखें, ऐतिहासिक घटनाएँ देखें तो शायद ही 365 दिन में कोई दिन बचता होगा जबकि हमारे यहाँ कोई त्योहार से न जुड़ा हुआ हो। अब ये भी आपने देखा होगा कि हमारे सारे त्योहार, प्रकृति के समय पत्रक के अनुसार चलते हैं। प्रकृति के साथ सीधा-सीधा संबंध आता है। हमारे बहुत सारे त्योहार तो सीधे-सीधे किसान से जुड़े हुए होते हैं, मछुआरों से जुड़े हुए होते हैं।

आज मैं त्योहारों की बात कर रहा हूँ तो सबसे पहले मैं आप सबको मिच्छामि दुक्कडम कहना चाहूँगा। जैन समाज में कल संवत्सरी का पर्व मनाया गया। जैन समाज में भाद्र मास में पर्युषण पर्व मनाया जाता है। पर्युषण पर्व के आखिरी दिन संवत्सरी का दिन होता है। ये सचमुच में अपने आप में एक अद्भुत परम्परा है। संवत्सरी का पर्व क्षमा, अहिंसा और मैत्री का प्रतीक है। इसे एक प्रकार से क्षमा-वाणी पर्व भी कहा जाता है और इस दिन एक दूसरे को मिच्छामि दुक्कडम कहने की परंपरा है। वैसे भी हमारे शास्त्रों में 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' यानि क्षमा वीरों का भूषण है। क्षमा करने वाला वीर होता है। ये चर्चा तो हम सुनते ही आए हैं और महात्मा गाँधी तो हमेशा कहते थे - क्षमा करना तो ताकतवर व्यक्ति की विशेषता होती है।

शेक्सपियर ने अपने नाटक 'The Merchant of Venice' में क्षमा भाव के महत्त्व को बताते हुए लिखा था - "Mercy is twice blest, It blesseth him that gives and him that takes" अर्थात् क्षमा करने वाला और जिसे क्षमा किया गया, दोनों को भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, इन दिनों हिन्दुस्तान के हर कोने में गणेश चतुर्थी की धूम मची हुई है और जब गणेश चतुर्थी की बात आती है तो सार्वजनिक-गणेशोत्सव की बात स्वाभाविक है। बालगंगाधर लोकमान्य तिलक ने 125 साल पूर्व इस परंपरा को जन्म दिया और पिछले 125 साल आज़ादी के पहले वो आज़ादी के आन्दोलन का प्रतीक बन गए थे। और आज़ादी के बाद वे समाज-शिक्षा, सामाजिक-चेतना जगाने के प्रतीक बन गये हैं। गणेश चतुर्थी का पर्व 10 दिनों तक चलता है। इस महापर्व को एकता, समता और शुचिता का प्रतीक कहा जाता है। सभी देशवासियों को गणेशोत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

अभी केरल में 'ओणम' का त्योहार मनाया जा रहा है। भारत के रंग-बिरंगे त्योहारों में से एक 'ओणम' केरल का एक प्रमुख त्योहार है। यह पर्व अपने सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व के लिए जाना जाता है। ओणम का पर्व, केरल की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है। यह पर्व समाज में प्रेम और सौहार्द का सन्देश देने के साथ-साथ लोगों के मन में एक नयी उमंग, नयी आशा, नया विश्वास जागृत करता है। और अब तो हमारे ये त्योहार भी, tourism के आकर्षण का भी

कारण बनते जा रहे हैं। और मैं तो देशवासियों से कहूँगा कि जैसे गुजरात में नवरात्रि का उत्सव या बंगाल में दुर्गा उत्सव - एक प्रकार से tourism का आकर्षण बन चुके हैं। हमारे और त्योहार भी, विदेशियों को आकर्षित करने के लिये एक अवसर हैं। उस दिशा में हम क्या कर सकते हैं, सोचना चाहिये।

इन त्योहारों की श्रृंखला में कुछ ही दिन बाद देश भर में 'ईद-उल-जुहा' का पर्व भी मनाया जाएगा। सभी देशवासियों को 'ईद-उल-जुहा' की बहुत-बहुत बधाइयाँ, बहुत शुभकामनाएँ। त्योहार हमारे लिए आस्था और विश्वास के प्रतीक तो हैं ही, हमें नये भारत में त्योहारों को स्वच्छता का भी प्रतीक बनाना है। पारिवारिक जीवन में तो त्योहार और स्वच्छता जुड़े हुए हैं। त्योहार की तैयारी का मतलब है - साफ़-सफाई। ये हमारे लिए कोई नयी चीज़ नहीं है लेकिन ये सामाजिक स्वभाव बनाना भी ज़रूरी है। सार्वजनिक रूप से स्वच्छता का आग्रह सिर्फ घर में नहीं, हमारे पूरे गाँव में, पूरे नगर में, पूरे शहर में, हमारे राज्य में, हमारे देश में - स्वच्छता, ये त्योहारों के साथ एक अटूट हिस्सा बनना ही चाहिये।

मेरे प्यारे देशवासियों, आधुनिक होने की परिभाषाएँ बदलती चली जा रही हैं। इन दिनों एक नया dimension, एक नया parameter, आप कितने संस्कारी हो, कितने आधुनिक हो, आपकी thought-process कितनी modern है, ये सब जानने में एक तराजू भी काम में आने लगा है और वो है environment के प्रति आप कितने सजग हैं। आपके अपनी गतिविधियों में eco-friendly, environment-friendly व्यवहार है कि उसके खिलाफ़ है। समाज में अगर उसके खिलाफ़ है तो आज बुरा माना जाता है। और उसी का परिणाम आज मैं देख रहा हूँ कि इन दिनों ये गणेशोत्सव में भी eco-friendly गणपति, मानो एक बड़ा अभियान खड़ा हो गया है। अगर आप You Tube पर जा करके देखेंगे, हर घर में बच्चे गणेश जी बना रहे हैं, मिट्टी ला करके गणेश जी बना रहे हैं। उसमें रंग पुताई कर रहे हैं। कोई vegetable के colour लगा रहा है, कोई कागज़ के टुकड़े चिपका रहा है। भाँति-भाँति के प्रयोग हर परिवार में हो रहे हैं। एक प्रकार से environment consciousness का इतना बड़ा व्यापक प्रशिक्षण इस गणेशोत्सव में देखने को मिला है, शायद ही पहले कभी मिला हो। Media house भी बहुत बड़ी मात्रा में eco friendly गणेश की मूर्तियों के लिए लोगों को प्रशिक्षित कर रहे हैं, प्रेरित कर रहे हैं, guide कर रहे हैं। देखिए कितना बड़ा बदलाव आया है और ये सुखद बदलाव है। और जैसा मैंने कहा हमारा देश, करोड़ों - करोड़ों तेजस्वी दिमागों से भी भरा हुआ है। और बड़ा अच्छा लगता है जब कोई नये-नये innovation जानते हैं। मुझे किसी ने बताया कि कोई एक सज्जन हैं जो स्वयं engineer हैं, उन्होंने एक विशिष्ट प्रकार से मिट्टी इकट्ठी करके, उसका combination करके, गणेश जी बनाने की training लोगों की और वो एक छोटी से बाल्टी में, पानी में गणेश विसर्जन होता है तो उसी में रखते हैं तो पानी में तुरंत dilute हो जाती है। और उन्होंने यहाँ पर रुके नहीं हैं उसमें एक तुलसी का पौधा बो दिया और पौधे बो दिए। तीन वर्ष पूर्व जब स्वच्छता का अभियान प्रारंभ किया था, 2 अक्टूबर को उसको तीन साल हो जायेंगे। और, उसके सकारात्मक परिणाम नज़र आ रहे हैं। शौचालयों की coverage 39% से करीब-करीब 67% पहुँची है। 2 लाख 30 हजार से भी ज्यादा गाँव, खुले में शौच से अपने आपको मुक्त घोषित कर चुके हैं।

पिछले दिनों गुजरात में भयंकर बाढ़ आई। काफ़ी लोग अपनी जान गंवा बैठे लेकिन बाढ़ के बाद जब पानी कम हुआ तो हर जगह इतनी गन्दगी फैल गई थी। ऐसे समय में गुजरात के बनासकांठा ज़िले के धानेरा में, जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के कार्यकर्ताओं ने बाढ़ - प्रभावित 22 मंदिरों एवं 3 मस्जिदों की चरणबद्ध तरीके से साफ़-सफाई की। खुद का पसीना बहाया, सब लोग निकल पड़े। स्वच्छता के लिए एकता का उत्तम उदाहरण, हर किसी को प्रेरणा देने वाला ऐसा उदाहरण, जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के सभी कार्यकर्ताओं ने दिया। स्वच्छता के लिए समर्पण भाव से किया गया प्रयास, ये अगर हमारा स्थायी स्वभाव बन जाए तो हमारा देश कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियों, मैं आप सभी से एक आह्वान करता हूँ कि एक बार फिर 2 अक्टूबर गाँधी जयंती से 15-20 दिन पहले से ही 'स्वच्छता ही सेवा' - जैसे पहले कहते थे 'जल सेवा यही प्रभु सेवा', 'स्वच्छता ही सेवा' की एक मुहिम चलायें। पूरे देश में स्वच्छता के लिए माहौल बनाएं। जैसा अवसर मिले, जहाँ भी अवसर मिले, हम अवसर ढूँढ़ें। लेकिन हम सभी जुड़ें। इसे एक प्रकार से दिवाली की तैयारी मान लें, इसे एक प्रकार से नवरात्र की तैयारी मान लें, दुर्गा पूजा की तैयारी मान लें। श्रमदान करें। छुट्टी के दिन या रविवार को इकट्ठा हो कर एक-साथ काम करें। आस-पड़ोस की बस्ती में जायें, नज़दीक के गाँव में जायें, लेकिन एक आन्दोलन के रूप में करें। मैं सभी NGOs को, स्कूलों को, colleges को, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक नेतृत्व को, सरकार के अफसरों को, कलेक्टरों को, सरपंचों को हर किसी से आग्रह करता हूँ कि 2 अक्टूबर महात्मा गाँधी की जन्म-जयंती के पहले ही, 15 दिन, हम एक ऐसी स्वच्छता का वातावरण बनाएं, ऐसा स्वच्छता खड़ी कर दें कि 2 अक्टूबर सचमुच में गाँधी के सपनों वाली 2 अक्टूबर हो जाए। पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय, MyGov.in पर एक section बनाया है जहाँ शौचालय निर्माण के बाद आप अपना नाम और उस परिवार का नाम प्रविष्ट कर सकते हैं, जिसकी आपने मदद की है। मेरे social media के मित्र कुछ रचनात्मक अभियान चला सकते हैं और virtual world का धरातल पर काम हो, उसकी प्रेरणा बना सकते हैं। स्वच्छ-संकल्प से स्वच्छ-सिद्धि प्रतियोगिता, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय द्वारा ये अभियान जिसमें आप निबंध की स्पर्धा है, लघु-फिल्म बनाने की स्पर्धा है, चित्रकला-प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। इसमें आप विभिन्न भाषाओं में निबंध लिख सकते हैं और उसमें कोई उम्र की मर्यादा नहीं है, कोई age limit नहीं है। आप short film बना सकते हैं, अपने mobile से बना सकते हैं। 2-3 मिनट की फिल्म

बना सकते हैं जो स्वच्छता के लिए प्रेरणा दे। वो किसी भी language में हो सकती है, वो silent भी हो सकती है। ये जो प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे उसमें से जो best तीन लोग चुने जायेंगे, district level पर तीन होंगे, state level पर तीन होंगे उनको पुरस्कार दिया जाएगा। तो मैं हर किसी को निमंत्रण देता हूँ कि आइये, स्वच्छता के इस अभियान के इस रूप में भी आप जुड़ें।

मैं फिर एक बार कहना चाहता हूँ कि इस बार 2 अक्टूबर गाँधी जयंती को 'स्वच्छ 2 अक्टूबर' मनाने का संकल्प करें और इसके लिए 15 सितम्बर से ही 'स्वच्छता ही सेवा' इस मंत्र को घर-घर पहुंचायें। स्वच्छता के लिए कोई-न-कोई कदम उठाएँ। स्वयं परिश्रम करके इसमें हिस्सेदार बनें। आप देखिए, गाँधी जयंती की ये 2 अक्टूबर कैसी चमकेगी। आप कल्पना कर सकते हैं 15 दिन के सफाई के इस अभियान के बाद, 'स्वच्छता ही सेवा' के बाद, 2 अक्टूबर को जब हम गाँधी जयंती मनाएंगे तो पूज्य बापू को श्रद्धांजलि देने का हमारे भीतर कितना एक पवित्र आनंद होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं आज एक विशेष रूप से आप सब का ऋण स्वीकार करना चाहता हूँ। हृदय की गहराई से मैं आप का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, इसलिए नहीं कि इतने लम्बे अरसे तक आप 'मन की बात' से जुड़े रहे। मैं इसलिए आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, ऋण स्वीकार करना चाहता हूँ क्योंकि 'मन की बात' के इस कार्यक्रम के साथ देश के हर कोने से लाखों लोग जुड़ जाते हैं। सुनने वालों की संख्या तो करोड़ों में है, लेकिन लाखों लोग मुझे कभी पत्र लिखते हैं, कभी message देते हैं, कभी फोन पे सन्देश आ जाता है, मेरे लिए एक बहुत बड़ा खज़ाना है। देश के जन-जन के मन को जानने के लिए ये मेरे लिए एक बहुत बड़ा अवसर बन गया है। आप जितना 'मन की बात' का इंतज़ार करते हैं उससे ज्यादा मैं आपके संदेशों का इंतज़ार करता हूँ। मैं लालायित रहता हूँ क्योंकि आप की हर बात से मुझे कुछ सीखने को मिलता है। मैं जो कर रहा हूँ उसको कसौटी पर कसने का अवसर मिल जाता है। बहुत-सी बातों को नये तरीके से सोचने के लिए आपकी छोटी-छोटी बातें भी मुझे काम आती हैं और इसलिए मैं आपके इस योगदान के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूँ, आपका ऋण स्वीकार करता हूँ और मेरे प्रयास रहता है कि ज्यादा-से-ज्यादा आपकी बातों को मैं स्वयं देखूँ, सुनूँ, पढ़ूँ, समझूँ और ऐसी-ऐसी बातें आती हैं। अब देखिये, अब इस phone call से आप भी अपने आपको co-relate करते होंगे। आपको भी लगता होगा हाँ यार, आपने कभी ऐसी गलती की है। कभी-कभी तो कुछ चीज़ें हमारी आदत का ऐसा हिस्सा बन जाती हैं कि हमें लगता ही नहीं है कि हम ग़लत करते हैं।

“प्रधानमंत्री जी, मैं पूना से अपर्णा बोल रही हूँ। मैं अपनी एक सहेली के बारे में बताना चाहती हूँ। वो हमेशा लोगों की मदद करने की कोशिश करती है लेकिन उसकी एक आदत देखकर मैं हैरान हो जाती हूँ। मैं एक बार उसके साथ शॉपिंग करने मॉल गयी थी। एक साड़ी पर उसने दो हजार रुपये बड़े आराम से खर्च कर दिए और पीज़ा पर 450/- रुपये, जबकि मॉल तक जाने के लिए जो ऑटो लिया था, उस ऑटो वाले से बहुत देर तक पाँच रुपये के लिए मोल-भाव करती रही। वापस लौटते हुए रास्ते में सब्जी खरीदी और हर सब्जी पर फिर से मोल-भाव करके 4-5 रुपये बचाये। मुझे बहुत बुरा लगता है। हम बड़ी-बड़ी जगह एक बार भी बिना पूछे बड़े-बड़े भुगतान कर देते हैं और हमारे मेहनतकश भाई-बहनों से थोड़े से रुपयों के लिए झगड़ा करते हैं। उन पर अविश्वास करते हैं। आप अपनी 'मन की बात' में इस बारे में ज़रूर बताएँ।”

अब ये phone call सुनने के बाद, मुझे पक्का विश्वास है कि आप चौंक भी गये होंगे, चौकन्ने भी हो गये होंगे और हो सकता है आगे से ऐसी गलती न करने का मन में तय भी कर लिये होंगे। क्या आपको नहीं लगता है कि जब हम, हमारे घर के आस-पास कोई सामान बेचने के लिए आता है, कोई फेरी लगाने वाला आता है, किसी छोटे दुकानदार से, सब्जी बेचने वालों से हमारा संबंध आ जाता है, कभी ऑटो-रिक्शा वाले से संबंध आता है - जब भी हमारा किसी मेहनतकश व्यक्ति के साथ संबंध आता है तो हम उससे भाव का तोल-मोल करने लग जाते हैं, मोल-भाव करने लग जाते हैं - नहीं इतना नहीं, दो रुपया कम करो, पाँच रुपया कम करो। और हम ही लोग किसी बड़े restaurant में खाना खाने जाते हैं तो बिल में क्या लिखा है देखते भी नहीं हैं, धड़ाम से पैसे दे देते हैं। इतना ही नहीं showroom में साड़ी खरीदने जायें, कोई मोल-भाव नहीं करते हैं लेकिन किसी गरीब से अपना नाता आ जाये तो मोल-भाव किये बिना रहते नहीं हैं। गरीब के मन को क्या होता होगा, ये कभी आपने सोचा है ? उसके लिए सवाल दो रुपये - पांच रुपये का नहीं है। उसके हृदय को चोट पहुँचती है कि आपने वो गरीब है इसलिए उसकी ईमानदारी पर शक किया है। दो रुपया - पांच रुपया आपके जीवन में कोई फ़र्क नहीं पड़ता है लेकिन आपकी ये छोटी-सी आदत उसके मन को कितना गहरा धक्का लगाती होगी कभी ये सोचा है ? मैडम, मैं आप का आभारी हूँ आपने इतना हृदय को छूने वाला phone call करके एक message मुझे दिया। मुझे विश्वास है कि मेरे देशवासी भी गरीब के साथ ऐसा व्यवहार करने की आदत होगी तो ज़रूर छोड़ देंगे।

मेरे प्यारे नौजवान साथियो, 29 अगस्त को पूरा देश राष्ट्रीय खेल-दिवस के रूप में मनाता है। ये महान hockey player और हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी का जन्मदिवस है। हॉकी के लिए उनका योगदान अतुलनीय था। मैं इस बात का स्मरण इसलिए करा रहा हूँ कि मैं चाहता हूँ कि हमारे देश की नई पीढ़ी, खेल से जुड़े। खेल हमारे जीवन का हिस्सा बने। अगर हम दुनिया के युवा देश हैं तो हमारी ये तरुणई खेल के मैदान में भी नज़र आनी चाहिए। Sports यानि physical fitness, mental alertness, personality enhancement में समझता हूँ कि इससे ज्यादा क्या चाहिए? खेल एक प्रकार

से दिलों के मेल की एक बहुत बड़ी जड़ी-बूटी है। हमारी देश की युवा पीढ़ी खेल जगत में आगे आए और आज computer के युग में तो मैं आगाह भी करना चाहूंगा कि playing field, play-station से ज्यादा महत्वपूर्ण है। computer पर FIFA खेलिये लेकिन बाहर मैदान में भी तो कभी football के साथ करतब करके दिखाइये। computer पर cricket खेलते होंगे लेकिन खुले मैदान में आसमान के नीचे cricket खेलने का आनंद कुछ और होता है। एक समय था जब परिवार के बच्चे बाहर जाते थे तो माँ पहले पूछती थी कि तुम कब वापिस आओगे। आज हालत ये हो गई है कि बच्चे घर में आते ही एक कोने में या तो cartoon film देखने में लग जाते हैं या तो mobile game पर चिपक जाते हैं और तब माँ को चिल्ला करके कहना पड़ता है - तू कब बाहर जाएगा। वक्त-वक्त की बात है, वो भी एक ज़माना था जब माँ बेटे को कहती थी कि तुम कब आओगे और आज ये हाल है कि माँ को कहना पड़ता है बेटा तुम बाहर कब जाओगे?

नौजवान दोस्तों, खेल मंत्रालय ने खेल प्रतिभा की खोज और उन्हें निखारने के लिए एक Sports Talent Search Portal तैयार किया है, जहाँ पूरे देश से कोई भी बच्चा जिसने खेल के क्षेत्र में कुछ उपलब्धि हासिल की है, उनमें Talent हो - वो इस portal पर अपना Bio-Data या video upload कर सकता है। Selected emerging players को खेल मंत्रालय training देगा और मंत्रालय कल ही इस portal को launch करने वाला है। हमारे नौजवानों के लिए तो खुशी की खबर है कि भारत में 6 से 28 अक्टूबर तक FIFA Under 17 World Cup का आयोजन होने जा रहा है। दुनिया भर से 24 टीमों भारत को अपना घर बनाने जा रही हैं।

आइये, विश्व से आने वाले हमारे नौजवान मेहमानों का, खेल के उत्सव के साथ स्वागत करें, खेल को enjoy करें, देश में एक माहौल बनाएं। जब मैं आज खेल की बात कर रहा हूँ तो मैं पिछले हफ्ते एक मेरे मन को बड़ी ही छू जाने वाली घटना घटी। देशवासियों के साथ share करना चाहता हूँ। मुझे बहुत ही छोटी आयु की कुछ बेटियों से मिलने का मौका मिला और उसमें से कुछ बेटियाँ तो हिमालय में पैदा हुई थी। समंदर से जिनका कभी नाता भी नहीं था। ऐसी हमारी देश की छः बेटियाँ जो Navy में काम करती हैं - उनका जज़्बा, उनका हौसला हम सब को प्रेरणा देने वाला है। ये छः बेटियाँ, एक छोटी-सी boat लेकर करके INS Tarini (तारिणी) उसको लेकर कर के समुन्द्र पार करने के लिए निकल पड़ेगी। इस अभियान का नाम दिया गया है 'नाविका सागर परिक्रमा' और वे पूरे विश्व का भ्रमण करके महीनों के बाद, कई महीनों के बाद भारत लौटेंगी। कभी एक साथ 40-40 दिन पानी में बिताएंगी। कभी-कभी 30-30 दिन पानी में बिताएंगी। समुन्द्र की लहरों के बीच साहस के साथ हमारी ये छः बेटियाँ और ये विश्व में पहली घटना हो रही है। कौन हिंदुस्तानी होगा जिन्हें हमारी इन बेटियों पर नाज़ न हो! मैं इन बेटियों के जज़्बे को सलाम करता हूँ और मैंने उनसे कहा है कि वो पूरे देश के साथ अपने अनुभवों को साझा करें। मैं भी **NarendraModi App** पर उनके अनुभवों के लिए एक अलग व्यवस्था करूँगा ताकि आप जरूर उसे पढ़ पाएं क्योंकि ये एक प्रकार से ये साहस कथा है, स्वानुभव की कथा होगी और मुझे खुशी होगी इन बेटियों की बातों को आप तक पहुंचाने में। मेरी इन बेटियों को बहुत-बहुत शुभकामना है, बहुत-बहुत आशीर्वाद है।

मेरे प्यारे देशवासियों, 5 सितम्बर को हम सब शिक्षक दिवस मनाते हैं। हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन जी का जन्मदिवस है। वे राष्ट्रपति थे लेकिन जीवन भर अपने आप को एक शिक्षक के रूप में ही वो प्रस्तुत करते थे। वो हमेशा शिक्षक के रूप में ही जीना पसंद करते थे। वे शिक्षा के प्रति समर्पित थे। एक अध्येता, एक राजनयिक, भारत के राष्ट्रपति लेकिन हर पल एक जीते-जागते शिक्षक। मैं उनको नमन करता हूँ।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था It is the supreme art of the teacher to awaken joy in creative expression and knowledge. अपने छात्रों में सृजनात्मक भाव और ज्ञान का आनंद जगाना ही एक शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण गुण है। इस बार जब हम शिक्षक दिवस मनाएँ। क्या हम सब मिलकर के एक संकल्प कर सकते हैं? एक mission mode में एक अभियान चला सकते हैं? Teach to Transform, Educate to Empower, Learn to Lead इस संकल्प के साथ इस बात को आगे बढ़ा सकते हैं क्या? हर किसी को 5 साल के लिए, किसी संकल्प से बांधिए, उसे सिद्ध करने का रास्ता दिखाइये और 5 साल में वो पाकर के रहे, जीवन में सफल होने का आनंद पाये - ऐसा माहौल हमारे स्कूल, हमारे कॉलेज, हमारे शिक्षक, हमारे शिक्षा संस्थान ये कर सकते हैं और हमारे देश में जब हम transformation की बात करते हैं तो जैसे परिवार में माँ की याद आती है वैसे ही समाज में शिक्षक की याद आती है। transformation में शिक्षक की बहुत बड़ी भूमिका रहती है। हर शिक्षक के जीवन में कहीं-न-कहीं ऐसी घटनाएँ हैं कि जिसके सहज प्रयासों से किसी की जिन्दगी के transformation में सफलता मिली होगी। अगर हम सामूहिक प्रयास करेंगे तो राष्ट्र के transformation में हम बहुत बड़ी भूमिका अदा करेंगे। आइये teach to transform इस मंत्र को लेकर के चल पड़ें।

“प्रणाम प्रधानमंत्री जी। मेरा नाम है डॉक्टर अनन्या अवस्थी। मैं मुम्बई शहर की निवासी हूँ और Howard University के India Research Centre के लिये काम करती हूँ। एक researcher के तौर पर मेरी विशेष रुचि रही है वित्तीय समावेश में, जिसको हम financial inclusion इनसे related social schemes को लेकर और मेरा आपसे प्रश्न ये है कि 2014 में जो जनधन योजना launch हुई क्या आप कह सकते हैं, क्या आँकड़े ये दिखाते हैं कि आज तीन साल बाद भारतवर्ष

financially ज्यादा secure है या ज्यादा सशक्त है और क्या ये सशक्तिकरण और सुविधायें हमारी महिलाओं को, किसानों को, मजदूरों को गाँव और कस्बों तक भी प्राप्त हो पायी हैं। धन्यवाद।”

मेरे प्यारे देशवासियो, ‘प्रधानमंत्री जन-धन योजना’ financial inclusion, ये भारत में ही नहीं पूरे विश्व में आर्थिक जगत के पंडितों की चर्चा का विषय रहा है। 28 अगस्त, 2014 को मन में एक सपना ले करके इस अभियान को प्रारंभ किया था। कल 28 अगस्त को इस ‘प्रधानमंत्री जन-धन योजना’ के अभियान को तीन साल हो रहे हैं। 30 करोड़ नये परिवारों को इसके साथ जोड़ा है, bank account खोला है। दुनिया के कई देशों की आबादी से भी ज्यादा ये नंबर है। आज मुझे एक बहुत बड़ा समाधान है कि तीन साल के भीतर-भीतर समाज के उस आखिरी छोर पर बैठा हुआ मेरा गरीब भाई, देश की अर्थव्यवस्था के मूल-धारा का हिस्सा बना है, उसकी आदत बदली है, वो bank में आने-जाने लगा है, वो पैसों की बचत करने लगा है, वो पैसों की सुरक्षा महसूस कर रहा है। कभी पैसे हाथ में रहते हैं, जेब में रहते हैं, घर में हैं तो फ़ालतू खर्च करने का मन कर जाता है। अब एक संयम का माहौल बना है और धीरे-धीरे उसको भी लगने लगा है कि पैसे कहीं बच्चों के काम आ जायेंगे। आने वाले दिनों में कोई अच्छा काम करना है तो पैसे काम आयेगें। इतना ही नहीं, जो गरीब अपने जेब में RuPay Card देखता है तो अमीरों की बराबरी में अपने आपको पाता है कि उनके जेब में भी credit card है, मेरी जेब में भी RuPay Card है - वो एक सम्मान का भाव महसूस करता है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना में हमारे गरीबों के द्वारा करीब 65 हजार करोड़ रुपया बैंकों में जमा हुआ है। एक प्रकार से गरीब की ये बचत है, ये आने वाले दिनों में उसकी ताकत है। और प्रधानमंत्री जन-धन योजना के साथ जिसका account खुला, उसको insurance का भी लाभ मिला है। ‘प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना’, ‘प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना’ - एक रुपया, तीस रुपया बहुत मामूली सा premium आज वो गरीबों की ज़िन्दगी में एक नया विश्वास पैदा करता है। कई परिवारों में, एक रुपये के बीमे के कारण जब गरीब आदमी पर संकट आया, परिवार के मुखिया का जीवन अंत हो गया, कुछ ही दिनों में उसे 2 लाख रुपये मिल गए। ‘प्रधानमंत्री मुद्रा योजना’, ‘Start Up योजना’, ‘Stand Up योजना’ - दलित हो, आदिवासी हो, महिला हो, पढ़-लिख करके निकला हुआ नौज़वान हो, अपने पैरों पर खड़े होकर कुछ करने का इरादा वाले नौज़वान हो, करोड़ों-करोड़ों नौज़वानों को ‘प्रधानमंत्री मुद्रा योजना’ से, बैंकों से बिना कोई गारन्टी पैसे मिले और वो स्वयं अपने पैरों पर खड़े हुए इतना ही नहीं, हर किसी ने एक-आध, एक-आध दो को रोज़गार देने का सफल प्रयास भी किया है। पिछले दिनों बैंक के लोग मुझे मिले थे, जन-धन योजना के कारण, insurance के कारण, RuPay Card के कारण, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के कारण, सामान्य लोगों को कैसा लाभ हुआ है उसका उन्होंने सर्व करवाया और बड़ी प्रेरक घटनायें मिली। आज इतना समय नहीं है लेकिन मैं जरूर ऐसी घटनाओं को bank के लोगों से कहूँगा कि वो MyGov.in पर उसको upload करें, लोग पढ़ें, लोगों को उससे प्रेरणा मिलेगी कि कोई योजना, व्यक्ति के जीवन में कैसे transformation लाता है, कैसे नयी ऊर्जा भरता है, कैसे नया विश्वास भरता है, इसके सैकड़ों उदाहरण मेरे सामने आये हैं। आप तक पहुँचाने का मैं पूरा प्रयास करूँगा और ऐसी प्रेरक घटना है कि media के लोग भी इसका पूरा लाभ उठा सकते हैं। वे भी ऐसे लोगों से interview करके नई पीढ़ी को नई प्रेरणा दे सकते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, फिर एक बार आपको मिच्छामी दुक्कड़म। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो/

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

24-सितम्बर-2017 11:40 IST

24 सितम्बर, 2017 को आकाशवाणी से 'मन की बात' कार्यक्रम के 36वें संस्करण में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, आप सबको नमस्कार । आकाशवाणी के माध्यम से 'मन की बात' करते-करते तीन वर्ष पूरे हो गए हैं। आज ये 36वाँ episode है। 'मन की बात' एक प्रकार से भारत की जो सकारात्मक शक्ति है, देश के कोने-कोने में जो भावनाएँ भरी पड़ी हैं, इच्छाएँ हैं, अपेक्षाएँ हैं, कहीं-कहीं शिकायत भी है - एक जन-मन में जो भाव उमड़ते रहते हैं 'मन की बात' ने उन सब भावों से मुझे जुड़ने का एक बड़ा अद्भुत अवसर दिया और मैंने कभी ये नहीं कहा है कि मेरे मन की बात है। ये 'मन की बात' देशवासियों के मन से जुड़ी हैं, उनके भाव से जुड़ी हैं, उनकी आशा-अपेक्षाओं से जुड़ी हुई हैं। और जब 'मन की बात' में बातें मैं बताता हूँ तो उसे देश के हर कोने से जो लोग मुझे अपनी बातें भेजते हैं, आपको तो शायद मैं बहुत कम कह पाता हूँ लेकिन मुझे तो भरपूर खज़ाना मिल जाता है। चाहे email पर हो, टेलीफोन पर हो, mygov पर हो, NarendraModiApp पर हो, इतनी बातें मेरे तक पहुँचती हैं । अधिकतम तो मुझे प्रेरणा देने वाली होती हैं। बहुत सारी, सरकार में सुधार के लिए होती हैं । कहीं व्यक्तिगत शिकायत भी होती हैं तो कहीं सामूहिक समस्या पर ध्यान आकर्षित किया जाता है । और मैं तो महीने में एक बार आधा घंटा आपका लेता हूँ, लेकिन लोग, तीसों दिन 'मन की बात' के ऊपर अपनी बातें पहुँचाते हैं । और उसका परिणाम ये आया है कि सरकार में भी संवेदनशीलता, समाज के दूर-सुदूर किसी-किसी शक्तियाँ पड़ी हैं, उस पर उसका ध्यान जाना, ये सहज अनुभव आ रहा है। और इसलिए 'मन की बात' की तीन साल की ये यात्रा देशवासियों की, भावनाओं की, अनुभूति की एक यात्रा है। और शायद इतने कम समय में देश के सामान्य मानव के भावों को जानने-समझने का जो मुझे अवसर मिला है और इसके लिए मैं देशवासियों का बहुत आभारी हूँ। 'मन की बात' में मैंने हमेशा आचार्य विनोबा भावे की उस बात को याद रखा है। आचार्य विनोबा भावे हमेशा कहते थे 'अ-सरकारी, असरकारी'। मैंने भी 'मन की बात' को, इस देश के जन को केंद्र में रखने का प्रयास किया है। राजनीति के रंग से उसको दूर रखा है। तत्कालीन, जो गर्मी होती है, आक्रोश होता है, उसमें भी बह जाने के बजाय, एक स्थिर मन से, आपके साथ जुड़े रहने का प्रयास किया है। मैं ज़रूर मानता हूँ, अब तीन साल के बाद social scientists, universities, reseach scholars, media experts ज़रूर इसका analysis करेंगे। plus-minus हर चीज़ को उजागर करेंगे । और मुझे विश्वास है कि ये विचार-विमर्श भविष्य 'मन की बात' के लिए भी अधिक उपयोगी होगा, उसमें एक नयी चेतना, नयी ऊर्जा मिलेगी। और मैंने जब एक बार 'मन की बात' में कही थी कि हमें भोजन करते समय चिंता करनी चाहिये कि जितनी ज़रूरत है उतना ही लें, हम उसको बर्बाद न करें। लेकिन उसके बाद मैंने देखा कि देश के हर कोने से मुझे इतनी चिट्ठियाँ आयी, अनेक सामाजिक संगठन, अनेक नवयुवक पहले से ही इस काम को कर रहे हैं। जो अन्न थाली में छोड़ दिया जाता है उसको इकट्ठा करके, उसका सदुपयोग कैसे हो इसमें काम करने वाले इतने लोग मेरे इतने ध्यान में आये, मेरे मन को इतना बड़ा संतोष हुआ, इतना आनंद हुआ।

एक बार मैंने 'मन की बात' में महाराष्ट्र के एक retired teacher श्रीमान् चन्द्रकान्त कुलकर्णी की बात कही थी, जो अपने pension में से, सोलह हजार रुपये का pension मिलता था उसमें से पाँच हजार रुपया वो, 51 post-dated cheque देकर के, स्वच्छता के लिये उन्होंने दान दे दिया था। और उसके बाद तो मैंने देखा कि स्वच्छता के लिए, इस प्रकार के काम करने के लिए कितने लोग आगे आए।

एक बार मैंने हरियाणा के एक सरपंच की 'selfie with daughter' को देखा और मैंने 'मन की बात' में सबके सामने रखा। देखते ही देखते न सिर्फ़ भारत में, पूरे विश्व में 'selfie with daughter' एक बड़ा अभियान चल पड़ा। ये सिर्फ़ social media का मुद्दा नहीं है। हर बेटी को एक नया आत्मविश्वास, नया गर्व पैदा करने वाली ये घटना बन गयी। हर माँ-बाप को लगने लगा कि मैं अपनी बेटी के साथ selfie लूँ। हर बेटी को लगने लगा कि मेरा कोई माहात्म्य है, मेरा कोई महत्व है।

पिछले दिनों मैं भारत सरकार के tourism department के साथ बैठा था। मैंने जब tour पर जाने वाले लोगों से कहा था कि आप incredible India पर, जहाँ भी जाएँ वहाँ की फोटो भेजिये। लाखों तस्वीरें, भारत के हर कोने की, एक प्रकार से tourism क्षेत्र में काम करने वालों की एक बहुत बड़ी अमानत बन गयी। छोटी-सी घटना कितना बड़ा आन्दोलन खड़ा कर देती है, ये 'मन की बात' में मैंने अनुभव किया है। आज मन कर गया, क्योंकि जब सोच रहा था तीन साल हो गये, तो पिछले तीन साल की कई घटनायें मेरे मन-मंदिर में छा गयीं। देश सही दिशा में जाने के लिए हर पल अग्रसर है। देश का

हर नागरिक दूसरे की भलाई के लिए, समाज की अच्छाई के लिए, देश की प्रगति के लिए, कुछ-न-कुछ करना चाहता है ये मेरे तीन साल के 'मन की बात' के अभियान में, मैंने देशवासियों से जाना है, समझा है, सीखा है। किसी भी देश के लिए ये सबसे बड़ी पूँजी होती है, एक बहुत बड़ी ताकत होती है। मैं हृदय से देशवासियों को नमन करता हूँ।

मैंने एक बार 'मन की बात' में खादी के विषय में चर्चा की थी। और खादी एक वस्त्र नहीं, एक विचार है। और मैंने देखा कि इन दिनों खादी के प्रति काफी रुचि बढ़ी है और मैंने स्वाभाविक रूप से कहा था कि मैं कोई खादीधारी बनने के लिए नहीं कह रहा हूँ लेकिन भाँति-भाँति के fabric होते हैं तो एक खादी क्यों न हो? घर में चादर हो, रुमाल हो, curtain हो। अनुभव ये आया है कि युवा-पीढ़ी में खादी का आकर्षण बढ़ गया है। खादी की बिक्री बढ़ी है और उसके कारण गरीब के घर में सीधा-सीधा रोजगारी का संबंध जुड़ गया है। 2 अक्टूबर से खादी में discount दिया जाता है, काफी छूट-रियायत मिलती है। मैं फिर एक बार आग्रह करूँगा, खादी का जो अभियान चला है उसको हम और आगे चलायें, और बढ़ायें। खादी खरीद करके गरीब के घर में दिवाली का दीया जलायें, इस भाव को लेकर के हम काम करें। हमारे देश के गरीब को इस कार्य से एक ताकत मिलेगी और हमें करना चाहिए। और इस खादी के प्रति रुचि बढ़ने के कारण खादी क्षेत्र में काम करने वालों में, भारत सरकार में खादी से संबंधित लोगों में एक नये तरीके से सोचने का उत्साह भी बढ़ा है। नई technology कैसे लाएँ, उत्पादन क्षमता कैसे बढ़ाएँ, solar-हथकरघे कैसे ले आएँ? पुरानी जो विरासत थी जो बिलकुल ही 20-20, 25-25, 30-30 साल से बंद पड़ी थी उसको पुनर्जीवित कैसे किया जाए।

उत्तर प्रदेश में, वाराणसी सेवापुर में, अब सेवापुरी का खादी आश्रम 26 साल से बंद पड़ा था लेकिन आज पुनर्जीवित हो गया। अनेक प्रकार की प्रवर्तियों को जोड़ा गया। अनेक लोगों को रोजगार के नये अवसर पैदा किये। कश्मीर में पम्पोर में खादी एवं ग्रामोद्योग ने बंद पड़े अपने प्रशिक्षण केंद्र को फिर से शुरू किया और कश्मीर के पास तो इस क्षेत्र में देने के लिए बहुत कुछ है। अब ये प्रशिक्षण केंद्र फिर से शुरू होने के कारण नई पीढ़ी को आधुनिक रूप से निर्माण कार्य करने में, बनने में, नयी चीज़ें बनाने में एक मदद मिलेगी और मुझे अच्छा लग रहा है कि जब बड़े-बड़े Corporate House भी दिवाली में जब gift देते हैं तो इन दिनों खादी की चीज़ें देना शुरू किये हैं। लोग भी एक दूसरे को gift के रूप में खादी की चीज़ें देना शुरू किये हैं। एक सहज रूप से, चीज़ कैसे आगे बढ़ती है ये हम सब अनुभव करते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों, पिछले महीने 'मन की बात' में ही हम सब ने एक संकल्प किया था और हमने तय किया था कि गाँधी-जयंती से पहले 15 दिन देश-भर में स्वच्छता का उत्सव मनायेंगे। स्वच्छता से जन-मन को जोड़ेंगे। हमारे आदरणीय राष्ट्रपति जी ने इस कार्य का आरंभ किया और देश जुड़ गया। अबाल-वृद्ध, पुरुष हो, स्त्री हो, शहर हो, गाँव हो, हर कोई आज इस स्वच्छता-अभियान का हिस्सा बन गया है। और जब मैं कहता हूँ 'संकल्प से सिद्धि', ये स्वच्छता-अभियान एक संकल्प-सिद्धि की ओर कैसे आगे बढ़ रहा है हम अपनी आँखों के सामने देख रहे हैं। हर कोई इसको स्वीकारता है, सहयोग करता है और साकार करने के लिए कोई न कोई योगदान देता है। मैं आदरणीय राष्ट्रपति जी का तो आभार मानता हूँ लेकिन साथ-साथ देश के हर वर्ग ने इसको अपना काम माना है। हर कोई इसके साथ जुड़ गया है। चाहे खेल- जगत के लोग हों, सिने-जगत के लोग हों, academicians हों, स्कूल हों, कॉलेज हों, university हों, किसान हों, मजदूर हों, अफसर हों, बाबू हों, पुलिस हों, फौज के जवान हों - हर कोई इसके साथ जुड़ गया है। सार्वजनिक स्थानों पर एक दबाव भी पैदा हुआ है कि अब सार्वजनिक स्थान गंदे हों तो लोग टोकते हैं, वहाँ काम करने वालों को भी एक दबाव महसूस होने लगा है। मैं इसे अच्छा मानता हूँ और मेरे लिए खुशी है कि 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के सिर्फ पहले चार दिन में ही करीब-करीब 75 लाख से ज्यादा लोग, 40 हजार से ज्यादा initiative लेकर के गतिविधियों में जुड़ गए और कुछ तो लोग मैंने देखा है कि लगातार काम कर रहे हैं, परिणाम लाकर के रहने का फैसला ले करके काम कर रहे हैं। इस बार एक और भी चीज़ देखी - एक तो होता है कि हम कहीं स्वच्छता करें, दूसरा होता है हम जागरूक रह करके गन्दगी न करें, लेकिन स्वच्छता को अगर स्वभाव बनाना है तो एक वैचारिक आंदोलन भी ज़रूरी होता है। इस बार 'स्वच्छता ही सेवा' के साथ कई प्रतियोगितायें हुईं। ढाई करोड़ से ज्यादा बच्चों ने स्वच्छता के निबंध-स्पर्धा में भाग लिया। हजारों बच्चों ने paintings बनायीं। अपनी-अपनी कल्पना से स्वच्छता को लेकर के चित्र बनाये। बहुत से लोगों ने कवितायें बनायीं और इन दिनों तो मैं social media पर ऐसे जो हमारे नन्हें साथियों ने, छोटे-छोटे बालकों ने चित्र भेजे हैं वो मैं post भी करता हूँ, उनका गौरवगान करता हूँ। जहाँ तक स्वच्छता की बात आती है तो मैं media के लोगों का आभार मानना कभी भूलता नहीं हूँ। इस आंदोलन को उन्होंने बहुत पवित्रतापूर्वक आगे बढ़ाया है। अपने-अपने तरीके से, वे जुड़ गए हैं और एक सकारात्मक वातावरण बनाने में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया है और आज भी वो अपने-अपने तरीके से स्वच्छता के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। हमारे देश का electronic media, हमारे देश का print media देश की कितनी बड़ी सेवा कर सकता है ये 'स्वच्छता ही सेवा' आंदोलन में हम देख पाते हैं। अभी कुछ दिन पहले मुझे किसी ने ध्यान आकर्षित किया श्रीनगर के 18 साल के नौजवान बिलाल डार के संबंध में। और आपको जान करके खुशी होगी कि श्रीनगर नगर निगम ने बिलाल डार को स्वच्छता के लिए अपना Brand Ambassador बनाया है और जब Brand Ambassador की बात आती है तो आपको लगता होगा कि शायद वो सिने-कलाकार होगा, शायद वो खेल-जगत का हीरो होगा, जी नहीं। बिलाल डार स्वयं 12-13 साल की अपनी उम्र से, पिछले 5-6 साल से स्वच्छता में लग गया है। एशिया की सबसे बड़ी झील श्रीनगर के पास वहाँ प्लास्टिक हो, पॉलिथीन हो, used bottle हो, कूड़ा-कचरा हो, बस वो साफ़ करता रहता है। उसमें से कुछ कमाई भी

कर लेता है। क्योंकि उसके पिता जी की बहुत छोटी आयु में कैंसर में मृत्यु हो गई लेकिन उसने अपना जीवन आजीविका के साथ-साथ स्वच्छता के साथ जोड़ दिया। एक अनुमान है कि बिलाल ने सालाना 12 हजार किलो से ज़्यादा कूड़ा-कचरा साफ़ किया है। श्रीनगर नगर निगम को भी मैं बधाई देता हूँ कि स्वच्छता के प्रति इस पहल के लिए और Ambassador के लिए उनकी इस कल्पना के लिए, क्योंकि श्रीनगर एक tourist destination है और हिन्दुस्तान का हर नागरिक श्रीनगर जाने का मन करता है उसका, और वहाँ सफ़ाई को इतना बल मिले ये अपने आप में बहुत बड़ी बात है। और मुझे खुशी है कि उन्होंने बिलाल को सिर्फ़ Brand Ambassador बनाया ऐसा नहीं है, सफ़ाई करने वाले बिलाल उसको निगम ने इस बार गाड़ी दी है, uniform दिया है और वो अन्य इलाकों में भी जाकर के लोगों को स्वच्छता के लिए शिक्षित करता है, प्रेरित करता है और परिणाम लाने तक पीछे लगा रहता है। बिलाल डार, आयु छोटी है लेकिन स्वच्छता में रुचि रखने वाले हर किसी के लिए प्रेरणा का कारण है। मैं बिलाल डार को बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, इस बात को हमें स्वीकार करना होगा कि भावी इतिहास, इतिहास की कोख में जन्म लेता है और जब इतिहास की बात आती है तो महापुरुष याद आना बहुत स्वाभाविक है। ये अक्टूबर महीना हमारे इतने सारे महापुरुषों को स्मरण करने का महीना है। महात्मा गाँधी से लेकर के सरदार पटेल तक इसी अक्टूबर में इतने महापुरुष हमारे सामने हैं कि जिन्होंने 20वीं सदी और 21वीं सदी के लिए हम लोगों को दिशा दी, हमारा नेतृत्व किया, हमारा मार्गदर्शन किया और देश के लिए उन्होंने बहुत कष्ट झेले। दो अक्टूबर को महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री जी की जन्म जयंती है तो 11 अक्टूबर को जयप्रकाश नारायण और नानाजी देशमुख की जन्म-जयंती है और 25 सितम्बर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्म-जयंती है। नानाजी और दीनदयाल जी की तो ये शताब्दी का भी वर्ष है। और इन सभी महापुरुषों का एक केंद्र-बिंदु क्या था? एक बात common थी और वो देश के लिए जीना, देश के लिए कुछ करना और मात्र उपदेश नहीं, अपने जीवन के द्वारा करके दिखाना। गाँधी जी, जयप्रकाश जी, दीनदयाल जी ये ऐसे महापुरुष हैं जो सत्ता के गलियारों से कोसो दूर रहे हैं, लेकिन जन-जीवन के साथ पल-पल जीते रहे, जूझते रहे और 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय', कुछ-न-कुछ करते रहे। नानाजी देशमुख राजनीतिक जीवन को छोड़ करके ग्रामोदय में लग गए थे और जब आज उनका शताब्दी-वर्ष मनाते हैं तो उनके ग्रामोदय के काम के प्रति आदर होना बहुत स्वाभाविक है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्रीमान अब्दुल कलाम जी जब नौजवानों से बात करते थे तो हमेशा नानाजी देशमुख के ग्रामीण विकास की बातें किया करते थे। बड़े आदर से उल्लेख करते थे और वो स्वयं भी नानाजी के इस काम को देखने के लिए गाँव में गए थे। दीनदयाल उपाध्याय जी जैसे महात्मा गाँधी समाज के आखिरी छोर में बैठे हुए इंसान की बात करते थे। दीनदयाल जी भी समाज के आखिरी छोर पर बैठे हुए गरीब, पीड़ित, शोषित, वंचित की ही और उसके जीवन में बदलाव लाने की - शिक्षा के द्वारा, रोज़गार के द्वारा किस प्रकार से बदलाव लाया जाये, इसकी चर्चा करते थे। इन सभी महापुरुषों को स्मरण करना ये उनके प्रति उपकार नहीं है, ये महापुरुषों का स्मरण इसलिए करते हैं कि हमें आगे का रास्ता मिलता रहे, आगे की दिशा मिलती रहे।

अगले 'मन की बात' में, मैं जरूर सरदार वल्लभ भाई पटेल के विषय में कहूँगा, लेकिन 31 अक्टूबर पूरे देश में Run for Unity 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत'। देश के हर शहर में, हर नगर में बहुत बड़ी मात्रा में Run for Unity के कार्यक्रम होने चाहिए और मौसम भी ऐसा है कि दौड़ने का मज़ा आता है - सरदार साहब जैसी लौह-शक्ति पाने के लिए ये भी तो ज़रूरी है। और सरदार साहब ने देश को एक किया था। हमने भी एकता के लिए दौड़ करके एकता के मंत्र को आगे बढ़ाना चाहिए।

हम लोग बहुत स्वाभाविक रूप से कहते हैं - विविधता में एकता, भारत की विशेषता। विविधता का हम गौरव करते हैं लेकिन क्या कभी आपने इस विविधता को अनुभव करने का प्रयास किया है क्या? मैं बार-बार हिन्दुस्तान के मेरे देशवासियों से कहना चाहूँगा और खास करके मेरी युवा-पीढ़ी को कहना चाहूँगा कि हम एक जागृत-अवस्था में हैं। इस भारत की विविधताओं को अनुभव करें, उसको स्पर्श करें, उसकी महक को अनुभव करें। आप देखिये, आपके भीतर के व्यक्तित्व के विकास के लिए भी हमारे देश की ये विविधताएँ एक बहुत बड़ी पाठशाला का काम करती हैं। Vacation है, दिवाली के दिन है, हमारे देश में चारों तरफ कहीं-न-कहीं जाने का स्वभाव बना हुआ है, लोग जाते हैं tourist के नाते और बहुत स्वाभाविक है। लेकिन कभी-कभी चिंता होती है कि हम अपने देश को तो देखते नहीं हैं, देश की विविधताओं को जानते नहीं, समझते नहीं, लेकिन चका-चौंध के प्रभाव में आकर के विदेशों में ही tour करना पसंद करना शुरू किये हैं। आप दुनिया में जायें मुझे कोई एतराज़ नहीं है, लेकिन कभी अपने घर को भी तो देखें! उत्तर-भारत के व्यक्ति को पता नहीं होगा कि दक्षिण-भारत में क्या है? पश्चिम-भारत के व्यक्ति को पता नहीं होगा कि पूर्व-भारत में क्या है? हमारा देश कितनी विविधताओं से भरा हुआ है।

महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक, स्वामी विवेकानंद, हमारे पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी अगर उनकी बातों में देखोगे तो एक बार बात आती है कि जब उन्होंने भारत-भ्रमण किया तब उनको भारत को देखने-समझने में और उसके लिए जीने-मरने के लिए एक नई प्रेरणा मिली। इन सभी महापुरुषों ने भारत का व्यापक भ्रमण किया। अपने कार्य के प्रारंभ में

उन्होंने भारत को जानने, समझने का प्रयास किया। भारत को अपने आप में जीने की कोशिश की। क्या हम, हमारे देश के भिन्न-भिन्न राज्यों को, भिन्न-भिन्न समाजों को, समूहों को, उनके रीति-रिवाजों को, उनकी परम्परा को, उनके पहर्वेश (पहनावे) को, उनके खान-पान को, उनकी मान्यताओं को एक विद्यार्थी के रूप में सीखने का, समझने का, जीने का प्रयास कर सकते हैं?

Tourism में value addition तभी होगा कि जब हम सिर्फ मुलाकाती नहीं, हम एक विद्यार्थी के तौर पर उसका पाना-समझना-बनने का प्रयास करें। मेरा स्वयं का अनुभव है मुझे हिंदुस्तान के पाँच सौ से अधिक district में जाने का मौका मिला होगा। साढ़े चार सौ से अधिक district तो ऐसे होंगे जहाँ मुझे रात्रि-मुकाम का अवसर मिला है और आज जब मैं भारत में इस दायित्व को संभाल रहा हूँ तो मेरे उस भ्रमण का अनुभव मुझे बहुत काम आता है। चीजों को समझने में मुझे बहुत सुविधा मिलती है। आपसे भी मेरा आग्रह है कि आप इस विशाल भारत को "विविधता में एकता" सिर्फ नारा नहीं, हमारी अपार-शक्ति का ये भंडार है, इसको अनुभव कीजिये। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का सपना इसमें निहित है। खान-पान की कितनी varieties हैं! पूरे जीवन भर हर दिन एक-एक नई variety अगर खाते रहें तो भी repetition नहीं होगा। अब ये हमारी tourism की बड़ी ताकत है। मैं आग्रह करूँगा कि इस छुट्टियों में आप सिर्फ घर के बाहर जाएँ ऐसा नहीं, change के लिए निकल पड़ें ऐसा नहीं - कुछ जानने- समझने-पाने के इरादे से निकलिए। भारत को अपने भीतर आत्मसात् कीजिये। कोटि-कोटि जनों की विविधताओं को भीतर आत्मसात् कीजिये। इन अनुभवों से आपका जीवन समृद्ध हो जायेगा। आपकी सोच का दायरा विशाल हो जायेगा। और अनुभव से बड़ा शिक्षक कौन होता है! सामान्य तौर पर अक्टूबर से मार्च तक का समय ज्यादातर पर्यटन का रहता है। लोग जाते हैं। मुझे विश्वास है कि इस बार भी अगर आप जायेंगे तो मेरे उस अभियान को और आगे बढ़ायेंगे। आप जहाँ भी जाएँ अपने अनुभवों को share कीजिये, तस्वीरों को share कीजिये। #incredibleindia (हैश टैग incredibleindia) इस पर आप फ़ोटो ज़रूर भेजिए। वहाँ के लोगों से मिलना हो जाये तो उनकी भी तस्वीर भेजिए। सिर्फ इमारतों की नहीं, सिर्फ प्राकृतिक सौन्दर्य की नहीं, वहाँ के जन-जीवन की कुछ बातें लिखिए। आपकी यात्रा के अच्छे निबंध लिखिए। Mygov पर भेजिए, NarendraModiApp पर भेजिये। मेरे मन में एक विचार आता है कि हम भारत के tourism को बढ़ावा देने के लिए क्या आप अपने राज्य के सात उत्तम से उत्तम tourist destination क्या हो सकते हैं - हर हिन्दुस्तानी को आपके राज्य के उन सात चीज़ों के विषय में जानना चाहिये। हो सके तो उन सात स्थानों पर जाना चाहिये। आप उसके विषय में कोई जानकारी दे सकते हैं क्या? NarendraModiApp पर उसको रख सकते हैं क्या? #IncredibleIndia (हैश टैग incredibleindia) पर रख सकते हैं क्या? आप देखिये, एक राज्य के सब लोग ऐसा बतायेंगे तो मैं सरकार में कहूँगा कि वो उसको scrutiny करे और common कौन-सी सात चीज़ें हर राज्य से आई हैं उस पर वो प्रचार-साहित्य तैयार करें। यानि एक प्रकार से जनता के अभिप्रायों से tourist destination का बढ़ावा कैसे हो? उसी प्रकार से आपने जो चीज़ें देखी हैं देशभर में, उसमें से सात आपको जो अच्छे से अच्छी लगी हैं, आप चाहते हैं कि किसी-न-किसी ने तो इसको देखनी चाहिये, जाना चाहिये, उसके विषय में जानकारी पानी चाहिये तो आप आपकी पसंद की सात ऐसे स्थान का भी MyGov पर, NarendraModiApp पर ज़रूर भेजिये। भारत सरकार उस पर काम करेगी। ऐसे उत्तम destination जो होंगे उसके लिए film बनाना, video बनाना, प्रचार-साहित्य तैयार करना, उसको बढ़ावा देना - आपके द्वारा चुनी हुई चीज़ों को सरकार स्वीकार करेगी। आइये, मेरे साथ जुड़िये। इस अक्टूबर महीने से मार्च महीने तक का समय का उपयोग देश के tourism को बढ़ाने में आप भी एक बहुत बड़े catalyst agent बन सकते हैं। मैं आपको निमंत्रण देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, एक इन्सान के नाते बहुत-सी चीज़ें मुझे भी छू जाती हैं। मेरे दिल को आंदोलित कर जाती हैं। मेरे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ जाती हैं। आखिर मैं भी तो आप ही की तरह एक इन्सान हूँ। पिछले दिनों एक घटना है जो शायद आपके भी ध्यान में आयी होगी - महिला-शक्ति और देशभक्ति की अनूठी मिसाल हम देशवासियों ने देखी है। Indian Army को लेफ्टिनेंट स्वाति और निधि के रूप में दो वीरांगनाएँ मिली हैं और वे असामान्य वीरांगनाएँ हैं। असामान्य इसलिए हैं कि स्वाति और निधि माँ-भारती की सेवा करते-करते उनके पति शहीद हो गए थे। हम कल्पना कर सकते हैं कि इस छोटी आयु में जब संसार उजड़ जाये तो मनःस्थिति कैसे होगी? लेकिन शहीद कर्नल संतोष महादिक की पत्नी स्वाति महादिक इस कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए उसने मन में ठान ली। और वे भारत की सेना में भर्ती हो गयीं। 11 महीने तक उसने कड़ी मेहनत करके प्रशिक्षण हासिल किया और अपने पति के सपनों को पूरा करने के लिए उसने अपनी ज़िन्दगी झोंक दी। उसी प्रकार से निधि दुबे, उनके पति मुकेश दुबे सेना में नायक का काम करते थे और मातृ-भूमि के लिए शहीद हो गए तो उनकी पत्नी निधि ने मन में ठान ली और वे भी सेना में भर्ती हो गयीं। हर देशवासी को हमारी इस मातृ-शक्ति पर, हमारी इन वीरांगनाओं के प्रति आदर होना बहुत स्वाभाविक है। मैं इन दोनों बहनों को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। उन्होंने देश के कोटि-कोटि जनों के लिए एक नयी प्रेरणा, एक नयी चेतना जगायी है। उन दोनों बहनों को बहुत-बहुत बधाई।

मेरे प्यारे देशवासियों, नवरात्रि का उत्सव और दिवाली के बीच हमारे देश की युवा पीढ़ी के लिए एक बहुत बड़ा अवसर भी है। FIFA under-17 का वर्ल्ड-कप हमारे यहाँ हो रहा है। मुझे विश्वास है कि चारों तरफ़ फुटबाल की गूँज सुनाई देगी। हर पीढ़ी की फुटबाल में रुचि बढ़ेगी। हिन्दुस्तान का कोई स्कूल - कॉलेज का मैदान ऐसा न हो कि जहाँ पर हमारे

नौजवान खेलते हुए नज़र न आयें । आइये, पूरा विश्व जब भारत की धरती पर खेलने के लिए आ रहा है, हम भी खेल को अपने जीवन का हिस्सा बनायें ।

मेरे प्यारे देशवासियो, नवरात्रि का पर्व चल रहा है। माँ दुर्गा की पूजा का अवसर है। पूरा माहौल पावन पवित्र सुगंध से व्याप्त है। चारों तरफ़ एक आध्यात्मिकता का वातावरण, उत्सव का वातावरण, भक्ति का वातावरण और ये सब कुछ शक्ति की साधना का पर्व माना जाता है। ये शारदीय-नवरात्रि के रूप में जाना जाता है। और यहीं से शरद-ऋतु का आरंभ होता है। नवरात्रि के इस पावन-पर्व पर मैं देशवासियों को अनेक-अनेक शुभकामनायें देता हूँ और माँ-शक्ति से प्रार्थना करता हूँ कि देश के सामान्य-मानव के जीवन की आशा-आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए हमारा देश नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे। हर चुनौतियों का सामना करने का सामर्थ्य देश को आए। देश तेज़ गति से आगे बढ़े और दो हज़ार बाईस (2022) भारत की आज़ादी के 75 साल- आज़ादी के दीवानों के सपनों को पूरा करने का प्रयास, सवा-सौ करोड़ देशवासियों का संकल्प, अथाह मेहनत, अथाह पुरुषार्थ और संकल्प को साकार करने के लिए पांच साल का road map बना करके हम चल पड़े और माँ शक्ति हमें आशीर्वाद दे। आप सब को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। उत्सव भी मनायें, उत्साह भी बढ़ायें।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

29-अक्टूबर-2017 11:38 IST

29.10.2017 को आकाशवाणी के मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार। दीपावली के छह दिन बाद मनाए जाने वाला महापर्व छठ, हमारे देश में सबसे अधिक नियम निष्ठा के साथ मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है। जिसमें खान-पान से लेकर वेशभूषा तक, हर बात में पारंपरिक नियमों का पालन किया जाता है। छठ-पूजा का अनुपम-पर्व प्रकृति से और प्रकृति की उपासना से पूरी तरह जुड़ा हुआ है। सूर्य और जल, महापर्व छठ की उपासना के केंद्र में हैं, तो बास और मिट्टी से बने बर्तन और कंदमूल, इनकी पूजन-विधि से जुड़ी अभिन्न सामग्रियाँ हैं। आस्था के इस महापर्व में उगते सूर्य की उपासना और डूबते सूर्य की पूजा का सन्देश अद्वितीय संस्कार से परिपूर्ण है। दुनिया तो उगने वालों को पूजने में लगी रहती है लेकिन छठ-पूजा हमें, उनकी आराधना करने का भी संस्कार देती है जिनका डूबना भी प्रायः निश्चित है। हमारे जीवन में स्वच्छता के महत्व की अभिव्यक्ति भी इस त्योहार में समाई हुई है। छठ से पहले पूरे घर की सफाई, साथ ही नदी, तालाब, पोखर के किनारे, पूजा-स्थल यानि घाटों की भी सफाई, पूरे जोश से सब लोग जुड़ करके करते हैं। सूर्य वंदना या छठ-पूजा - पर्यावरण संरक्षण, रोग निवारण व अनुशासन का पर्व है।

सामान्य रूप से लोग कुछ माँगकर लेने को हीन-भाव समझते हैं लेकिन छठ-पूजा में सुबह के अर्घ्य के बाद प्रसाद माँगकर खाने की एक विशेष परम्परा रही है। प्रसाद माँगने की इस परम्परा के पीछे ये मान्यता भी बतायी जाती है कि इससे अहंकार नष्ट होता है। एक ऐसी भावना जो व्यक्ति के प्रगति के राह में बाधक बन जाती है। भारत के इस महान परम्परा के प्रति हर किसी को गर्व होना बहुत स्वाभाविक है।

मेरे प्यारे देशवासियों, 'मन की बात' की सराहना भी होती रही है, आलोचना भी होती रही है। लेकिन जब कभी मैं 'मन की बात' के प्रभाव की ओर देखता हूँ तो मेरा विश्वास दृढ़ हो जाता है कि इस देश के जनमानस के साथ 'मन की बात' शत-प्रतिशत अटूट रिश्ते से बंध चुकी है। खादी और hand-loom का ही उदाहरण ले लीजिए। गाँधी- जयन्ती पर मैं हमेशा hand-loom के लिए, खादी के लिए वकालत करता रहता हूँ और उसका परिणाम क्या है! आपको भी यह जानकर के खुशी होगी। मुझे बताया गया है कि इस महीने 17 अक्टूबर को 'धनतेरस' के दिन दिल्ली के खादी ग्रामोद्योग भवन स्टोर में लगभग एक करोड़ बीस लाख रुपये की record बिक्री हुई है। खादी और hand-loom का, एक ही स्टोर पर इतना बड़ा बिक्री होना, ये सुन करके आपको भी आनंद हुआ होगा, संतोष हुआ होगा। दिवाली के दौरान खादी gift coupon की बिक्री में करीब-करीब 680 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। खादी और handicraft की कुल बिक्री में भी पिछले वर्ष से, इस वर्ष करीब-करीब 90 प्रतिशत वृद्धि देखने को मिली है। यह दिखता है कि आज युवा, बड़े-बूढ़े, महिलाएँ, हर आयु वर्ग के लोग खादी और hand-loom को पसन्द कर रहे हैं। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि इससे कितने बुनकर परिवारों को, गरीब परिवारों को, हथकरघा पर काम करने वाले परिवारों को, कितना लाभ मिला होगा। पहले खादी, 'Khadi for nation' था और हमने 'Khadi for fashion' की बात कही थी, लेकिन पिछले कुछ समय से मैं अनुभव से कह सकता हूँ कि Khadi for nation और Khadi for fashion के बाद अब, Khadi for transformation की जगह ले रहा है। खादी गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में, hand-loom गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाते हुए उन्हें सशक्त बनाने का, शक्तिशाली साधन बनकर के उभर रहा है। ग्रामोदय के लिए ये बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहा है।

श्रीमान् राजन भट्ट ने NarendramodiApp पर लिखा है कि वो सुरक्षा बलों के साथ मेरी दिवाली experience के बारे में जानना चाहते हैं और वे यह भी जानना चाहते हैं कि हमारे सुरक्षा बल कैसे दिवाली मनाते हैं। श्रीमान् तेजस गायकवाड़ ने भी NarendramodiApp पर लिखा है - हमारे घर की भी मिठाई सुरक्षा-बलों तक पहुँचाने का प्रबंध हो सकता है क्या? हमें भी हमारे वीर सुरक्षा-बलों की याद आती है। हमें भी लगता है कि हमारे घर की मिठाई देश के जवानों तक पहुँचनी चाहिए। दीपावली आप सब लोगों के लिए खूब हर्षोल्लास से मनायी होगी। मेरे लिए दिवाली इस बार भी एक विशेष अनुभव लेकर के आयी। मुझे एक बार फिर सीमा पर तैनात हमारे जाबांज सुरक्षाबलों के साथ दीपावली मनाने का सौभाग्य मिला। इस बार जम्मू-कश्मीर के गुरेज़ सेक्टर में सुरक्षाबलों के साथ दिवाली मनाना मेरे लिए अविस्मरणीय रहा। सीमा पर जिन कठिन और विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए हमारे सुरक्षाबल देश की रखवाली करते हैं उस संघर्ष, समर्पण और त्याग के लिए, मैं सभी देशवासियों की तरफ से हमारे सुरक्षा-बल के हर जवानों का आदर करता हूँ। जहाँ हमें अवसर मिले, जब हमें

मौका मिले - हमारे जवानों के अनुभव जानने चाहिए, उनकी गौरवगाथा सुननी चाहिए। हम में से कई लोगों को पता नहीं होगा कि हमारे सुरक्षा-बल के जवान, न सिर्फ हमारे border पर, बल्कि विश्वभर में शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। UN Peacekeeper बनकर के, वे दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम रोशन कर रहे हैं। अभी पिछले दिनों 24 अक्टूबर को विश्वभर में UN Day, संयुक्त-राष्ट्र दिवस मनाया गया। विश्व में शान्ति स्थापित करने के UN के प्रयासों, उसकी सकारात्मक भूमिका को हर कोई याद करता है। और हम तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को मानने वाले हैं यानि पूरा विश्व हमारा परिवार है। और इसी विश्वास के कारण भारत प्रारम्भ से ही UN के विभिन्न महत्वपूर्ण initiatives में सक्रिय भागीदारी निभाता आ रहा है। आप लोग जानते ही होंगे कि भारत के संविधान की प्रस्तावना और UN Charter की प्रस्तावना, दोनों 'we the people' इन्हीं शब्दों के साथ शुरू होती है। भारत ने नारी समानता पर हमेशा जोर दिया है और UN Declaration of Human Rights इसका जीता-जागता प्रमाण है। इसके initial phrase में जो propose किया गया था, वो था 'all men are born free and equal' जिसे भारत की प्रतिनिधि हंसा मेहता के प्रयासों से change कर लिया गया और बाद में स्वीकार हुआ 'all humans beings are born, free and equal'। वैसे तो ये बहुत छोटा बदलाव लगता है लेकिन एक तंदरुस्त सोच का उसमें दर्शन होता है। UN Umbrella के तहत भारत ने जो एक सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह है UN peacekeeping operations में भारत की भूमिका। संयुक्त राष्ट्र के शांति-रक्षा मिशन में, भारत हमेशा बड़ी सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। आप में से बहुत लोग हैं जिनको शायद ये जानकारी पहली बार मिल रही होगी। 18 हजार से अधिक भारतीय सुरक्षा-बलों ने UN Peacekeeping Operations में अपनी सेवाएँ दी हैं। वर्तमान में भारत के लगभग सात हजार सैनिक UN Peacekeeping initiatives से जुड़े हैं और ये पूरे विश्व में 3rd highest number हैं। अगस्त 2017 तक भारतीय जवानों ने UN के विश्वभर के 71 Peacekeeping operations में से, लगभग 50 operations में अपनी सेवाएँ दी हैं। ये operations, Korea, Cambodia, Laos, Vietnam, Congo, Cyprus, Liberia, Lebanon, Sudan, विश्व के भू-भागों में, कई देशों में चले हैं। Congo और दक्षिण Sudan में भारतीय सेना के hospital में 20 हजार से अधिक रोगियों का इलाज किया गया है और अनगिनत लोगों को बचाया गया है। भारत के सुरक्षा बलों ने, विभिन्न देशों में न सिर्फ वहाँ के लोगों की रक्षा की है बल्कि people friendly operations कर उनका दिल भी जीत लिया है। भारतीय महिलाओं ने शांति स्थापित करने के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाई है। बहुत कम लोग इस बात को जानते होंगे कि भारत पहला देश था जिसने Liberia में संयुक्त राष्ट्र के शांति-अभियान मिशन में female police unit भेजी थी। और देखिए, भारत का ये कदम विश्वभर के देशों के लिए प्रेरणास्रोत बन गया। और इसके बाद, सभी देशों ने अपनी-अपनी women police units को भेजना प्रारंभ किया। आपको सुन करके गर्व होगा कि भारत की भूमिका सिर्फ peacekeeping operation तक ही सीमित नहीं है बल्कि भारत लगभग 85 देशों के, eighty five countries के peacekeepers को प्रशिक्षण देने का भी काम कर रहा है। महात्मा गाँधी और गौतम बुद्ध की इस भूमि से हमारे बहादुर शांति-रक्षकों ने विश्वभर में शांति और सद्भाव का संदेश पहुँचाया है। Peacekeeping operations आसान कार्य नहीं हैं। हमारे सुरक्षा-बल के जवानों को दुर्गम इलाकों में जा करके काम करना पड़ता है। अलग-अलग लोगों के बीच रहना पड़ता है। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों और अलग-अलग culture को जानना-समझना पड़ता है। उन्हें वहाँ की स्थानीय जरूरतों, माहौल के अनुरूप खुद को ढालना पड़ता है। आज जब हमारे बहादुर UN Peacekeepers को याद करते हैं तो कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया को कौन भूल सकता है जिन्होंने अफ्रीका के Congo में शांति के लिए लड़ते, अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। उन्हें याद कर, हर देशवासी का सीना गर्व से फूल जाता है। वे एक मात्र UN Peacekeeper थे, वीर-पुरुष थे, जिन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। लेफ्टिनेंट जनरल प्रेमचंद जी उन India Peacekeeper में से एक हैं जिन्होंने Cyprus में विशिष्ट पहचान बनाई। 1989 में, 72 वर्ष की आयु में उन्हें Namibia में operation के लिए force commander बनाया गया और उन्होंने उस देश की आज़ादी सुनिश्चित करने के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान की। जनरल थिमैय्या, जो भारतीय सेना के भी प्रमुख रहे, ने Cyprus में UN Peacekeeping force को lead किया और शांति कार्यों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। भारत, शांतिदूत के रूप में हमेशा से विश्व में शांति, एकता और सद्भावना का संदेश देता रहा है। हमारा विश्वास है कि हर कोई शांति, सद्भाव के साथ जीए और एक बेहतर एवं शांतिपूर्ण कल के निर्माण की दिशा में आगे बढ़े।

मेरे प्यारे देशवासियों, हमारी पुण्य भूमि ऐसे महान लोगों से सुशोभित रही है जिन्होंने निस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा की है। Sister Nivedita, जिन्हें हम भगिनी निवेदिता भी कहते हैं, वो भी उन असाधारण लोगों में से एक थीं। वो आयरलैंड में मार्गरेट एलिज़ाबेथ नोबेल (Margaret Elizabeth Noble) के रूप में जन्मी थीं लेकिन स्वामी विवेकानंद ने उन्हें 'निवेदिता' नाम दिया। और निवेदिता का अर्थ है वो जो पूर्ण रूप से समर्पित हो। बाद में उन्होंने अपने नाम के अनुरूप ही अपने स्वयं को सिद्ध करके दिखाया। कल Sister Nivedita की 150वीं जयंती थी। वे स्वामी विवेकानंद से इतना प्रभावित हुईं, कि अपने सुखी-संपन्न जीवन का त्याग कर दिया और अपने जीवन को गरीबों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। Sister Nivedita ब्रिटिश राज में होने वाले अत्याचारों से बहुत आहत थीं। अंग्रेज़ों ने, न सिर्फ हमारे देश को गुलाम बनाया था बल्कि उन्होंने हमें मानसिक रूप से भी गुलाम बनाने का प्रयास किया था। हमारी संस्कृति को नीचा दिखा कर हम में हीन-भावना पैदा करना, यह काम निरंतर चलता रहता था। भगिनी निवेदिता जी ने भारतीय संस्कृति के गौरव को पुनः स्थापित किया। राष्ट्रीय-चेतना जागृत कर लोगों को एक-जुट करने का काम किया। उन्होंने विश्व के अलग-अलग देशों

में जाकर सनातन धर्म और दर्शन के बारे में किए जा रहे दुष्प्रचारों के खिलाफ आवाज़ उठाई। प्रसिद्ध राष्ट्रवादी एवं तमिल कवि सुब्रह्मण्य भारती अपनी क्रांतिकारी कविता 'पुदुमई पेन्न' (Pudhumai Penn), New Women और महिला सशक्तिकरण के लिए विख्यात रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि प्रेरणा भगिनी निवेदिता ही थी। भगिनी निवेदिता जी ने महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु का भी सहयोग किया। उन्होंने अपने लेख और सम्मेलनों के माध्यम से बसु के research के प्रकाशन एवं प्रचार में सहायता की। भारत की यही एक विशेष सुन्दरता है कि हमारी संस्कृति में आध्यात्मिकता और विज्ञान, एक दूसरे के पूरक हैं। सिस्टर निवेदिता और वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु इसके सशक्त उदाहरण हैं। 1899 में, कलकत्ता में भयानक प्लेग हुआ और देखते-ही-देखते सैकड़ों लोगों की जानें चली गईं। सिस्टर निवेदिता ने अपनी स्वास्थ्य की चिंता किए बिना, नालियों और सड़कों की सफाई का काम आरंभ कर दिया। वह एक ऐसी महिला थीं जो आरामदायक जीवन जी सकती थीं लेकिन वह गरीबों की सेवा में जुटी रहीं। उनके इसी त्याग से प्रेरणा पाकर लोगों ने सेवा कार्यों में उनका हाथ बँटाया। उन्होंने अपने कार्यों से लोगों को स्वच्छता और सेवा के महत्व का पाठ पढ़ाया। और उनकी समाधि पर लिखा है 'Here reposes Sister Nivedita who gave her all to India' - यहाँ सिस्टर निवेदिता विश्राम कर रहीं हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व भारत को दिया। निःसंदेह उन्होंने ऐसा ही किया। उस महान व्यक्तित्व के लिए आज इससे उपयुक्त श्रद्धांजलि और कुछ नहीं हो सकती कि प्रत्येक भारतवासी उनके जीवन से शिक्षा लेकर स्वयं उस सेवा-पथ पर चलने का प्रयास करे।

फोनकॉल : माननीय प्रधानमंत्री जी , मेरा नाम डॉ.पार्थ शाह है.. १४ नवम्बर को हम बाल दिन के रूप में मनाते हैं क्योंकि वो हमारे पहले प्रधानमन्त्री जवाहर लाल जी का जन्म दिन है ..उसी दिन को विश्व डायबिटीज दिन भी माना जाता है ... डायबिटीज केवल बड़ों का रोग नहीं है , वो काफी सारे बच्चों में भी पाया जाता है ..तो इस चुनौती के लिए हम क्या कर सकते हैं?

आपके phone call के लिए धन्यवाद। सबसे पहले तो हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी के जन्मदिन पर मनाए जाने वाले Children's Day, बाल दिवस की सभी बच्चों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। बच्चे नए भारत के निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण hero हैं, नायक हैं। आपकी चिंता सही है कि पहले जो बीमारियाँ बड़ी उम्र में आती थीं, जीवन के अंतिम पड़ाव के आस-पास आती थीं - वह आजकल बच्चों में भी दिखने लगी हैं। आज बड़ा आश्चर्य होता है, जब सुनते हैं कि बच्चे भी diabetes से पीड़ित हो रहे हैं। पहले के ज़माने में ऐसे रोगों को 'राज-रोग' के नाम से जाना जाता था। राज-रोग अर्थात् ऐसी बीमारियाँ जो केवल संपन्न लोगों को, ऐश-ओ-आराम की ज़िंदगी जीने वालों को ही हुआ करती थी। युवा लोगों में ऐसी बीमारियाँ बहुत rare होती थीं। लेकिन हमारा lifestyle बदल गया है। आज इन बीमारियों को lifestyle disorder के नाम से जाना जाता है। युवा उम्र में इस तरह की बीमारियों से ग्रस्त होने का एक प्रमुख कारण है - हमारी जीवनशैली में physical activities की कमी और हमारे खान-पान के तरीकों में बदलाव। समाज और परिवार को इस चीज़ पर ध्यान देने की ज़रूरत है। जब वह इस पर सोचेंगे तो आप देखिएगा कि कुछ भी extraordinary करने की ज़रूरत नहीं है। बस ज़रूरत है , छोटी-छोटी चीज़ों को सही तरीके से, नियमित रूप से करते हुए उन्हें अपनी आदत में बदलने की, उसे अपना एक स्वभाव बनाने की। मैं तो चाहूँगा कि परिवारजन जागरूकतापूर्वक ये प्रयास करें कि बच्चे, खुले मैदानों में खेलने की आदत बनाएं। संभव हो तो हम परिवार के बड़े लोग भी इन बच्चों के साथ ज़रा खुले में जाकर कर के खेलें। बच्चों को lift में ऊपर जाने-आने की बजाय सीढ़ियाँ चढ़ने की आदत लगाएं। Dinner के बाद पूरा परिवार बच्चों को लेकर के कुछ walk करने का प्रयास करें। Yoga for Young India। योग, विशेष रूप से हमारे युवा मित्रों को एक healthy lifestyle बनाये रखने और lifestyle disorder से बचाने में मददगार सिद्ध होगा। School से पहले 30 मिनट का योग, देखिए कितना लाभ देगा! घर में भी कर सकते हैं और योग की विशेषता भी तो यही है - वो सहज है, सरल है, सर्व-सुलभ है और मैं सहज है इसलिए कह रहा हूँ कि किसी भी उम्र का व्यक्ति आसानी से कर सकता है। सरल इसलिए है कि आसानी से सीखा जा सकता है और सर्व-सुलभ इसलिए है कि कहीं पर भी किया जा सकता है - विशेष tools या मैदान की ज़रूरत नहीं होती है। Diabetes control करने में योग कितना असरकारी है, इस पर कई studies चल रही हैं। AIIMS में भी इस पर study की जा रही है और अभी तक जो परिणाम आए हैं, वो काफी encouraging हैं। आयुर्वेद और योग को हम सिर्फ उपचार treatment के माध्यम के तौर पर न देखें, उन्हें हम अपने जीवन का हिस्सा बनाएं।

मेरे प्यारे देशवासियों, खासकर के मेरे युवा साथियों, खेल के क्षेत्र में पिछले दिनों अच्छी खबरें आई हैं। अलग-अलग खेल में हमारे खिलाड़ियों ने देश का नाम रोशन किया है। हॉकी में भारत ने शानदार खेल दिखाके एशिया कप हॉकी का खिताब जीता है। हमारे खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और इसी के बल पर भारत दस साल बाद एशिया कप champion बना है। इससे पहले भारत 2003 और 2007 में एशिया कप champion बना था। पूरी टीम और support staff को मेरी तरफ से, देशवासियों की तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

हॉकी के बाद बैडमिंटन में भी भारत के लिए अच्छी खबर आयी। बैडमिंटन स्टार किदाम्बी श्रीकांत ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए Denmark open खिताब जीतकर हर भारतीय को गौरव से भर दिया है। Indonesia open और Australia open के

बाद ये उनका तीसरा super series premiere खिताब है। मैं, हमारे युवा साथी को उनकी इस उपलब्धि के लिए और भारत के गौरव को बढ़ाने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

दोस्तो, इसी महीने FIFA Under-17 World Cup का आयोजन हुआ। विश्वभर की टीमों ने भारत आया और सभी ने फुटबॉल के मैदान पर अपना कौशल दिखाया। मुझे भी एक मैच में जाने का मौका मिला। खिलाड़ियों, दर्शकों सभी के बीच भारी उत्साह था। world cup का इतना बड़ा event, पूरा विश्व आपको देख रहा हो। इतना बड़ा मैच, मैं तो सभी युवा खिलाड़ियों की ऊर्जा, उत्साह, कुछ कर दिखाने के जज्बे को देखकर दंग रह गया था। World Cup का आयोजन सफलतापूर्वक हुआ और सभी टीमों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। भले ही, भारत खिताब न जीत पाया लेकिन भारत के युवा खिलाड़ियों ने सभी का दिल जीत लिया। भारत समेत पूरे विश्व ने खेल के इस महोत्सव को enjoy किया और ये पूरा tournament फुटबॉल प्रेमियों के लिए रोचक और मनोरंजक रहा। फुटबॉल का भावी बहुत उज्ज्वल है, इसके संकेत नजर आने लगे हैं। मैं एक बार फिर से सभी खिलाड़ियों को, उनके सहयोगियों को और सभी खेल प्रेमियों को बधाई देता हूँ, शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, स्वच्छ भारत के विषय में मुझे जितने लोग लिखते हैं, मुझे लगता है कि उनकी भावनाओं के साथ यदि मैं न्याय करने की सोचूँ तो मुझे हर रोज 'मन की बात' का कार्यक्रम करना पड़ेगा और हर रोज मुझे स्वच्छता के विषय पर ही 'मन की बात' को समर्पित करना पड़ेगा। कोई नन्हें-मुन्ने बच्चों के प्रयासों के photo भेजते हैं तो कहीं युवाओं की टीम efforts का किस्सा होता है। कहीं स्वच्छता को लेकर किसी innovation की कहानी होती है या फिर किसी अधिकारी के जुनून को लेकर आए परिवर्तन की news होती है। पिछले दिनों मुझे बहुत विस्तृत एक report मिली है, जिसमें महाराष्ट्र के चंद्रपुर किले के कायाकल्प की कहानी है। वहां Ecological Protection Organisation नाम के एक NGO की पूरी टीम ने चंद्रपुर किले में सफाई का अभियान चलाया। दो-सौ दिनों तक चले इस अभियान में लोगों ने बिना रुके, बिना थके, एक team-work के साथ किले की सफाई का कार्य किया। दो-सौ दिन लगातार। 'before और after' - ये photo उन्होंने मुझे भेजे हैं। photo देख कर के भी मैं दंग रह गया और जो भी इस photo को देखेगा जिसके भी मन में अपने आस-पास की गंदगी को देख कर कभी निराशा होती हो, कभी उसको लगता हो कि स्वच्छता का सपना कैसे पूरा होगा - तो मैं ऐसे लोगों को कहूँगा Ecological Protection Organisation के युवाओं को, उनके पसीनों को, उनके हौसले को, उनके संकल्प को, उन जीती-जागती तस्वीरों में आप देख सकते हैं। उसे देखते ही आपकी निराशा, विश्वास में ही बदल जाएगी। स्वच्छता का ये भगीरथ प्रयास सौन्दर्य, सामूहिकता और सातत्यता का एक अद्भुत उदाहरण है। किले तो हमारी विरासत का प्रतीक हैं। ऐतिहासिक धरोहरों को सुरक्षित और स्वच्छ रखने की ज़िम्मेवारी हम सभी देशवासियों की है। मैं Ecological Protection Organisation के और उनकी पूरी टीम को और चंद्रपुर के नागरिकों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, आने वाले 4 नवम्बर को हम सब गुरु नानक जयंती मनाएंगे। गुरु नानक देव जी, सिक्खों के पहले गुरु ही नहीं बल्कि वो जगत-गुरु हैं। उन्होंने पूरी मानवता के कल्याण के बारे में सोचा, उन्होंने सभी जातियों को एक समान बताया। महिला सशक्तिकरण एवं नारी सम्मान पर जोर दिया था। गुरु नानक देव जी ने पैदल ही 28 हजार किलोमीटर की यात्रा की और अपनी इस यात्रा के दौरान उन्होंने सच्ची मानवता का सन्देश दिया। उन्होंने लोगों से संवाद किया, उन्हें सच्चाई, त्याग और कर्म-निष्ठा का मार्ग दिखाया। उन्होंने समाज में समानता का सन्देश दिया और अपने इस सन्देश को बातों से ही नहीं, अपने कर्म से करके दिखाया। उन्होंने लंगर चलाया जिससे लोगों में सेवा-भावना पैदा हुई। इकट्ठे बैठकर लंगर ग्रहण करने से लोगों में एकता और समानता का भाव जागृत हुआ। गुरु नानक देव जी ने सांथक जीवन के तीन सन्देश दिए - परमात्मा का नाम जपो, मेहनत करो - काम करो और ज़रूरतमंदों की मदद करो। गुरु नानक देव जी ने अपनी बात कहने के लिए 'गुरबाणी' की रचना भी की। आने वाले वर्ष 2019 में, हम गुरु नानक देव जी का 550वाँ प्रकाश वर्ष मनाने जा रहे हैं। आइए, हम उनके सन्देश और शिक्षा के मार्ग पर आगे बढ़ने की कोशिश करें।

मेरे प्यारे देशवासियों, दो दिन के बाद 31 अक्टूबर को हम सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की जन्म-जयंती मनाएंगे। हम सब जानते हैं कि आधुनिक अखण्ड भारत की नींव, इन्होंने ही रखी थी। भारत माँ की उस महान संतान की असाधारण यात्रा से आज हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। 31 अक्टूबर को श्रीमती इंदिरा गाँधी भी इस दुनिया को छोड़ करके चली गईं। सरदार वल्लभ भाई पटेल की विशेषता ये थी कि वे न सिर्फ परिवर्तनकारी विचार देते थे, लेकिन वे, इसको कर दिखाने के लिए जटिल-से-जटिल समस्या का व्यावहारिक हल ढूँढ़ने में काबिल थे। विचार को साकार करना, उसमें उनकी महारत थी। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को एक सूत्र में पिरोने की बागडोर संभाली। ये सुनिश्चित किया कि करोड़ों भारतवासियों को 'एक राष्ट्र और एक संविधान' की छत्रछाया में लाया जाए। उनके निर्णय क्षमता ने उन्हें सारी बाधाओं को पार करने का सामर्थ्य दिया। जहाँ मान-मनौवल की आवश्यकता थी, वहाँ उन्होंने मान-मनौवल किया; जहाँ बल-प्रयोग की आवश्यकता पड़ी, वहाँ बल-प्रयोग किया। उन्होंने एक उद्देश्य निश्चित कर लिया और फिर केवल उसी ओर पूरी दृढ़ता के साथ वो बढ़ते ही गए, बढ़ते ही गए। देश को एक करने का ये कार्य सिर्फ वही कर सकते थे, जिन्होंने एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना की

जहाँ सभी लोग समान हों, उन्होंने कहा था और मैं चाहूँगा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की बात सदा-सर्वदा हम लोगों के लिए प्रेरणा देने वाली हैं। उन्होंने कहा था - “जाति और पंथ का कोई भेद हमें रोक न सके, सभी भारत के बेटे और बेटियाँ हैं, हम सभी को अपने देश से प्यार करना चाहिए और पारस्परिक प्रेम और सद्भावना पर अपनी नियति का निर्माण करना चाहिए।”

सरदार साहब का ये कथन आज भी हमारे New India के vision के लिए प्रेरक है, प्रासंगिक हैं। और यही कारण है कि उनका जन्मदिन ‘राष्ट्रीय एकता दिवस’ के रूप में मनाया जाता है। देश को एक अखण्ड राष्ट्र का स्वरूप देने में उनका योगदान अतुलनीय है। सरदार साहब की जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर को देशभर में ‘Run for Unity’ का आयोजन किया जाएगा, जिसमें देशभर से बच्चे, युवा, महिलाएँ, सभी आयु-वर्ग के लोग शामिल होंगे। मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप भी ‘Run for Unity’ आपसी सद्भावना के इस उत्सव में भाग लें।

मेरे प्यारे देशवासियों, दिवाली की छुट्टियों के बाद, नए संकल्प के साथ, नए निश्चय के साथ, आप सब अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में फिर एक बार जुट गए होंगे। मेरी तरफ़ से देशवासियों को, उनके सभी सपने साकार हों, ये शुभकामनाएँ हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK/SH

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

26-नवंबर-2017 11:42 IST

26 नवंबर, 2017 को आकाशवाणी से 'मन की बात' कार्यक्रम के 38वें संस्करण में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। कुछ समय पहले, मुझे कर्नाटक के बालमित्रों के साथ परोक्ष संवाद का अवसर मिला। Times Group के 'विजय कर्नाटका' अखबार ने बाल दिवस पर एक पहल की, जिसमें उन्होंने बच्चों से आग्रह किया कि वे देश के प्रधानमंत्री को पत्र लिखें। और फिर उन्होंने उसमें से कुछ selected पत्रों को छापा। मैंने उन पत्रों को पढ़ा, मुझे काफ़ी अच्छा लगा। ये नन्हें-मुन्हें बालक भी, देश की समस्याओं से परिचित हैं, देश में चल रही चर्चाओं से भी परिचित हैं। कई विषयों पर इन बच्चों ने लिखा। उत्तर कन्नड़ की, कीर्ति हेगड़े ने, Digital India और Smart City योजना की सराहना करते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि हमें अपनी शिक्षा-व्यवस्था में बदलाव की ज़रूरत है और उन्होंने ये भी कहा कि आजकल बच्चे classroom reading करना पसंद नहीं करते, उन्हें प्रकृति के बारे में जानना अच्छा लगता है। और अगर, हम बच्चों को प्रकृति की जानकारीयाँ देंगे तो शायद पर्यावरण की रक्षा में, वो आगे चल करके काम आ सकते हैं।

लक्ष्मेश्वरा से रीडा नदाफ़, उस बच्चे ने लिखा है कि वो एक फौज़ी की बेटी है और उन्हें इस बात का गर्व है। कौन हिन्दुस्तानी होगा जिसको फौज़ी पर गर्व न हो! और आप तो फौज़ी की बेटी हो, आपको गर्व होना बहुत स्वाभाविक है। कलबुर्गी से इरफ़ाना बेगम, उन्होंने लिखा है कि उनका स्कूल उनके गाँव से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जिसकी वजह से उन्हें घर से जल्दी निकलना पड़ता है और घर वापस आने में भी बहुत देर रात हो जाती है। और, उसमें उन्होंने कहा कि मैं अपने दोस्तों के साथ समय भी नहीं बिता पाती हूँ। और उन्होंने सुझाव दिया है कि नज़दीक में कोई स्कूल होना चाहिए। लेकिन देशवासियो, मुझे अच्छा लगा कि एक अखबार ने initiative लिया और मुझ तक ये पत्र पहुँचे और मुझे उन पत्रों को पढ़ने का अवसर मिला। मेरे लिए भी ये एक अच्छा अनुभव था।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 26/11 है। 26 नवम्बर, ये हमारा संविधान दिवस है। उन्नीस सौ उनचास में, 1949 में आज ही के दिन, संविधान-सभा ने भारत के संविधान को स्वीकार किया था। 26 जनवरी 1950 को, संविधान लागू हुआ और इसलिए तो हम, उसको गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। भारत का संविधान, हमारे लोकतंत्र की आत्मा है। आज का दिन, संविधान-सभा के सदस्यों के स्मरण करने का दिन है। उन्होंने भारत का संविधान बनाने के लिए लगभग तीन वर्षों तक परिश्रम किया। और जो भी उस debate को पढ़ता है, हमें गर्व होता है कि राष्ट्र को समर्पित जीवन की सोच क्या होती है! क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि विविधताओं से भरे अपने देश का संविधान बनाने के लिए उन्होंने कितना कठोर परिश्रम किया होगा? सूझ-बूझ, दूर-दर्शिता के दर्शन कराए होंगे और वो भी उस समय, जब देश गुलामी की जंजीरों से मुक्त हो रहा था। इसी संविधान के प्रकाश में संविधान-निर्माताओं, उन महापुरुषों के विचारों के प्रकाश में नया भारत बनाना, ये हम सब का दायित्व है। हमारा संविधान बहुत व्यापक है। शायद जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, प्रकृति का कोई ऐसा विषय नहीं है जो उससे अछूता रह गया हो। सभी के लिए समानता और सभी के प्रति संवेदनशीलता, हमारे संविधान की पहचान है। यह हर नागरिक, गरीब हो या दलित, पिछड़ा हो या वंचित, आदिवासी, महिला सभी के मूलभूत अधिकारों की रक्षा करता है और उनके हितों को सुरक्षित रखता है। हमारा कर्तव्य है कि हम संविधान का अक्षरशः पालन करें। नागरिक हों या प्रशासक, संविधान की भावना के अनुरूप आगे बढ़ें। किसी को किसी भी तरह से क्षति ना पहुँचे - यही तो संविधान का संदेश है। आज, संविधान-दिवस के अवसर पर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की याद आना तो बहुत स्वाभाविक है। इस संविधान-सभा में महत्वपूर्ण विषयों पर 17 अलग-अलग समितियों का गठन हुआ था। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण समितियों में से एक, drafting committee थी। और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, संविधान की उस drafting committee के अध्यक्ष थे। एक बहुत बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का वो निर्वाह कर रहे थे। आज हम भारत के जिस संविधान पर गौरव का अनुभव करते हैं, उसके निर्माण में बाबासाहेब आंबेडकर के कुशल नेतृत्व की अमिट छाप है। उन्होंने ये सुनिश्चित किया कि समाज के हर तबके का कल्याण हो। 6 दिसम्बर को उनके महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर, हम हमेशा की तरह उन्हें स्मरण और नमन करते हैं। देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने में बाबासाहेब का योगदान अविस्मरणीय है। 15 दिसम्बर को सरदार वल्लभभाई पटेल की पुण्यतिथि है। किसान-पुत्र से देश के लौह-पुरुष बने सरदार पटेल ने, देश को एक सूत्र में बाँधने का बहुत असाधारण कार्य किया था। सरदार साहब भी संविधान सभा के सदस्य रहे थे। वे मूलभूत अधिकारों, fundamental rights, अल्प-संख्यकों और आदिवासियों पर बनी advisory committee के भी अध्यक्ष थे।

26/11 हमारा संविधान-दिवस है लेकिन ये देश कैसे भूल सकता है कि नौ साल पहले 26/11 को, आतंकवादियों ने मुंबई पर हमला बोल दिया था। देश उन बहादुर नागरिकों, पुलिसकर्मी, सुरक्षाकर्मी, उन हर किसी का स्मरण करता है, उनको नमन करता है जिन्होंने अपनी जान गंवाई। यह देश कभी उनके बलिदान को नहीं भूल सकता। आतंकवाद आज विश्व के हर भू-भाग में और एक प्रकार से प्रतिदिन होने वाली घटना का, एक अति-भयंकर रूप बन गई है। हम, भारत में तो गत 40 वर्ष से आतंकवाद के कारण बहुत कुछ झेल रहे हैं। हजारों हमारे निर्दोष लोगों ने अपनी जान गंवाई है। लेकिन कुछ वर्ष पहले, भारत जब दुनिया के सामने आतंकवाद की चर्चा करता था, आतंकवाद से भयंकर संकट की चर्चा करता था तो दुनिया के बहुत लोग थे, जो इसको गंभीरता से लेने के लिए तैयार नहीं थे। लेकिन जब आज, आतंकवाद उनके अपने दरवाजों पर दस्तक दे रहा है तब, दुनिया की हर सरकार, मानवतावाद में विश्वास करने वाले, लोकतंत्र में भरोसा करने वाली सरकारें, आतंकवाद को एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में देख रहे हैं। आतंकवाद ने विश्व की मानवता को ललकारा है। आतंकवाद ने मानवतावाद को चुनौती दी है। वो मानवीय शक्तियों को नष्ट करने पर तुला हुआ है। और इसलिए, सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की सभी मानवतावादी शक्तियों को एकजुट होकर, आतंकवाद को पराजित करके ही रहना होगा। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गुरु नानक, महात्मा गांधी, ये ही तो ये धरती हैं जिसने अहिंसा और प्रेम का संदेश दुनिया को दिया है। आतंकवाद और उग्रवाद, हमारी सामाजिक संरचना को कमजोर कर, उन्हें छिन्न-भिन्न करने का नापाक प्रयास करते हैं। और इसलिए, मानवतावादी शक्तियों का अधिक जागरूक होना समय की मांग है।

मेरे प्यारे देशवासियों, 4 दिसम्बर को हम सब Navy Day, नौ-सेना दिवस मनाएंगे। भारतीय नौ-सेना, हमारे समुद्र-तटों की रक्षा और सुरक्षा प्रदान करती है। मैं, नौ-सेना से जुड़े सभी लोगों का अभिनंदन करता हूँ। आप जानते ही होंगे कि हमारी सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ है। चाहे वो सिन्धु हो, गंगा हो, यमुना हो, सरस्वती हो - हमारी नदियाँ और समुद्र, आर्थिक और सामरिक strategic, दोनों purpose के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये पूरे विश्व के लिए हमारा gateway है। इस देश का, हमारी इस भूमि का महासागरों के साथ अटूट संबंध रहा है। और जब हम, इतिहास की ओर नज़र करते हैं तो 800-900 साल पहले चोल-वंश के समय, चोल-नेवी (Chola Navy) को सबसे शक्तिशाली नौ-सेनाओं में से एक माना जाता था। चोल-साम्राज्य के विस्तार में, उसे अपने समय का economic super power बनाने में उनकी नेवी का बहुत बड़ा हिस्सा था। चोल-नेवी की मुहीम, खोज-यात्राओं के ढेरों उदाहरण, संगम-साहित्य में आज भी उपलब्ध हैं। बहुत कम लोगों को पता होगा कि विश्व में ज़्यादातर नौ-सेनाओं ने बहुत देर के बाद युद्ध-पोतों पर महिलाओं को allow किया था। लेकिन चोल-नेवी में और वो भी 800-900 साल पहले, बहुत बड़ी संख्या में महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। और यहाँ तक कि महिलाएँ, लड़ाई में भी शामिल होती थीं। चोल-शासकों के पास ship building, जहाज़ों के निर्माण के बारे में बहुत ही समृद्ध ज्ञान था। जब हम नौ-सेना की बात करते हैं तो छत्रपति शिवाजी महाराज और नौ-सेना के उनके सामर्थ्य को कौन भूल सकता है! कोंकण तट-क्षेत्र, जहाँ समुद्र की महत्वपूर्ण भूमिका है, शिवाजी महाराज के राज्य के अंतर्गत आता था। शिवाजी महाराज से जुड़े कई किले जैसे सिंधु दुर्ग, मुरुड जंजिरा, स्वर्ण दुर्ग आदि या तो समुद्र तटों पर स्थित थे या तो समुद्र से घिरे हुए थे। इन किलों के सुरक्षा की ज़िम्मेदारी मराठा नौ-सेना करती थी। मराठा Navy में बड़े-बड़े जहाज़ों और छोटी-छोटी नौकाओं का combination था। उनके नौसैनिक किसी भी दुश्मन पर हमला करने और उनसे बचाव करने में अत्यंत कुशल थे। और हम मराठा नेवी की चर्चा करें और कान्होजी आग्रे को याद न करें, ये कैसे हो सकता है! उन्होंने मराठा नौ-सेना को एक नए स्तर पर पहुँचाया और कई स्थानों पर मराठा नौ-सैनिकों के अड्डे स्थापित किए। स्वतंत्रता के बाद हमारी भारतीय नौ-सेना ने विभिन्न अवसरों पर अपना पराक्रम दिखाया - चाहे वो गोवा के मुक्ति-संग्राम हो या 1971 का भारत-पाक युद्ध हो। जब हम नौ-सेना की बात करते हैं तो सिर्फ हमें युद्ध ही नज़र आता है लेकिन भारत की नौ-सेना, मानवता के काम में भी उतनी ही बढ़-चढ़ कर के आगे आई है। इस वर्ष जून महीने में बांग्लादेश और म्यांमार में Cyclone Mora का संकट आया था, तब हमारी नौ-सेना की Ship, INS Sumitra ने तत्काल rescue के लिए मदद की थी और कई मछुआरों को पानी से बाहर सुरक्षित बचाकर बांग्लादेश को सौंपा था। इस वर्ष मई-जून में जब श्रीलंका में बाढ़ का भयंकर संकट आया था तब हमारी नौ-सेना के तीन जहाज़ों ने तत्काल ही वहाँ पहुँच करके वहाँ की सरकार और वहाँ की जनता को मदद पहुंचाई थी। बांग्लादेश में सितम्बर महीने में रोहिंग्या के मामले में हमारी नौ-सेना की Ship, Ins Ghadiyal (घड़ियाल) ने मानवीय सहायता पहुंचाई थी। जून महीने में Papua New Guinea (पापुआ न्यू गिनी) की सरकार ने हमें SoS सन्देश दिया था और उनके fishing boat के मछुआरों को बचाने में हमारी नौ-सेना ने सहायता की थी। 21 नवंबर को पश्चिम Gulf में एक merchant vessel में Piracy की घटना में भी, हमारा नौ-सेना जहाज़ INS Trikan (त्रिकंड) सहायता के लिए पहुँच गया था। Fiji तक आरोग्य सेवाएँ पहुँचानी हो, तत्काल राहत पहुँचानी हो, पड़ोसी देश को संकट के समय मानवीय मदद पहुँचानी हो, हमारी नौ-सेना हमेशा गौरवपूर्ण कार्य करती रही है। हम भारतवासी, हमारे सुरक्षा-बलों के प्रति हमेशा गौरव और आदर का भाव रखते हैं - चाहे वो Army हो, Navy हो, Air Force हो, हमारे जवानों का साहस, वीरता, शौर्य, पराक्रम, बलिदान हर देशवासी उनको सलाम करता है। सौ करोड़ देशवासी सुख-चैन की ज़िन्दगी जी सकें इसलिए वो अपनी जवानी, देश के लिए कुर्बान कर देता है। हर वर्ष 7 दिसम्बर को Armed Forces Flag Day मनाता है। यह देश के Armed Forces के प्रति गर्व करने और सम्मान प्रकट करने का दिन है। मुझे खुशी है, इस बार रक्षा-मंत्रालय ने 1 से 7 दिसम्बर तक अभियान चलाने का निर्णय किया है - देश के नागरिकों के पास पहुँच करके Armed Forces के संबंध में लोगों को जानकारी देना, लोगों को जागरूक करना। पूरे सप्ताह-भर बच्चे-बड़े, हर कोई flag

लगाएं। देश में सेना के प्रति सम्मान का एक आंदोलन खड़ा हो जाए। इस अवसर पर हम Armed Forces Flags distribute कर सकते हैं। अपने आस-पास में, अपनी जान-पहचान में जो Armed Forces से जुड़े हैं, उनके experiences को, उनके courageous act को, उससे जुड़े videos और pictures, #armedforcesflagday (hashtag Armed Forces Flag Day) पर post कर सकते हैं। स्कूलों में, कॉलेज में, फ़ौज के लोगों को बुला करके, उनसे फ़ौज के विषय में जानकारीयाँ ले सकते हैं। हमारी नई पीढ़ी को फ़ौज के संबंध में जानकारीयाँ पाने का एक अच्छा अवसर बन सकता है। यह अवसर हमारे Armed Forces के सभी जवानों के कल्याण के लिए धनराशि संग्रह करने का होता है। यह राशि, सैनिक कल्याण बोर्ड के माध्यम से युद्ध में शहीद हुए सैनिकों के परिवारजनों को, घायल सैनिकों के कल्याण के लिए उनके पुनर्वास पर खर्च की जाती है। आर्थिक योगदान देने के लिए आप विभिन्न भुगतान के बारे में जानकारी ksb.gov.in से ले सकते हैं। आप इसके लिए cashless पेमेंट भी कर सकते हैं। आइए, इस अवसर पर हम भी कुछ ऐसा करें, जिससे हमारे सशस्त्र बलों का मनोबल बढ़े। हम भी उनके कल्याण की दिशा में अपना योगदान दें।

मेरे प्यारे देशवासियों, 5 दिसम्बर को 'World Soil Day' है। मैं अपने किसान भाई-बहनों से भी कुछ बातें करना चाहता हूँ। पृथ्वी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है- मिट्टी। हम जो कुछ भी खाते हैं वो इस मिट्टी से ही तो जुड़ा हुआ है। एक तरह से पूरा food chain, मिट्टी soil से जुड़ा हुआ है। ज़रा कल्पना कीजिए, अगर इस विश्व में कहीं भी उपजाऊ मिट्टी न हो तो क्या होगा? सोचकर के भी डर लगता है। न मिट्टी होगी, न पेड़-पौधे उगेंगे, मानव-जीवन कहाँ संभव होगा? जीव-जंतु कहाँ संभव होगा? हमारी संस्कृति में इस पर बहुत पहले चिंता कर ली गई और यही कारण है कि हम मिट्टी के महत्व को लेकर, प्राचीन समय से जागरूक रहे हैं। हमारी संस्कृति में एक ओर खेतों के प्रति, मिट्टी के प्रति, भक्ति और आभार-भाव, लोगों में बना रहे ऐसा सहज प्रयास है तो दूसरी ओर ऐसी वैज्ञानिक पद्धतियाँ, जीवन का हिस्सा रहीं कि इस मिट्टी का पोषण होता रहा। इस देश के किसान के जीवन में, दोनों ही बातों का महत्व रहा है - अपनी मिट्टी के प्रति भक्ति और साथ-साथ वैज्ञानिक-रूप से मिट्टी को सहेजना - संवारना। हम सबको इस बात का गर्व है कि हमारे देश के किसान, परंपरा से भी जुड़े रहते हैं और आधुनिक विज्ञान की तरफ भी रुचि रखते हैं, प्रयास करते हैं, संकल्प करते हैं। मैं हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर ज़िले के टोहू गाँव, भोरंज ब्लॉक और वहाँ के किसानों के बारे में मैंने सुना था। यहाँ किसान पहले असंतुलित ढंग से रासायनिक उर्वरकों, fertilizer का उपयोग कर रहे थे और जिसके कारण उस धरती की सेहत बिगड़ती गई। उपज कम होती गई और उपज कम होने से आय भी कम हो गई और मिट्टी की भी उत्पादकता धीरे-धीरे-धीरे घटती जा रही थी। गाँव के कुछ जागरूक किसानों ने इस परिस्थिति की गंभीरता को समझा और इसके बाद गाँव के किसानों ने समय पर अपनी मिट्टी की जाँच करायी और जितने fertilizer, उर्वरकों, micro-nutrient और जैविक खाद का उपयोग करने के लिए उन्हें कहा गया, उन्होंने उस advice को माना, उस सलाह को माना। और आप यह परिणाम सुनकर के चौंक जाएंगे कि soil health के द्वारा किसानों को जो जानकारी मिली और उससे उनको को मार्गदर्शन मिला, उसको लागू करने का परिणाम क्या आया? रबी 2016-17 में गेंहू के उत्पादन में प्रति एकड़ तीन से चार गुना की वृद्धि हुई और आय में भी प्रति एकड़ चार हजार से लेकर के छह(6) हजार रुपये तक की वृद्धि हुई। इसके साथ-साथ मिट्टी की quality में भी सुधार आया। fertilizer का उपयोग कम होने के कारण आर्थिक बचत भी हुई। मुझे यह देख कर काफी खुशी है कि मेरे किसान भाई soil health card, मृदा-स्वास्थ्य कार्ड में दी गई सलाह पर अमल करने के लिए आगे आए हैं और जैसे-जैसे परिणाम मिल रहे हैं, उनका उत्साह भी बढ़ता जा रहा है। और अब किसान को भी लग रहा है कि अगर फसल की चिंता करनी है तो पहले धरती-माँ का खयाल रखना होगा और अगर धरती-माँ का खयाल हम रखेंगे तो धरती-माँ, हम सब का खयाल रखेगी। देश-भर में हमारे किसानों ने 10 करोड़ से अधिक soil health card बनवा लिए हैं ताकि वे अपनी मिट्टी को बेहतर ढंग से समझ सकें और उस अनुरूप, फसल भी बो सकें। हम धरती-माता की भक्ति करते हैं पर धरती-माता को यूरिया जैसे उर्वरक fertilizer से धरती-माँ के स्वास्थ्य को कितनी हानि होती है, कभी सोचा है? हर प्रकार के वैज्ञानिक तरीकों से यह सिद्ध हो चुका है कि धरती-माँ को आवश्यकता से अधिक यूरिया के उपयोग से गंभीर नुकसान पहुँचता है। किसान तो धरती का पुत्र है, किसान धरती-माँ को बीमार कैसे देख सकता है? समय की माँग है, इस माँ-बेटे के संबंधों को फिर से एक बार जागृत करने की। क्या हमारे किसान, हमारे धरती के पुत्र, हमारे धरती के संतान ये संकल्प कर सकते हैं क्या कि आज वो अपने खेत में जितना यूरिया का उपयोग करता है, 2022, जब आज़ादी के 75 साल होंगे, आधा उपयोग बंद कर देगा ? एक बार अगर माँ-धरती का पुत्र, मेरा किसान भाई, ये संकल्प कर ले तो देखिए कि धरती-माँ की सेहत सुधर जाएगी, उत्पादन बढ़ जाएगा। किसान की जिन्दगी में बदलाव आना शुरू हो जाएगा।

Global warming, Climate change अब हम सब लोग अनुभव करने लगे हैं। वो भी एक वक़्त था कि दीवाली के पहले सर्दी आ जाती थी। अब दिसम्बर दस्तक दे रहा है और सर्दी बहुत धीरे-धीरे-धीरे कदम बढ़ा रही है। लेकिन जैसे ही सर्दी शुरू हो जाती है, हम सब का अनुभव है कि रज़ाई से बाहर निकलना ज़रा अच्छा नहीं लगता है। लेकिन, ऐसे मौसम में भी सतत-जागरूक रहने वाले लोग कैसा परिणाम लाते हैं और ये उदाहरण हम सब के लिए प्रेरणा देते हैं। आपको भी सुन करके आश्चर्य होगा कि मध्यप्रदेश के एक 8 वर्षीय दिव्यांग बालक तुषार, उसने अपने गाँव को खुले में शौच से मुक्त कराने का बीड़ा उठा लिया। इतने व्यापक स्तर का काम और इतना छोटा बालक! लेकिन जज़्बा और संकल्प, उससे कई गुना बड़े थे, बृहत् थे और ताक़तवर थे। 8 वर्षीय बालक बोल नहीं सकता लेकिन उसने सीटी को अपना हथियार बनाया

और सुबह 5 बजे उठ कर, अपने गाँव में घर-घर जा कर लोगों को सीटी से जगा करके, हाथ के action से खुले में शौच न करने के लिए शिक्षा देने लगा। हर दिन 30-40 घरों में जा करके स्वच्छता की सीख देने वाले इस बालक की बदौलत कम्हारी गाँव, खुले में शौच से मुक्त हो गया। स्वच्छता को बढ़ावा देने की दिशा में उस नन्हे बालक तुषार ने प्रेरक काम किया। ये दिखाता है कि स्वच्छता की न कोई उम्र होती है, न कोई सीमा। बच्चा हो या बुजुर्ग, महिला हो या पुरुष, स्वच्छता सभी के लिए जरूरी है और स्वच्छता के लिए हर किसी को कुछ-न-कुछ करने की भी जरूरत है। हमारे दिव्यांग भाई-बहन दृढ़-निश्चयी हैं, सामर्थ्यवान हैं, साहसिक और संकल्पवान हैं। हर पल हमें कुछ-न-कुछ सीखने को मिलता है। आज वे हर-एक क्षेत्र में अच्छा कर रहे हैं। चाहे खेल का क्षेत्र हो, कोई competition का हो, कोई सामाजिक पहल हो- हमारे दिव्यांग-जन भी किसी से पीछे नहीं रहते हैं। आप सब को याद होगा हमारे दिव्यांग खिलाड़ियों ने Rio Olympic में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 4 पदक जीते थे और Blind T-20 Cricket World Cup में भी champion बने थे। देशभर में अलग-अलग तरह की प्रतियोगिताएँ होती रहती हैं। पिछले दिनों उदयपुर में 17वीं National Para-swimming प्रतियोगिता आयोजित हुई। देशभर के विभिन्न हिस्सों से आए हुए हमारे युवा दिव्यांग भाई-बहनों ने इसमें भाग लिया और अपने कौशल का परिचय दिया। उन्हीं में से एक हैं गुजरात के 19 साल के जिगर ठक्कर, उनके शरीर के 80% हिस्से में मांसपेशी नहीं है लेकिन उनका साहस, संकल्प और उनकी मेहनत को देखिए! National Para-swimming प्रतियोगिता में 19 साल के जिगर ठक्कर जिसके शरीर में 80 % मांसपेशी न हो और 11 Medal जीत जाए! 70वीं National Para-swimming प्रतियोगिता में भी उन्होंने gold जीता। उनके इसी कौशल का परिणाम है कि वो भारत के Sports Authority of India द्वारा 20-20 Paralympics के लिए चुने गए, 32 para तैराकों में से एक हैं जिन्हें गुजरात के गांधी नगर में Center for Excellence में training दी जाएगी। मैं युवा जिगर ठक्कर के जज़्बे को सलाम करता हूँ और उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। आज दिव्यांगजनों के लिए accessibility और opportunity पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि देश का हर एक व्यक्ति सशक्त हो। एक समावेशी समाज का निर्माण हो। 'सम' और 'मम' के भाव से समाज में समरसता बढ़े और सब, एक साथ मिल करके आगे बढ़ें।

कुछ दिन बाद 'ईद-ए-मिलाद-उन-नबी' का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन पैगम्बर हज़रत मोहम्मद साहब का जन्म हुआ था। मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और मुझे आशा है कि ईद का ये पर्व, समाज में शांति और सद्भावना को बढ़ाने के लिए हम सबको नयी प्रेरणा दे, नयी ऊर्जा दे, नया संकल्प करने का सामर्थ्य दे।

(फ़ोन-कॉल)

'नमस्ते प्रधानमंत्री जी, मैं कानपुर से नीरजा सिंह बोल रही हूँ। मेरी आपसे एक request है कि इस पूरे साल में जो आपने अपनी 'मन की बात' में जो बातें कही हैं, उनमें से जो दस सबसे अच्छी बातें हैं उनको आप हमसे दोबारा share करें। जिससे कि हमसब को पुनः उन बातों का स्मरण हो और हमें कुछ सीखने को मिले। धन्यवाद।

(फ़ोन-कॉल समाप्त)

आपकी बात सही है कि 2017 पूर्ण हो रहा है, 2018 दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है। लेकिन आपने अच्छा सुझाव दिया है। लेकिन आप ही की बात से मुझे, कुछ और उसमें जोड़ने का और परिवर्तन का मन करता है। और हमारे यहाँ तो गाँव के अंदर जो हमारे वरिष्ठ लोग होते हैं, गाँव के जो बूढ़े लोग होते हैं, बड़े-बूढ़े हमेशा कहा करते हैं- दुख को भूलो और सुख को भूलने मत दो। दुख को भूलें, सुख को भूलने न दें। मुझे लगता है, इस बात को हमें प्रचारित करना चाहिए। हम भी 2018 में शुभ का स्मरण करते हुए, शुभ का संकल्प करते हुए प्रवेश करें। हम जानते हैं कि हमारे यहाँ तो, शायद दुनिया-भर में होता है कि वर्ष के अंत में जब लेखा-जोखा करते हैं, चिंतन-मनन करते हैं, मंथन करते हैं और अगले वर्ष के लिए योजनाएँ बनाते हैं। हमारे यहाँ media में तो, बीते हुए साल की कई रोचक घटनाओं को फिर से एक बार पुनः स्मरण कराने का प्रयास होता है। उसमें positive भी होती है, negative भी होती है। लेकिन क्या आपको नहीं लगता है कि 2018 में हम प्रवेश, अच्छी चीज़ों को याद करके करें, अच्छा करने के लिए करें? मैं आप सबको एक सुझाव देता हूँ कि आप सब 5-10 अच्छी positive बातें जो आपने सुनी हों, आपने देखी हों, आपने अनुभव की हों और जिसको अगर और लोग जाने तो उनको भी एक शुभ-भाव पैदा हो। क्या आप इसमें योगदान दे सकते हैं? क्या इस बार हम इस वर्ष के अपने जीवन के 5 positive experience share कर सकते हैं? चाहे वो फ़ोटो के माध्यम से हो, छोटी-सी कोई कहानी के रूप में हो, story के रूप में हो, छोटे से video के रूप में हो, मैं निमंत्रित करता हूँ कि 2018 का स्वागत हमें एक शुभ-वातावरण में करना है। शुभ-स्मृतियों के साथ करना है। Positive thinking के साथ करना है। Positive बातों को याद करके करना है।

आइए, NarendraModi App पर, MyGov पर या social media पर #PositiveIndia (हैशटैग Positive India) के साथ सकारात्मक बातों को share करें। औरों को प्रेरणा देने वाली घटनाओं का स्मरण करें। अच्छी बातों को याद करेंगे तो अच्छा करने का mood बनेगा। अच्छी चीज़ें, अच्छा करने के लिए ऊर्जा दे देती हैं। शुभ-भाव, शुभ-संकल्प का कारण बनता

है। शुभ-संकल्प, शुभ-परिणाम के लिए आगे ले जाता है।

आइए, इस बार प्रयास करें #PositiveIndia (हैशटैग Positive India) देखिये, हम सब मिलकर के क्या ज़बरदस्त positive vibe generate करके, आने वाले साल का स्वागत करेंगे। इस collective momentum की ताक़त और इसका impact हम सब मिल करके देखेंगे। और मैं जरूर अगले 'मन की बात' में आपके इन #PositiveIndia (हैशटैग Positive India) पर आई हुई चीज़ों को देशवासियों के बीच पहुँचाने का प्रयास करूँगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, अगले महीने, अगली 'मन की बात' के लिए फिर आपके बीच आऊँगा। ढेर सारी बातें करने का अवसर मिलेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद!

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

31-दिसंबर-2017 15:31 IST

31/12/2017 को प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में दिए गए उद्बोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। 'मन की बात' का, इस वर्ष का यह आखिरी कार्यक्रम है और संयोग देखिए कि आज, वर्ष 2017 का भी आखिरी दिन है। इस पूरे वर्ष बहुत सारी बातें हमने और आपने share की। 'मन की बात' के लिए आपके ढेर सारे पत्र, comments, विचारों का ये आदान-प्रदान, मेरे लिए तो हमेशा एक नई ऊर्जा लेकर के आता है। कुछ घंटों बाद, वर्ष बदल जाएगा लेकिन हमारी बातों का यह सिलसिला आगे भी इसी तरह जारी रहेगा। आने वाले वर्ष में हम, और नयी-नयी बातें करेंगे, नये अनुभव share करेंगे। आप सबको 2018 की अनेक-अनेक शुभकामनाएँ। अभी पिछले दिनों 25 दिसम्बर को विश्वभर में क्रिसमस का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। भारत में भी लोगों ने काफी उत्साह से इस त्योहार को मनाया। क्रिसमस के अवसर पर हम सब ईसा मसीह की महान शिक्षाओं को याद करते हैं और ईसा मसीह ने सबसे ज्यादा जिस बात पर बल दिया था, वह था - "सेवा-भाव"। सेवा की भावना का सार हम बाइबल में भी देखते हैं।

The Son of Man has come, not to be served,

But to serve,

And to give his life, as blessing

To all humankind.

यह दिखाता है कि सेवा का माहात्म्य क्या है! विश्व की कोई भी जाति होगी, धर्म होगा, परम्परा होगी, रंग होंगे लेकिन सेवाभाव, ये मानवीय मूल्यों की एक अनमोल पहचान के रूप में है। हमारे देश में 'निष्काम कर्म' की बात होती है, यानी ऐसी सेवा जिसमें कोई अपेक्षा न हो। हमारे यहाँ तो कहा गया है - "सेवा परमो धर्मः"। 'जीव-सेवा ही शिव-सेवा' और गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस तो कहते थे - शिव-भाव से जीव-सेवा करें यानी पूरे विश्व में ये सारे समान मानवीय मूल्य हैं। आइए, हम महापुरुषों का स्मरण करते हुए, पवित्र दिवसों की याद करते हुए, हमारी इस महान मूल्य परम्परा को, नयी चेतना दें, नयी ऊर्जा दें और खुद भी उसे जीने का प्रयास करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, यह वर्ष गुरुगोविन्द सिंह जी का 350वाँ प्रकाश पर्व का भी वर्ष था। गुरुगोविन्द सिंह जी का साहस और त्याग से भरा असाधारण जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। गुरुगोविन्द सिंह जी ने महान जीवन मूल्यों का उपदेश दिया और उन्हीं मूल्यों के आधार पर उन्होंने अपना जीवन जिया भी। एक गुरु, कवि, दार्शनिक, महान योद्धा, गुरुगोविन्द सिंह जी ने इन सभी भूमिकाओं में लोगों को प्रेरित करने का काम किया। उन्होंने उत्पीड़न और अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। लोगों को जाति और धर्म के बंधनों को तोड़ने की शिक्षा दी। इन प्रयासों में उन्हें व्यक्तिगत रूप से बहुत कुछ गंवाना भी पड़ा। लेकिन उन्होंने कभी भी द्वेष की भावना को जगह नहीं दी। जीवन के हर-पल में प्रेम, त्याग और शांति का सन्देश - कितनी महान विशेषताओं से भरा हुआ उनका व्यक्तित्व था! ये मेरे लिए सौभाग्य की बात रही कि मैं इस वर्ष की शुरुआत में गुरुगोविन्द सिंह जी 350वीं जयन्ती के अवसर पर पटनासाहिब में आयोजित प्रकाशोत्सव में शामिल हुआ। आइए, हम सब संकल्प लें और गुरुगोविन्द सिंह जी की महान शिक्षा और उनके प्रेरणादायी जीवन से, सीख लेते हुए जीवन को ढालने का प्रयास करें।

एक जनवरी, 2018 यानी कल, मेरी दृष्टि से कल का दिन एक special दिवस है। आपको भी आश्चर्य होता होगा, नया वर्ष आता रहता है, एक जनवरी भी हर वर्ष आती है, लेकिन जब, special की बात करता हूँ तो सचमुच मैं कहता हूँ कि special है! जो लोग वर्ष 2000 या उसके बाद जन्मे हैं यानी 21वीं सदी में जिन्होंने जन्म लिया है वे एक जनवरी, 2018 से eligible voters बनना शुरू हो जाएंगे। भारतीय लोकतंत्र, 21वीं सदी के voters का, 'New India Voters' का स्वागत करता है। मैं, हमारे इन युवाओं को बधाई देता हूँ और सभी से आग्रह करता हूँ कि आप स्वयं को voter के रूप में register करें। पूरा हिन्दुस्तान आपको 21वीं सदी के voter के रूप में स्वागत करने के लिए लालायित है। 21वीं सदी के voter के नाते आप भी गौरव अनुभव करते होंगे। आपका वोट 'New India' का आधार बनेगा। वोट की शक्ति, लोकतंत्र में सबसे बड़ी शक्ति है। लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए 'वोट' सबसे प्रभावी साधन है। आप केवल मत देने के अधिकारी नहीं बन रहे हैं। आप 21वीं सदी का भारत कैसा हो? 21वीं सदी के भारत के आपके सपने क्या हों? आप भी तो भारत की 21वीं सदी के निर्माता बन सकते हैं और इसकी शुरुआत एक जनवरी से विशेष रूप से हो रही है। और आज अपनी इस 'मन की बात' में, मैं 18 से 25 वर्ष के ऊर्जा और संकल्प से भरे हमारे यशस्वी युवाओं से बात करना चाहता हूँ। मैं इन्हें 'New India Youth' मानता हूँ। New India Youth का मतलब होता है - उमंग, उत्साह और ऊर्जा। मेरा विश्वास है कि हमारे इन ऊर्जावान युवाओं के कौशल और ताकत से ही हमारा 'New India' का सपना सच होगा। जब हम नए भारत की बात करते हैं तो, नया भारत जो ये जातिवाद, साम्प्रदायवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार के ज़हर से मुक्त हो। गन्दगी और गरीबी से मुक्त हो। 'New India' - जहाँ सभी के लिए समान अवसर हों, जहाँ सभी की आशा-आकांक्षाएँ पूरी हों। नया भारत, जहाँ शांति, एकता और सद्भावना ही हमारा guiding force हो। मेरा यह 'New India Youth' आगे आए और मंथन करे कि कैसे बनेगा New India। वो अपने लिए भी एक मार्ग तय करे, जिनसे वो जुड़ा हुआ है उनको भी जोड़े और कारवाँ बढ़ता चले। आप भी आगे बढ़ें, देश भी आगे बढ़े। अभी जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ तो मुझे एक विचार आया कि क्या हम भारत के हर ज़िले में एक mock parliament आयोजित कर सकते हैं ? जहाँ ये 18 से 25 वर्ष के युवा, मिल-बैठ करके New India पर मंथन करें, रास्ते खोजें, योजनाएँ बनाएँ ? कैसे हम हमारे संकल्पों को 2022 से पहले सिद्ध करेंगे ? कैसे हम एक ऐसे भारत का निर्माण कर सकते हैं जिसका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था ? महात्मा गाँधी ने आज़ादी के आंदोलन को जन-आन्दोलन बना दिया था। मेरे नौजवान साथियो, समय की माँग है कि हम भी 21वीं सदी के भव्य-दिव्य भारत के लिए एक जन-आन्दोलन खड़ा करें। विकास का जन-आन्दोलन। प्रगति का जन-आन्दोलन। सामर्थ्यवान-शक्तिशाली भारत का जन-आन्दोलन। मैं चाहता हूँ कि 15 अगस्त के आस-पास दिल्ली में एक Mock Parliament का आयोजन हो जहाँ प्रत्येक ज़िले से चुना गया एक युवा, इस विषय पर चर्चा करे कि कैसे अगले पाँच सालों में एक New India का निर्माण किया जा सकता है ? संकल्प से सिद्धि कैसे प्राप्त की जा सकती है ? आज युवाओं के लिए ढेर सारे नये अवसर पैदा हुए हैं। Skill Development से लेकर के Innovation और entrepreneurship में हमारे युवा आगे आ रहे हैं और सफल हो रहे हैं। मैं चाहूँगा कि इन सारे अवसरों की योजनाओं की जानकारी इस 'New India Youth' को एक जगह कैसे मिले और इस बारे में कोई एक ऐसी व्यवस्था खड़ी की जाए ताकि 18 वर्ष का होते ही, उसे इस दुनिया के बारे में, इन सारी चीज़ों के बारे में सहज रूप से जानकारी प्राप्त हो और वह आवश्यक लाभ भी ले सके।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछली 'मन की बात' में मैंने आपसे positivity के महत्व के बारे में बात की थी। मुझे संस्कृत का एक श्लोक याद आ रहा है -

उत्साहो बलवानार्य, नास्त्युत्साहात्परं बलम्।

सोत्साहस्य च लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्॥

इसका मतलब होता है, उत्साह से भरा एक व्यक्ति अत्यन्त बलशाली होता है क्योंकि उत्साह से बढ़ कर कुछ नहीं होता। Positivity और उत्साह से भरे व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं। अंग्रेज़ी में भी लोग कहते हैं - 'Pessimism leads to weakness, optimism to power'। मैंने पिछली 'मन की बात' में देशवासियों से अपील की थी कि वर्ष 2017 के अपने positive moments, share करें और 2018 का स्वागत एक positive atmosphere में करें। मुझे बहुत खुशी हुई कि भारी संख्या में लोगों ने social media platform, MyGov और NarendraModi App पर बहुत ही positive response दिया, अपने अनुभव share किये। Positive India hashtag (#) के साथ लाखों tweets किये गए जिसकी पहुँच करीब-करीब डेढ़-सौ करोड़ से भी अधिक लोगों तक पहुँची। एक तरह से positivity का जो संचार, भारत से आरंभ हुआ वह विश्व भर में फैला। जो tweets और response आये वे सचमुच में inspiring थे। एक सुखद अनुभव था। कुछ

देशवासियों ने इस वर्ष के उन घटनाक्रमों को साझा किया जिनका उनके मन पर विशेष प्रभाव पड़ा, सकारात्मक प्रभाव पड़ा। कुछ लोगों ने अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों को भी share किया।

साउंड बाइट #

मेरा नाम मीनू भाटिया है। मैं मयूर विहार, पॉकेट-वन, फेज़ वन, दिल्ली में रहती हूँ। मेरी बेटी एम.बी.ए. करना चाहती थी। जिसके लिए मुझे बैंक से loan चाहिए था जो मुझे बड़ी आसानी से मिल गया और मेरी बेटी की पढ़ाई चालू रही।

मेरा नाम ज्योति राजेंद्र वाडे है। मैं बोडल से बात कर रही हूँ। हमने एक रुपया महीने का कटता वो बीमा था, ये मेरे पति ने करवाया हुआ था। और उनका accident में निधन हो गया था। उस समय हमारी क्या हालत हुई, हमको ही पता। सरकार की ये मदद से हमको बहुत लाभ हुआ और मैं थोड़ी संभली उससे

मेरा नाम संतोष जाधव है। हमारे गाँव से, भिन्नर गाँव से 2017 से National Highway गया है। उसकी वजह से हमारी सड़कें वो बहुत अच्छे हो गये और business भी बढ़ने वाला है।

मेरा नाम दीपांशु आहूजा, मोहल्ला सादतगंज, ज़िला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश का निवासी हूँ। दो घटनाएँ हैं जो हमारे भारतीय सैनिकों के द्वारा - एक तो पाकिस्तान में उनके द्वारा की गयी surgical strike जिससे कि आतंकवाद के launching pads थे, उनको नेस्तनाबूद कर दिया गया और साथ-ही-साथ हमारे भारतीय सैनिकों का डोकलाम में जो पराक्रम देखने को मिला वो अतुलनीय है।

मेरा नाम सतीश बेवानी है। हमारे इलाके में पानी की समस्या थी बिलकुल पिछले 40 साल से हम आर्मी के पाइप-लाइन पर निर्भर हुआ करते थे। अब अलग से ये पाइप लाइन हुई है independent ..तो ये सब बड़ी उपलब्धि है हमारी 2017 में।

ऐसे अनेक लोग हैं जो अपने-अपने स्तर पर ऐसे कार्य कर रहे हैं जिनसे कई लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। वास्तव में, यही तो 'New India' है जिसका हम सब मिल कर निर्माण कर रहे हैं। आइए, इन्हीं छोटी-छोटी खुशियों के साथ हम नव-वर्ष में प्रवेश करें, नव-वर्ष की शुरुआत करें और 'positive India' से 'progressive India' की दिशा में मजबूत कदम बढ़ाएँ। जब हम सब positivity की बात करते हैं तो मुझे भी एक बात share करने का मन करता है। हाल ही में मुझे कश्मीर के प्रशासनिक सेवा के topper अंजुम बशीर खान खट्टक (Anjum Bashir Khan Khattak) की प्रेरणादायी कहानी के बारे में पता चला। उन्होंने आतंकवाद और घृणा के दंश से बाहर निकल कर Kashmir Administrative Service की परीक्षा में top किया है। आप ये जानकर के हैरान रह जाएंगे कि 1990 में आतंकवादियों ने उनके पैतृक-घर को जला दिया था। वहाँ आतंकवाद और हिंसा इतनी अधिक थी कि उनके परिवार को अपनी पैतृक-ज़मीन को छोड़ के बाहर निकलना पड़ा। एक छोटे बच्चे के लिए उसके चारों ओर इतनी हिंसा का वातावरण, दिल में अंधकारात्मक और कड़वाहट पैदा करने के लिए काफी था - पर अंजुम ने ऐसा नहीं होने दिया। उन्होंने कभी आशा नहीं छोड़ी। उन्होंने अपने लिए एक अलग रास्ता चुना - जनता की सेवा का रास्ता। वो विपरीत हालात से उबर कर बाहर आए और सफलता की अपनी कहानी खुद लिखी। आज वो सिर्फ जम्मू और कश्मीर के ही नहीं बल्कि पूरे देश के युवाओं के लिए प्रेरणा बन गए हैं। अंजुम ने साबित कर दिया है कि हालात कितने ही खराब क्यों न हों, सकारात्मक कार्यों के द्वारा निराशा के बादलों को भी ध्वस्त किया जा सकता है।

अभी पिछले हफ़्ते ही मुझे जम्मू-कश्मीर की कुछ बेटियों से मिलने का अवसर मिला। उनमें जो जज़्बा था, जो उत्साह था, जो सपने थे और जब मैं उनसे सुन रहा था, वो जीवन में कैसे-कैसे क्षेत्र में प्रगति करना चाहती हैं। और वो कितनी आशा-भरी जिन्दगी वाले लोग थे! उनसे मैंने बातें की, कहीं निराशा का नामोनिशान नहीं था - उत्साह था, उमंग था, ऊर्जा थी, सपने थे, संकल्प थे। उन बेटियों से, जितना समय मैंने बिताया, मुझे भी प्रेरणा मिली और ये ही तो देश की ताकत हैं, ये ही तो मेरे युवा हैं, ये ही तो मेरे देश का भविष्य हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों, हमारे देश के ही नहीं, जब भी कभी विश्व के प्रसिद्ध धार्मिक-स्थलों की चर्चा होती है तो केरल के सबरीमाला मंदिर की बात होनी बहुत स्वाभाविक है। विश्व-प्रसिद्ध इस मंदिर में, भगवान अय्यप्पा स्वामी का आशीर्वाद लेने के लिए हर वर्ष करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु यहाँ आते हैं। जहाँ इतनी भारी संख्या में श्रद्धालु आते हों, जिस स्थान का इतना बड़ा माहात्म्य हो, वहाँ स्वच्छता बनाये रखना कितनी बड़ी चुनौती हो सकती है ? और विशेषकर उस जगह पर,

जो पहाड़ियों और जंगलों के बीच स्थित हो। लेकिन इस समस्या को भी संस्कार में कैसे बदला जा सकता है, समस्या में से उबरने का रास्ता कैसे खोजा जा सकता है और जन-भागीदारी में इतनी क्या ताकत होती है- ये अपने आप में सबरीमाला मंदिर एक उदाहरण के तौर पर है। पी.विजयन नाम के एक पुलिस अफसर ने 'पुण्यम पुन्कवाणम' (Punyam Poonkavanam), एक programme शुरू किया और उस programme के तहत, स्वच्छता के लिए जागरूकता का एक स्वैच्छिक-अभियान शुरू किया। और एक ऐसी परम्परा बना दी कि जो भी यात्री आते हैं, उनकी यात्रा तब तक पूरी नहीं होती जब तक कि वो स्वच्छता के कार्यक्रम में कोई-न-कोई शारीरिक श्रम न करते हों। इस अभियान में न कोई बड़ा होता है, न कोई छोटा होता है। हर यात्री, भगवान की पूजा का ही भाग समझ करके कुछ-न-कुछ समय स्वच्छता के लिए करता है, काम करता है, गन्दगी हटाने के लिए काम करता है। हर सुबह यहाँ सफाई का दृश्य बड़ा ही अद्भुत होता है और सारे तीर्थयात्री इसमें जुट जाते हैं। कितनी बड़ी celebrity क्यों न हो, कितना ही धनी व्यक्ति क्यों न हो, कितना ही बड़ा अफसर क्यों न हो, हर कोई एक सामान्य-यात्री के तौर पर इस 'पुण्यम पुन्कवाणम' (Punyam Poonkavanam) कार्यक्रम का हिस्सा बन जाते हैं, सफाई को करके ही आगे बढ़ते हैं। हम देशवासियों के लिए ऐसे कई उदाहरण हैं। सबरीमाला में इतना आगे बढ़ा हुआ ये स्वच्छता - अभियान और उसमें 'पुण्यम पुन्कवाणम' (Punyam Poonkavanam), ये हर यात्री के यात्रा का हिस्सा बन जाता है। वहाँ कठोर-व्रत के साथ स्वच्छता का कठोर-संकल्प भी साथ-साथ चलता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 2 अक्टूबर 2014 पूज्य बापू की जन्म जयन्ती पर हम सब ने संकल्प किया है कि पूज्य बापू का जो अधूरा काम है यानी कि 'स्वच्छ-भारत', 'गन्दगी से मुक्त-भारत'। पूज्य बापू जीवन-भर इस काम के लिए जूझते रहे, कोशिश भी करते रहे। और हम सब ने तय किया कि जब पूज्य बापू की 150वीं जयन्ती हो तो उन्हें हम उनके सपनों का भारत, 'स्वच्छ भारत', देने की दिशा में कुछ-न-कुछ करें। स्वच्छता की दिशा में देशभर में व्यापक स्तर पर प्रयास हो रहा है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में व्यापक जन-भागीदारी से भी परिवर्तन नज़र आने लगा है। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता के स्तर की उपलब्धियों का आकलन करने के लिए आगामी 4 जनवरी से 10 मार्च 2018 के बीच दुनिया का सबसे बड़ा सर्वे 'स्वच्छ सर्वेक्षण 2018' किया जाएगा। ये सर्वे, चार हजार से भी अधिक शहरों में लगभग चालीस (40) करोड़ आबादी में किया जाएगा। इस सर्वे में जिन तथ्यों का आकलन किया जाएगा उनमें हैं - शहरों में खुले में शौच से मुक्ति, कूड़े का कलेक्शन, कूड़े को उठा कर ले जाने के लिए परिवहन की व्यवस्था, वैज्ञानिक तरीके से कूड़े की processing, behavioral change के लिए किए जा रहे प्रयास, capacity building और स्वच्छता के लिए किये गए innovative प्रयास और इस काम के लिए जन-भागीदारी। इस सर्वे के दौरान, अलग-अलग दल जा करके शहरों का inspection करेंगे। नागरिकों से बात करके उनकी प्रतिक्रिया लेंगे। स्वच्छता App के उपयोग का तथा विभिन्न प्रकार के सेवा-स्थलों में सुधार का analysis करेंगे। इसमें यह भी देखा जाएगा कि क्या ऐसी सारी व्यवस्था शहरों के द्वारा बनायी गई हैं जिनसे शहर की स्वच्छता एक जन-जन का स्वभाव बने, शहर का स्वभाव बन जाए। स्वच्छता, सिर्फ सरकार करे ऐसा नहीं। हर नागरिक एवं नागरिक संगठनों की भी बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। और मेरी हर नागरिक से अपील है कि वे, आने वाले दिनों में जो स्वच्छता-सर्वे होने वाला है उसमें बढ़-चढ़ करके भाग लें। और आपका शहर पीछे न रह जाए, आपका गली-मोहल्ला पीछे न रह जाए - इसका बीड़ा उठाएं। मुझे पूरा विश्वास है कि घर से सूखा-कूड़ा और गीला-कूड़ा, अलग-अलग करके नीले और हरे dustbin का उपयोग, अब तो आपकी आदत बन ही गई होगी। कूड़े के लिए reduce, re-use और re-cycle का सिद्धांत बहुत कारगर होता है। जब शहरों की ranking इस सर्वे के आधार पर की जाएगी - अगर आपका शहर एक लाख से अधिक आबादी का है तो पूरे देश की ranking में, और एक लाख से कम आबादी का है तो क्षेत्रीय ranking में ऊँचे-से-ऊँचा स्थान प्राप्त करे, ये आपका सपना होना चाहिए, आपका प्रयास होना चाहिए। 4 जनवरी से 10 मार्च 2018, इस बीच होने वाले स्वच्छता-सर्वेक्षण में, स्वच्छता के इस healthy competition में आप कहीं पिछड़ न जाएँ - ये हर नगर में एक सार्वजनिक चर्चा का विषय बनना चाहिए। और आप सब का सपना होना चाहिए, 'हमारा शहर- हमारा प्रयास', 'हमारी प्रगति-देश की प्रगति'। आइए, इस संकल्प के साथ हम सब फिर से एक बार पूज्य बापू का स्मरण करते हुए स्वच्छ-भारत का संकल्प लेते हुए पुरुषार्थ की पराकाष्ठा करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ बातें ऐसी होती हैं जो दिखने में बहुत छोटी लगती हैं लेकिन एक समाज के रूप में हमारी पहचान पर दूर-दूर तक प्रभाव डालती रहती हैं। आज 'मन की बात' के इस कार्यक्रम के माध्यम से मैं आपके साथ ऐसी एक बात share करना चाहता हूँ। हमारी जानकारी में एक बात आयी कि यदि कोई मुस्लिम महिला, हज-यात्रा के लिए जाना चाहती है तो वह 'महरम' या अपने male guardian के बिना नहीं जा सकती है। जब मैंने इसके बारे में पहली बार सुना तो मैंने सोचा कि ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसे नियम किसने बनाए होंगे? ये discrimination क्यों? और मैं जब उसकी गहराई में गया तो मैं हैरान हो गया - आजादी के सत्तर (70) साल के बाद भी ये restriction लगाने वाले हम ही लोग थे। दशकों से मुस्लिम महिलाओं के साथ अन्याय हो रहा था लेकिन कोई चर्चा ही नहीं थी। यहाँ तक कि कई इस्लामिक देशों में भी यह नियम नहीं है। लेकिन भारत में मुस्लिम महिलाओं को यह अधिकार प्राप्त नहीं था। और मुझे

खुशी है कि हमारी सरकार ने इस पर ध्यान दिया। हमारी Ministry of Minority Affairs ने आवश्यक कदम भी उठाए और ये सत्र(70) साल से चली आ रही परंपरा को नष्ट कर के इस restriction को हमने हटा दिया। आज मुस्लिम महिलाएँ, 'महरम' के बिना हज के लिए जा सकती हैं और मुझे खुशी है कि इस बार लगभग तेरह सौ (1300) मुस्लिम महिलाएँ 'महरम' के बिना हज जाने के लिए apply कर चुकी हैं और देश के अलग-अलग भागों से- केरल से लेकर उत्तर तक महिलाओं ने बढ़-चढ़ करके हज-यात्रा करने की इच्छा ज़ाहिर की है। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय को मैंने सुझाव दिया है कि वो यह सुनिश्चित करें कि ऐसी सभी महिलाओं को हज जाने की अनुमति मिले जो अकेले apply कर रही हैं। आमतौर पर हज-यात्रियों के लिए lottery system है लेकिन मैं चाहूँगा कि अकेली महिलाओं को इस lottery system से बाहर रखा जाए और उनको special category में अवसर दिया जाए। मैं पूरे विश्वास से कहता हूँ और ये मेरी दृढ़ मान्यता है कि भारत की विकास यात्रा, हमारी नारी-शक्ति के बल पर, उनकी प्रतिभा के भरोसे आगे बढ़ी है और आगे बढ़ती रहेगी। हमारा निरंतर प्रयास होना चाहिए कि हमारी महिलाओं को भी पुरुषों के बराबर समान अधिकार मिले, समान अवसर मिले ताकि वे भी प्रगति के मार्ग पर एक-साथ आगे बढ़ सकें।

मेरे प्यारे देशवासियों, 26 जनवरी हमारे लिए एक ऐतिहासिक-पर्व है। लेकिन इस वर्ष 26 जनवरी 2018 का दिन, विशेष रूप से याद रखा जाएगा। इस वर्ष गणतंत्र-दिवस समारोह के लिए सभी दस आसियान (ASEAN) देशों के नेता मुख्य-अतिथि के रूप में भारत आएँगे। गणतंत्र-दिवस पर इस बार 'एक' (1) नहीं बल्कि 'दस' (10) मुख्य अतिथि होंगे। ऐसा भारत के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ है। 2017, आसियान (ASEAN) के देश और भारत, दोनों के लिए खास रहा है। आसियान (ASEAN) ने 2017 में अपने 50 वर्ष पूरे किए और 2017 में ही आसियान (ASEAN) के साथ भारत की साझेदारी के 25 वर्ष भी पूरे हुए हैं। 26 जनवरी को विश्व के 10 देशों के इन महान नेताओं का एक साथ शरीक होना हम सभी भारतीयों के लिए गर्व की बात है।

प्यारे देशवासियों, ये त्योहारों का season है। वैसे तो हमारा देश एक प्रकार से त्योहारों का देश है। शायद ही कोई दिवस ऐसा होगा जिसके नाम कोई त्योहार न लिखा गया हो। अभी हम सभी ने क्रिसमस मनाया है और आगे नया-वर्ष आने वाला है। आने वाला नव- वर्ष आप सभी के लिए ढेरों खुशियाँ, सुख और समृद्धि ले करके आए। हम सब नए जोश, नए उत्साह, नए उमंग और नए संकल्प के साथ आगे बढ़ें, देश को भी आगे बढ़ाएँ। जनवरी का महीना सूर्य के उत्तरायण होने का काल है और इसी महीने में मकर-संक्रांति मनायी जाती है। यह प्रकृति से जुड़ा पर्व है। वैसे तो हमारा हर पर्व किसी-न-किसी रूप में प्रकृति से जुड़ा हुआ है लेकिन विविधताओं से भरी हमारी संस्कृति में, प्रकृति की इस अद्भुत घटना को अलग-अलग रूप में मनाने की प्रथा भी है। पंजाब और उत्तर-भारत में लोहड़ी का आनंद होता है तो यूपी.-बिहार में खिचड़ी और तिल-संक्रांति की प्रतीक्षा रहती है। राजस्थान में संक्रांत कहें, असम में माघ-बिहू या तमिलनाडु में पोंगल - ये सभी त्योहार अपने आप में विशेष हैं और इनका अपना-अपना महत्व है। यह सभी त्योहार प्रायः 13 से 17 जनवरी के बीच में मनाए जाते हैं। इन सभी त्योहारों के नाम अलग-अलग, लेकिन इनका मूल-तत्त्व एक ही है - प्रकृति और कृषि से जुड़ाव।

सभी देशवासियों को इन त्योहारों की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं। एक बार फिर से आप सभी को नव-वर्ष 2018 की ढेरों शुभकामनाएँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद प्यारे देशवासियों। अब 2018 में फिर से बात करेंगे।

धन्यवाद।

अतुल तिवारी/हिमांशु सिंह